121
दिमागी कसरतें

हरीश चन्द संसी

121 दिमागी कसरतें

121 दिमागी कसरतें

लेखक

हरीश चन्द्र सन्सी

121 दिमागी कसरतें

लेखक : हरीश चन्द्र सन्सी

चित्रांकन : हरविन्द्र मांकड़

मूल्य : एक सौ पचास रुपये मात्र

संस्करण : 2004

प्रकाशक : मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वितरक : **अनु प्रकाशन**

958, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर

ISBN : 81-88099-02-3

मुद्रक : आदर्श प्रिन्टर्स, दिल्ली

कवि 'नीड़' की पत्नी शीला बस से कार्यालय जाती थी। चूंकि कवि महोदय ने एक माह पूर्व ही मारुति कार ली थी, वह नित्य शाम को ५ बजे अपनी पत्नी को बस अड्डे से लेकर ठीक साढ़े पांच बजे घर पहुंच जाते थे। समय के पूरे पावंद थे कवि महोदय।

उस दिन शीला आधा घंटा पहले वाली बस से अड्डे पर पहुंच गई थी। बस अड्डे पर वह अपने पति की प्रतीक्षा न कर सकी और तुरंत रिक्शा ले कर घर की ओर चल दी।

रास्ते में सूरज टाकीज पर उसे अपनी कार मिली जिसे उसका देवर चला रहा था। वह ठीक पांच बजे बस अड्डे पहुंच जाता। शीला बिना समय खोए कार में जा बैठी और ५ बजकर २० मिनट पर घर पहुंच गई जहां बीमार 'नीड़' जी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

बताइए शीला ने रिक्शे में कितनी देर यात्रा की ?

दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए सुरेश ने अपना पैन निकाला। हरे रंग के उस सुंदर पैन को देख कर सुजाता ने जब सुरेश से उसका दाम पूछा तब सुरेश ने मुस्करा कर कहा, 'इसका दाम चुकाने के लिए मैंने जितने रुपए दिए उसके पांच गुना पैसे भी दिए।'

'मुझे भी ला दो ऐसा ही पैन।' सुजाता ने कहा।

कुछ दिनों के बाद सुरेश ने वैसा ही सुंदर लाल पैन खरीदा। यह पैन उसे पहले पैन से साठ पैसे महंगा मिला। लेकिन इस बार उसने जितने रुपए दिए थे उनसे केवल दो गुना ही पैसे उसे देने पड़े।

बताइए सुरेश ने दोनों पैन कितने-कितने के खरीदे थे ?

3

दीवाली आते ही अपना भाग्य आजमाने वालों की भीड़ रमागंज में बाजीलू की हवेली में जमा होने लगती थी। हर कोई अपनी सामर्थ्य के अनुसार दांव लगाता था।

उस दिन भी यही हो रहा था। चारों ओर ताश के पत्तों के अंबार लगे हुए थे।

तभी शोर मच गया। हवेली की बिजली गुल हो जाने से घुप्प अंधेरा छा गया था। पंखे बंद हो गए थे। एक नौकर ने तत्काल पंखों के बटन बंद कर दिए जिससे बिजली आने पर लोड बढ़ जाने से पंखों की मोटरें न जल जाएं।

बाजीलू ने तत्काल सैकड़ों मोमबत्तियां जलवा दीं। फिर भी बिजली वाली बात न थी। अधिक भीड़ होने, पंखे न चलने और मोमबत्तियों के जलने से काफी गर्मी हो गई थी। रज्जू ने अपनी कमीज उतार दी। फिर भी चैन न मिला तो पत्ते बांटते हुए उसने मंगलू को पंखे चलाने के लिए कहा।

रज्जू की बात पर तत्काल बिल्लू ने कहा, 'खबरदार मंगलू, पंखों का स्विच 'ऑन' न करना, वरना मोमबत्तियां बुझ जाएंगी।'

'अरे चलाओ पंखे, देखते नहीं, कितनी गर्मी है'—गुरु भोला ने शेरू से कहा।

और शेरू ने तत्काल सभी पंखों के स्विच 'ऑन' कर दिए।

लेकिन आश्चर्य ! कोई मोमबत्ती नहीं बुझी। क्या आप बता सकते हैं क्यों ?

परीक्षा की बड़ी विकट घड़ी थी, शास्त्री शिवनारायण के सामने। उन्हें नीली टी-शर्ट और हरी बुशर्ट पहने दो व्यक्तियों में से सत्य बोलने वाला सत्यंवद् और झूठ बोलने वाला मिथ्यानाथ बताना था। और वह भी मात्र एक-एक प्रश्न पूछ कर।

बड़ी देर तक विचार करने के बाद शास्त्रीजी ने नीली कमीज वाले से पूछा, 'क्या आप सत्यंवद् हैं ?'

नीली कमीज वाले ने तत्काल कहा, 'हां, मैं ही सत्यंवद् हूं।'

शास्त्रीजी ने हरी कमीज वाले से पूछा, 'इस नीली कमीज वाले ने क्या कहा है ?'

हरी कमीज वाले ने कहा, 'इस व्यक्ति ने कहा है–हां, मैं ही सत्यंवद् हूं।'

शास्त्रीजी ने तत्काल बता दिया कि दोनों में से कौन क्या है।

बताइए शास्त्रीजी ने किसे सत्यंवद् बताया ?

रवीन्द्र ने अच्छा बड़ा प्लाट ख़रीदा था। जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा था। काफी समय से उसका सपना था अपने घर का। चलो यह भी पूरा हो जाएगा। लेकिन नक्शानवीस (आर्किटेक्ट) ने उसे बताया कि लम्बाई-चौड़ाई बराबर होने के कारण प्लाट का काफी बड़ा भाग व्यर्थ जा रहा है, साथ ही रवीन्द्र के मनचाहे आकार के कमरे भी नहीं बन पाएंगे।

अब, क्या करे वह ? अभी रवीन्द्र यह सोच ही रहा था कि उसका मित्र पाठक उसे मिला। वह जमीन के लेन-देन का काम करता था। उसने रवीन्द्र को सुझाव दिया कि यह प्लाट दे कर वह सामने वाली लाइन का प्लाट नं. ५१ खरीद ले। हां, वह प्लाट इस प्लाट से ३६ वर्ग मीटर छोटा जरूर है। लेकिन सड़क की तरफ वाले मुंह की तरफ ३१ मीटर चौड़े उस प्लाट की गहराई उसकी चौड़ाई से कम थी।

रवीन्द्र ने प्लाट देखा तो उसे भा गया। उसने सौदा कर लिया। अब आएगा मजा, यह सोच कर उसने मजदूरों को पहले प्लाट के नाप के अनुसार लगाने के लिए मंगवाई गई कांटेदार तार को इस प्लाट पर लगाने के लिए कहा।

और यह उसके लिए आश्चर्य की बात ही थी कि जो तार पहले प्लाट के लिए मंगवाई गई थी, वह इस प्लाट के लिए भी पूरी हो गई थी। न बची और न घटी।

क्या आप बता सकते हैं कि दोनों प्लाटों का अलग-अलग क्षेत्रफल क्या था ?
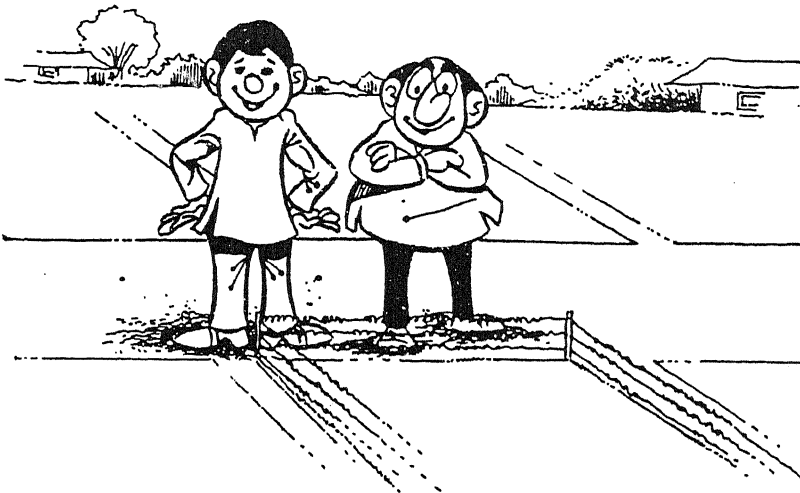
पिछले दिनों, विशेष पुलिस के दस्ते ने, देश के विभिन्न भागों में, ऐसे विदेशी एजेंटों के दल का पर्दाफाश किया था जो राष्ट्र की सामरिक महत्व की सूचनाएं विदेशों में पहुंचाते थे। ये एजेंट थे–रंगास्वामी, रंजीत, रतन, रमण खन्ना, राम लखन प्रसाद और रोमू बनर्जी।

जनसाधारण में स्थान-स्थान पर इसी बात की चर्चा हो रही थी। दिल्ली के समीपस्थ गांव महरपुर की चौपाल पर बैठे लोग भी इसी चर्चा में व्यस्त थे।

'इन देशद्रोहियों को ही नहीं, बल्कि इन्हें सूचनाएं देने वाले चंद्रिका रमण, जोगेश्वर प्रसाद, बद्रिकानाथ सिंह, रामेश्वर प्रसाद और सीता रामशरण सिंह को भी फांसी दी जानी चाहिए।' सरस्वती चंद्र ने कहा।

'अरे ये लोग अमेरिका, पश्चिम जर्मनी, पाकिस्तान, पोलैंड और चीन को सारी सूचनाएं भेजते थे। कितने शर्म की बात है।' बनारसी दास ने 'समाचार जगत' से पढ़ कर कहा।

'सूचनाएं निकालने के इनके विभिन्न तरीके थे। ये थे–कंप्यूटर फ्लॉपी डिस्क, कंप्यूटर कैच का रिकार्ड, गुप्त कैमरे से चित्र लेना, फोटोस्टेट द्वारा कॉपी करना और सीधे मूल दस्तावेज ही चुरा लेना।' रमेश ने 'क्रोनिकल टाइम्स' का अनुवाद करके सुनाया।

'रमण ने सूचनाएं पोलैंड को पहुंचाई थीं। परन्तु वह कैमरे का उपयोग नहीं करता था।' दैनिक 'देशप्रेमी' की खबर थी।

'रंजीत ने मूल दस्तावेज ही पाकिस्तान भेज दिए थे। परन्तु उसे चंद्रिका रमण जानता भी न था।' नवीन हिन्द टाइम्स ने लिखा था।

दैनिक जागृति ने लिखा था–'रोमू के दिमाग ने वास्तव में दूर की सोची थी। वह जानता था कि जब कंप्यूटर पर कार्य हो रहा होता है, तब उसमें से विभिन्न तरंगें निकलती हैं। इन तरंगों की सहायता से उसी कंप्यूटर कार्यक्रम को पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके लिए उसने कंप्यूटर प्रकोष्ठ में कार्यरत आपरेटर को पटाया और तरंगों को रिकार्ड करने के लिए मक्खी के आकार का यंत्र उस प्रकोष्ठ में लगा दिया। उसकी सहायता से वह घर बैठा कार्यक्रम को रिकार्ड करने लगा था।'

'अमेरिकी दलाल कोई प्रसाद था, जिसने किसी प्रसाद को केवल ३०० रुपए महीने में खरीद लिया था और उससे महत्वपूर्ण सूचनाएं झाड़ता रहा।' 'समाचार दर्शन' से कन्हैया लाल ने पढ़ कर सुनाया।

'चीनी एजेंट, सीता राम से फोटो कॉपियां ले कर भेजता रहा था। बद्रिकानाथ, विदेशी एजेंट के लिए एक अतिरिक्त डिस्क तैयार रखता था। जबकि जोगेश्वर दस्तावेजों का फोटो किसी भी प्रकार के कैमरे आदि से नहीं लेता था।' प्रेम प्रकाश ने 'दैनिक प्रभात' से पढ़ कर बताया।

इन सूचनाओं के आधार पर बताइए कि किस एजेंट ने किस व्यक्ति से कैसे सूचनाएं प्राप्त कीं और उन्हें किस देश को भेजा ?
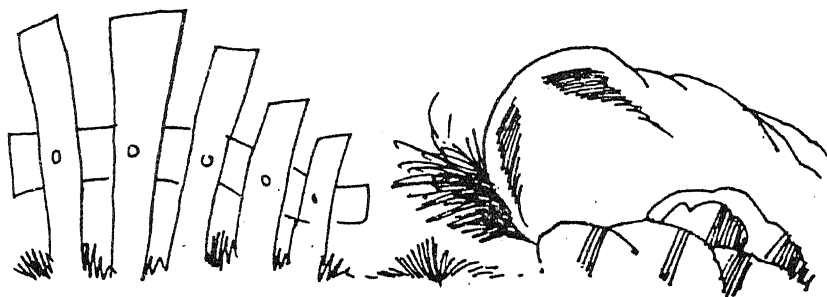
टनकपुर के पंडित चंद्रिकारमण अपनी पत्नी लाजवंतीदेवी, मझले पुत्र रेवतीशरण और पौत्र के साथ हाथी पर बैठे हुए राघवपुर के सुप्रसिद्ध दुर्गा मंदिर जा रहे थे। बड़ा पुत्र राधिका प्रताप अपने घोड़े पर सवार उनके साथ-साथ ही चल रहा था।

वसन्तपुर पहुंच कर पंडितजी ने कहा, 'इस अनुष्ठान के लिए राधिका की पत्नी सुचित्रा का होना भी आवश्यक है। लेकिन वह तो अपने मायके चंद्रपुर में है ! और मंदिर में पूजा का समय भी निश्चित है।'

'पिताजी, आप चिन्ता न करें। मैं अपने सूरज पर सरपट जा कर चंद्रपुर से आपकी बहू को लिवा लाता हूं।' और मन ही मन हिसाब लगा कर राधिका प्रताप ने कहा, 'आप निश्चिंत रहें पिताजी, मैं आपसे बाद नहीं पहुंचूंगा।'

इतनी बात करते-करते जनकपुर आ गया। वहां से दुर्गा मंदिर ठीक ३० मील रह गया था।

तभी राधिका ने सूरज को पूरे वेग से दौड़ा दिया। और मात्र डेढ़ घंटे में वह चंद्रपुर जा पहुंचा। रास्ते में जब दुर्गा मंदिर आया था, तब उसने दौड़ते घोड़े के ऊपर बैठे-बैठे ही अपना शीश झुका दिया था।

ससुराल से वह ठीक आधा घंटा बाद ही पत्नी को लेकर चल पड़ा और सीधा मंदिर आ कर रुका। इस सारी यात्रा में सूरज ६० मील प्रति घंटे की औसत गति से भागता रहा था।

और यह क्या, जैसे ही वह मंदिर के सामने रुका था, तभी उसके पिता का हाथी भी वहां पहुंचा था।

बताइए हाथी की औसत गति क्या थी ? और राधिका प्रताप ने जनकपुर के बाद कुल कितनी यात्रा की ?

8
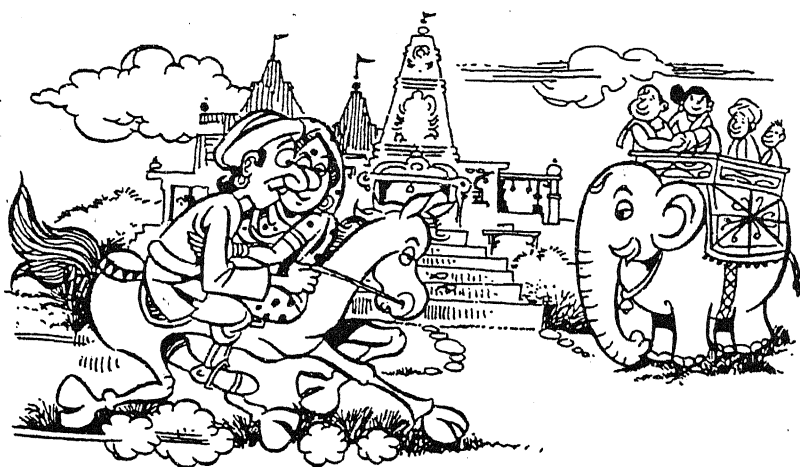
यादराम और उसकी मित्र प्रियदर्शिनी एक ही कार्यालय में काम करते हैं। एक दिन यादराम उसके घर गया। प्रियदर्शिनी जनकपुरी में अपने माता-पिता और दादाजी के साथ रहती थी।

बातों ही बातों में यादराम ने उससे पूछा, 'क्यों प्रियदा, दादाजी की आयु कितनी होगी ?'

प्रियदर्शिनी को न जाने क्या सूझी कि उसने घुमा-फिरा कर उत्तर दिया, 'देखो याद, दादाजी रिटायर हो चुके हैं। उनकी आयु तो नहीं बताऊंगी, हां, मेरी और दादाजी की आयु का जोड़ पिताजी और माताजी की आयु के जोड़ के बराबर है।'

'तो तुम मुझे अपनी तीनों की ही आयु बता दो।'

'ऊं, हूं !' प्रियदर्शिनी ने जोर से सिर हिलाया, 'यह नहीं बताऊंगी, स्वयं ही जान जाओ।'

'बिना किसी आधार के कैसे जान पाऊंगा।' यादराम निराशापूर्वक बोला।

'अरे-अरे, तुम तो नाराज हो रहे हो। चलो, तुम्हें बता देती हूं कि हम चारों की आयु की संख्याएं अविभाज्य हैं। इन चारों संख्याओं में से किसी भी संख्या के अंकों का योग १० से कम ही है।' और फिर शरारत भरी मुस्कान के साथ बोली, 'हां ध्यान रखना, पिताजी मेरी माताजी से २ वर्ष बड़े हैं।'

यादराम सोचने लगा। गणित के प्रति उसकी रुचि ने यहां उसकी सहायता की। उसने अनुमान लगाकर तत्काल चारों की आयु बता कर प्रियदर्शिनी को चकित कर दिया।

क्या आप बता सकते हैं कि उन चारों की आयु अलग-अलग कितनी थी ?

सेठ राधेश्याम की अलमारी में नंबरों वाला ताला लगा हुआ था। ताले के नंबर इच्छानुसार कभी भी बदले जा सकते थे। नंबर भूल न जाएं, इसलिए सेठजी उसे डायरी में लिख लेते थे।

एक बार सेठजी को पर्यटन पर जाना था। अतः उन्होंने ताले के नंबरों को सीधे-सीधे न लिख कर एक नक्शा बनाया और जानबूझ कर नक्शे के कुछ खानों को खाली छोड़ दिया। इन खाली खानों की संख्याओं का योग ही ताले का नंबर था।

चूंकि संख्याओं को जाने बिना नंबर ज्ञात करना कठिन था, अतः सेठजी निश्चिंत हो पर्यटन पर चले गए।

लेकिन वापसी पर सेठजी यह भूल गए कि खाली खानों में कौन-सी संख्याएं होंगी। जब लाख माथापच्ची करने पर भी संख्याएं नहीं भरी जा सकीं तो सेठजी को अत्यंत निराशा हुई। पर अब क्या किया जाए ? या तो ताला तोड़ा जाए या उसे खोलने की युक्ति की जाए।

सेठजी को चिन्तामग्न देख उनके कुशाग्रबुद्धि पुत्र राम सिंह ने उनकी चिन्ता का कारण जानना चाहा। कारण पता चलने पर उसने उस नक्शे पर दृष्टिपात किया। और क्षण भर में नक्शे में खाली खानों को भर कर ताले का नंबर निकाल लिया। फिर तो ताला पलक झपकते ही खुल गया।

बताइए ताले का नंबर क्या था ?

10
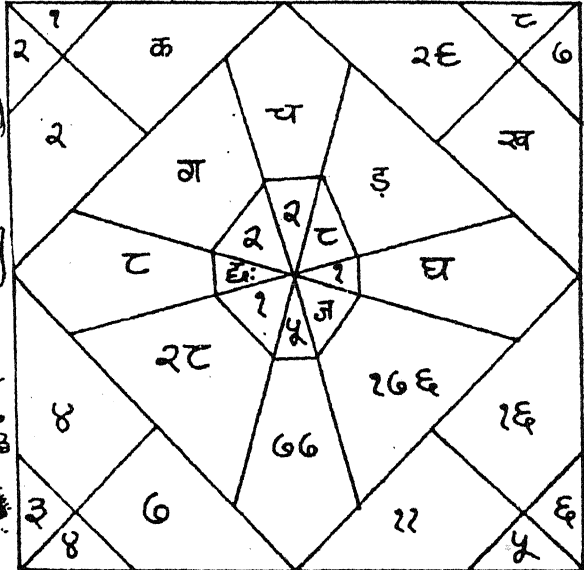
सीमा शुल्क इंस्पेक्टर अशोक गौड़ को सूचना प्राप्त हुई थी कि कुख्यात तस्कर सावशिगर अपनी कार में सोने के बिस्कुट भर कर शुक्रवार को बसन्तपुर से नूरबन्दर जाएगा। अतः वह एक लारी में पुलिस के जवानों को ले कर अपनी जीप में बसनापुर की ओर चल पड़ा। ६ सशस्त्र जवान जीप में भी सवार थे।

लारी ६० कि. मी. प्रति घंटे की अपनी अधिकतम गति पर चली जा रही थी। राष्ट्रीय राजमार्ग नम्बर ९ पर राधूग्राम से पहले ही उसे संदेश मिला कि सावशिगर कार पर रवाना होने वाला है।

'अब क्या हो ? राधूग्राम से बसन्तपुर पूरे २० कि. मी. दूर है। फिर लारी इससे अधिक तेज चल नहीं सकती।' इं. गौड़ ने सोचा और अंततः निर्णय लिया कि आवश्यकता पड़ने पर वह जीप से ही कार का पीछा करेगा। लारी भी इस बीच पीछे-पीछे पहुंच ही जाएगी।

राधूग्राम से निकलते ही उसे संदेश मिला कि कार चल पड़ी है। इं. गौड़ ने बिना समय खोए जीप को पूरे वेग से छोड़ दिया। पूरे सवा घंटे की भागदौड़ के पश्चात् अपने पूरे वेग से दौड़ती हुई कार मदनपुर होते हुए नूरबंदर पहुंची ही थी कि इं. गौड़ की जीप उसके आगे आकर खड़ी हो गई। साथ आए जवानों ने कार को घेर लिया। संयोग से नूरबंदर क्षेत्र का इं. रामसिंह भी अपने दल-बल के साथ वहां उपस्थित था।

तस्करों ने कोई प्रतिरोध किए बिना ही आत्मसमर्पण कर दिया। नूरबंदर पहुंचने और अपराधियों को स्थानीय पुलिस के हवाले करने में इं. गौड़ को मात्र ३० मिनट ही लगे। तत्काल इं. गौड़ ने जीप को मोड़ दिया और जिस वेग से आया था उसी वेग से वापस चल पड़ा। मात्र १५ मिनट बाद ही मदनपुर में उसकी जीप लारी के सामने थी।

बताइए नूरबंदर से मदनपुर कितनी दूर है ? और कार की गति कितनी थी ?
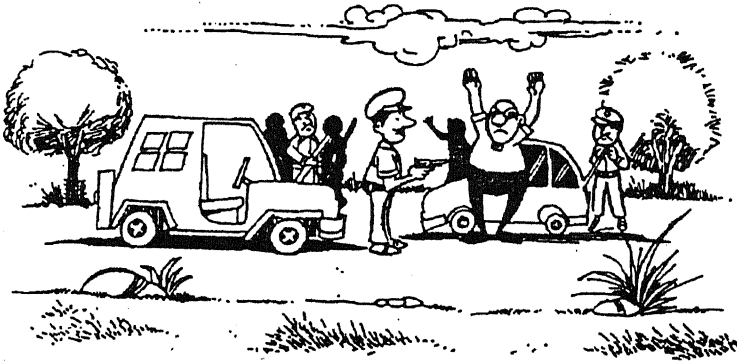
जगत पैन मार्ट अच्छे पैनों के लिए प्रसिद्ध है। एक दिन लाला जगतराम ऊंघ रहे थे, तब दुकान पर जगदीश लाल आए।

लालाजी ने उन्हें 'सर्वप्रिय मार्का' लाल, काले, हरे और पीले पैन दिखाए। पैन सुंदर थे, अतः जगदीश लाल ने २० दर्जन काले, २२ दर्जन पीले, २४ दर्जन हरे और २६ दर्जन लाल पैन खरीदे। जगदीश लाल ने अत्यधिक रियायती दरों पर कुल ६२४० रु. का भुगतान किया। परंतु बाद में वह भूल गया कि कौन-सा पैन किस भाव का है।

हां, उसे यह अवश्य याद था कि लालाजी ने ये पैन रंग के अनुसार ६०, ६५, ७० और ७५ रुपए दर्जन के हिसाब से दिए थे।

क्या आप बता सकते हैं कि किस रंग के पैन का क्या दाम है ?

विगत दिनों **क्रोधित, जंगल की हवा, जगत जननी, दुख** और **प्रेमाश्रम** का प्रदर्शन हुआ। इन फिल्मों में अभिनेता थे–कृष्ण, जितेन, प्रमोद खन्ना, रामेश खन्ना और शैलेंद्र तथा अभिनेत्रियां थीं–भूदेवी, प्रियंवदा, शालिनी शोलापुरे, सीमा मालिनी और सुरेखा। इन्होंने प्रवीण शाह, बाल सावंत, सतीश भई, सेवानन्द और सोहन देसाई के निर्देशन में काम किया था।

निम्नांकित तथ्यों के आधार पर बताइए कि किस फिल्म में कौन-कौन से अभिनेता, अभिनेत्री ने किसके निर्देशन में काम किया ?

जितेन को सोहन देसाई के निर्देशन में किए गए सुन्दर अभिनय के लिए सिने फेयर पुरस्कार मिला। लेकिन इसमें उसके साथ सीमा नहीं थी।

कृष्ण की पहली फिल्म **जंगल की हवा** जल्दी ही उतर गई। उसके निर्देशक के नाम में **'स'** नहीं आता।

जगत जननी में शैलेंद्र के काम को सभी ने सराहा। सेवानन्द ने नई तारिका भूदेवी को ब्रेक दिया। इनकी फिल्म **दुख** नहीं थी, जिसने 'रजत जयंती' मनाई थी।

सावंत की **प्रेमाश्रम** की नायिका का नाम **'प्र'** से आरम्भ नहीं होता।

प्रमोद ने बड़े दिल से सतीश की फिल्म में काम किया। परन्तु यह फिल्म पिट गई।

शालिनी ने **क्रोधित** में काम किया था।

सुरेखा-रामेश कभी साथ नहीं रहे। और न ही प्रियंवदा-कृष्ण एक साथ आए थे।

13

केंद्रीय मंत्रिमंडल में सम्भावित परिवर्तन को देखते हुए अनेक सांसद और दलीय कार्यकर्ता जोड़तोड़ में व्यस्त थे।

एक दिन प्रधानमंत्री ने चुपके से अपने मंत्रिमंडल में परिवर्तन किया। चार मंत्री नए लिए, तीन को निकाला और एक के विभाग में परिवर्तन कर दिया। इससे अनेक पद-इच्छुक व्यक्ति निराश हो गए।

परिवर्तन से प्रभावित मंत्रालय थे–वाणिज्य, विदेश, वित्त, विधि और श्रम। इन्हें संभालने के लिए आए पांच मंत्री थे–कृष्ण प्रसाद सोलंकी, नरसिंह राम, भोला राम, शिवानन्द और शूरवीर सिंह। ये उ. प्र., गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश से संबंधित थे। इससे पूर्व एक वाणिज्य मंत्रालय में मंत्री था। शेष में एक लोकसभा सदस्य और एक राज्यसभा सदस्य था। इसमें एक पूर्व-मुख्यमंत्री भी था, जिसे विधायक मंडल में बहुमत समाप्त होने के कारण हटा दिया गया था। इनके अतिरिक्त एक समाजशास्त्री को भी मंत्री बनाया गया था।

चार वर्षों से चले आ रहे वाणिज्यमंत्री को विदेश मंत्रालय दिया गया।

उ. प्र. के सांसद शूरवीर को विधिमंत्री बनाने की आलोचना सर्वत्र हुई क्योंकि वह वकील के रूप में बुरी तरह विफल रहा था।

हिमाचल प्रदेश के नरसिंह राम को जो मंत्रालय मिला वह वाणिज्य मंत्रालय नहीं था।

भोला राम का मंत्रालय वाणिज्य या विदेश नहीं था। लोकसभा सदस्य शिवानन्द को वित्त मंत्रालय मिला। लेकिन मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री को श्रम मंत्रालय नहीं मिला था।

महाराष्ट्र से बने मंत्री को चिंता है कि उसे छह माह के भीतर किसी भी सदन का सदस्य बनना है। इस विपरीत हवा में तो यह बड़ा कठिन लग रहा था उसे।

क्या आप बता सकते हैं कि किस मंत्री को कौन-सा विभाग मिला, इससे पूर्व वह क्या था और उसका संबंध किस प्रांत से है ?

14
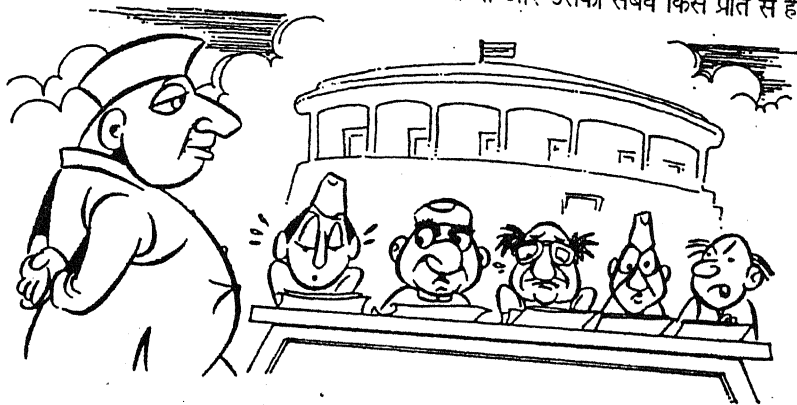
वकीलचंद और रमेश चंद्र ने अपने १० अन्य. मित्रों (निम्नांकित सूची के अनुसार) के साथ मिल कर घनी बस्ती स्थित एक पुराना लेकिन विशाल मकान खरीदा। इस पुराने मकान को गिराकर नया भवन बनाया गया जिसमें कुल १२ फ्लैट थे।

सदस्यों की सूची

क्र. सं.	नाम
१.	वकील चन्द
२.	रमेश चंद्र
३.	माणिक चंद गुप्ता
४.	वासुदेव शरण
५.	देशराज वर्मा
६.	अमीर चन्द
७.	महेंद्र सिंह वशिष्ठ
८.	शक्ति मोहन
९.	जीवनदास चोपड़ा
१०.	कुमार नागेश
११.	रेवती प्रसाद
१२.	सुरेंद्र खन्ना

आवंटन में किसी प्रकार की धांधली को रोकने के लिए पर्ची निकाल कर फ्लैट आवंटित किए गए।

तीन मित्रों को, जिनके क्रमांक आरोही क्रम में साथ-साथ थे और उन क्रमांकों का योग २१ था, उसी क्रम में फ्लैट मिले। उनको मिले फ्लैटों के नम्बरों का योग मात्र ७ ही था।

तीन व्यक्तियों को ऐसे फ्लैट मिले, जिनके नम्बर उनकी क्रम संख्याओं से दो गुने थे, जबकि दो व्यक्तियों के फ्लैट नं. क्रम संख्याओं के आधे थे।

क्रमांक ९ को फ्लैट नं. १२ और १२ को फ्लैट नं. ९ मिला। रमेश चन्द्र को ७ नम्बर फ्लैट मिला। किसी भी व्यक्ति की क्रम संख्या तथा फ्लैट नं. समान नहीं थे।

बताइए किस व्यक्ति को कौन-सा फ्लैट मिला ? ठहरिए, पूरी सूची बनाने की आवश्यकता नहीं। केवल फ्लैटों के क्रमानुसार व्यक्तियों के नामों के पहले अक्षर ही लिख लें। शायद यह भी कोई नाम बन जाए।
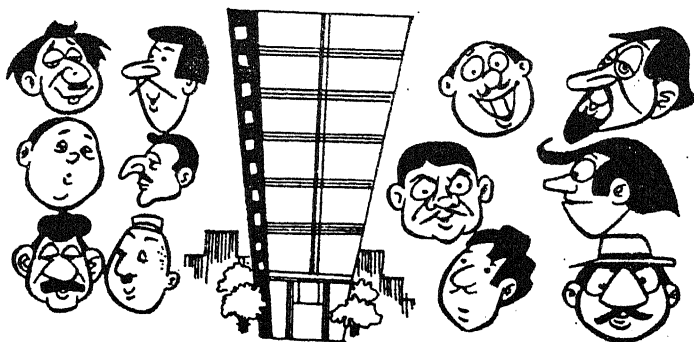
बहुत पहले की बात है। वर्ष १९५४ में कृष्ण चंद के पिता की आयु कृष्ण की आयु से तीन गुनी थी। कृष्ण का छोटा भाई राजीव उससे पांच वर्ष छोटा था।

कुछ वर्षों बाद जब राजीव की आयु १९५४ की अपनी आयु से तीन गुनी हो गई, तब दोनों भाइयों की कुल आयु अपने पिता की आयु के बराबर थी।

बताइए १९८९ में तीनों की अलग-अलग आयु कितनी रही होगी ?
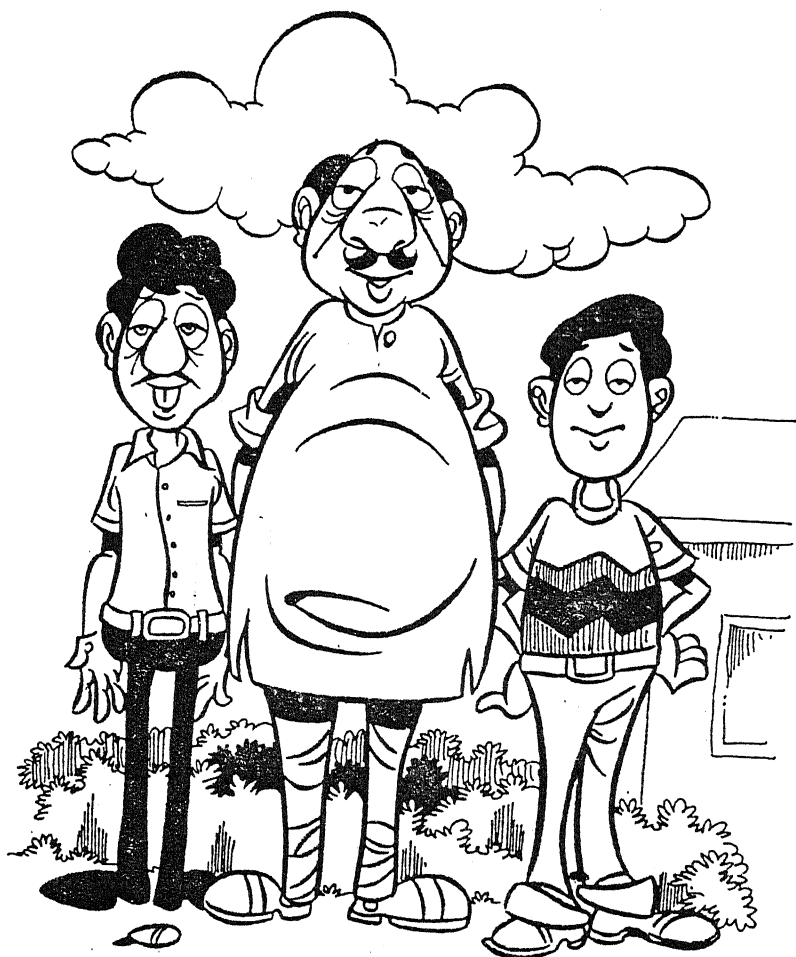
लोकप्रिय सितारे 'परवेज अकरम' की हत्या का समाचार विद्युत वेग से पूरे शहर में फैल गया था। सूचना पाते ही इंस्पेक्टर किशन चंद वर्मा अपने सहायक हरजीत साहनी के साथ तत्काल परवेज अकरम के घर जा पहुंचा।

वहां पहुंचते ही उन्होंने घटनास्थल का अवलोकन किया। पंचनामा करके पुलिस दल जब वापस जा रहा था, तब इं. वर्मा की दृष्टि कागज के एक छोटे से टुकड़े पर पड़ी।

यह किसी विजिटिंग कार्ड का टुकड़ा था, जिसे फाड़ कर फेंक दिया गया था। इसका नाम वाला हिस्सा गायब था। पता भी अधूरा था और टेलीफोन नंबर पर रक्त का धब्बा होने के कारण उसे पढ़ पाना अत्यन्त कठिन था। बहुत प्रयत्न के बावजूद भी इं. वर्मा उसे पढ़ नहीं पाया। चूंकि यह टुकड़ा हत्या का एक महत्वपूर्ण सुराग हो सकता था, अतः इसे पढ़ना आवश्यक था।

अंततः इं. वर्मा ने वह टुकड़ा फारेंसिक विभाग में भेजा जहां इसका टेलीफोन नंबर पढ़ लिया गया।

यह नंबर जो सात अंकों का था, बड़ा ही विचित्र था। इसमें न तो शून्य था और न ही कोई अंक दो बार आया था। सातों अंक निरंतर अंक थे और इनका योग दो अंकों की विषम संख्या बनता था। तीन अंकों के एक्सचेंज कोड में से तीन घटाने पर एक पूर्ण वर्ग संख्या प्राप्त होती थी, जिसके वर्गमूल के अंक आरोही क्रम में थे। शेष चारों अंकों से बनी संख्या (न्यूनतम संख्या) टेलीफोन नंबर का भाग थी।

और इस टेलीफोन नंबर के आधार पर इं. वर्मा ने हत्यारे को धर पकड़ा। बताइए हत्यारे का टेलीफोन नं. क्या था ?

गत दिनों 'वेस्टर्न हिल्स स्कूल' की आठवीं से बारहवीं तक की कक्षाओं के परिणाम आए थे। इन कक्षाओं में प्रथम आने वाले विद्यार्थी थे–असीम, भावना, रश्मि, सौरभ और स्वाति। इनकी अध्यापिकाएं स्नेहलता, सुधा, सुनयना, प्रेमलता और प्रीतिका थीं। इनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले विषयों–अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, सामान्य ज्ञान और हिंदी में इन विद्यार्थियों ने विशेष योग्यता प्राप्त की थी।

दिए गए तथ्यों के आधार पर बताइए कि कौन-सा विद्यार्थी किस कक्षा में पढ़ता है, उसे कौन पढ़ाता था और किस विषय में उसने विशेष योग्यता प्राप्त की।

असीम की बड़ी बहन स्वाति ने सामान्य ज्ञान में विशेष योग्यता प्राप्त की, परंतु सुनयना ने इन्हें कभी नहीं पढ़ाया था।

बारहवीं की अध्यापिका स्नेहलता की कक्षा में अंग्रेजी में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाला ही प्रथम आया जो सौरभ नहीं था। सौरभ हिंदी में कभी भी विशेष योग्यता नहीं पा सका।

दसवीं कक्षा की रश्मि गणित अध्यापिका प्रेमलता को नहीं जानती।

सुधा कक्षा आठ को हिंदी पढ़ाती है।

प्रीतिका ने कभी भी नवीं कक्षा को नहीं पढ़ाया।

18

जेब के पैसे लुट जाने के बाद प्रेमसागर अपना सिर धुन रहा था। पर अब पछताए क्या होत है ...

उसे रह-रह कर याद आ रही थी बड़े भाई की बातें। उन्होंने बारम्बार समझाया था, 'मेले में ध्यान रखना। वहां तरह-तरह के ठग मिलते हैं। जेब की रकम दोगुनी करने की बातें तक कहते हैं।'

और प्रेमसागर ने उनकी बात गांठ बांध ली थी। परंतु वह नहीं जानता कि कब उसे ठिगने कद का शम्भूनाथ मिला और कब उसकी बातों में आकर रुपए दोगुने करवाने की उसकी बातों को वह ध्यान से सुनने लगा था।

शम्भूनाथ ने उसे कहा था कि, 'आप जितनी बार चाहेंगे मैं आपके पैसे दोगुने करूंगा। परन्तु बदले में हर बार १०० रुपए पूजा दक्षिणा के लूंगा।'

प्रेम उसकी बातों में फंसा हुआ बोला, 'हर बार १०० रुपए ज्यादा हैं। मैं इतनी दक्षिणा तो दूंगा नहीं।'

शिकार हाथ से जाता देख शम्भूनाथ अपनी दक्षिणा कम करने को तैयार हो गया। अन्ततः तय हुआ कि प्रेम हर बार पूजा दक्षिणा स्वरूप ५१ रुपए, दान स्वरूप ११ रुपए और पान-फूल आदि के लिए २ रुपए देगा।

सब शर्तें तय हो जाने के बाद प्रेम ने पत्नी के विरोध के बावजूद अपनी जेब की सारी राशि एक लिफाफे में डाल कर शम्भूनाथ के हवाले कर दी। किसी प्रकार के संदेह को दूर करने के लिए शम्भूनाथ ने राशि दोगुनी करने का कार्य वहीं आरम्भ कर दिया। न जाने कहां से आकर उसका चेला बिरदू उसका हाथ बंटाने लगा।

१० मिनट बाद ही शम्भूनाथ ने लिफाफा निकाल कर प्रेम को दिया। लिफाफा खोलते ही उसकी बांछें खिल गईं। लिफाफे में रखी राशि वास्तव में दोगुनी हो गई थी।

वचनानुसार उसने दक्षिणा और व्ययादि की तय की गई राशि शम्भूनाथ के हवाले कर दी। कुछ देर सोच कर उसने हाथ का लिफाफा फिर शम्भूनाथ के हवाले कर दिया।

शम्भूनाथ ने वही सब कुछ दोहराया। छठी बार जब प्रेम ने लिफाफा पकड़ा, तब उसमें रखी राशि यद्यपि दोगुनी हो गई थी, तथापि पूरी दक्षिणा और व्ययादि के पूरे रुपए देने के बाद उसमें कुछ नहीं बचा था।

और इस प्रकार राशि वास्तव में दोगुनी होने के बावजूद भी प्रेम ठगा गया।

क्या आप बता सकते हैं कि प्रेम ने लिफाफे में कितनी राशि रखी थी ?

100

19

मेन बाजार वाले लाला रामनिवास गुप्ता का टेलीफोन अचानक ही खराब हो गया। उन्हें तत्काल फोन करने थे। अब क्या हो। तभी उन्हें याद आया कि बाजार में एक और टेलीफोन है जो उनकी दुकान से छह दुकानें छोड़ कर लगा हुआ है। लेकिन वह टेलीफोन सार्वजनिक टेलीफोन है, जिसमें ५० पैसे के दो सिक्के डालने पड़ते हैं।

लालाजी ने तत्काल अपना गल्ला खोला और उसमें से ५० पैसे के सिक्के निकालने लगे। उसमें कुल १० रुपए के सिक्के थे। ये सिक्के १०, २०, २५ और ५० पैसे के मूल्यवर्ग में ही थे और मात्रा में केवल ५० ही सिक्के थे। २० पैसे के सिक्कों की संख्या २५ पैसे के सिक्कों से ६ अधिक थी, जबकि १० पैसों के सिक्के विषम संख्या में नहीं थे।

बताइए, लाला रामनिवास अपने गल्ले में पड़े सिक्कों की सहायता से अधिकतम कितने टेलीफोन कर सकते हैं ?

यादराम और खैराती लाल मिलकर लाटरी के टिकट खरीदते थे। हर बार की भांति इस बार भी दोनों ने 'खरी होम' के ई-सीरीज के २० टिकट खरीदे थे। और जिस दिन पुरस्कारों की सूची छपी, उस दिन दोनों ने तत्काल एक समाचारपत्र खरीदा और पुरस्कृत टिकट नंबरों पर दृष्टि दौड़ाने लगे।

यह क्या ? उनका टिकटों वाला लिफाफा तो मिल ही नहीं रहा था। बड़ी दौड़-धूप के बाद भी परिणाम 'वही ढाक के तीन पात'।

दोनों की आंखें प्रथम पुरस्कार विजेता टिकट पर लगी थीं।

'अरे हां, याद आया, अपने टिकटों में भी एक टिकट ऐसा था जिसके नंबर में कोई अंक दोबारा नहीं आया था।' यादराम ने स्मरण करते हुए कहा।

'और सभी छहों अंकों का योग भी तो २४ था।' खैराती लाल ने कहा।

'बिल्कुल ठीक', यादराम ने उसका समर्थन किया और बोला, 'पहले तीन अंकों से बनी संख्या अंतिम तीन अंकों से बनी संख्या का दो गुना थी।'

'और एक बात तो तुम भूल ही गए मित्र, तीसरे और चौथे अंकों से बनी दो अंकों की संख्या न केवल एक वर्ग संख्या है, बल्कि उसका वर्गमूल भी टिकट नंबर का ही एक अंक है।' खैराती लाल बोला।

'वो मारा' यादराम चिल्लाया, 'यह पहला इनाम तो हमारे उसी टिकट को मिला है।' और इतना कह कर उसने सारा घर छान मारा तथा थोड़ी ही देर में वह पुरस्कृत टिकट उसके हाथ में था।

हां, एक बात और जोड़ दूं कि इन दोनों ने आज तक ऐसा कोई टिकट नहीं खरीदा था जिसमें शून्य हो।

बताइए उस टिकट का नंबर क्या था ?

21

गत दिनों राजधानी दिल्ली में एक 'आशु चित्रकला' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। अन्य बच्चों के साथ-साथ अंकुश, आसीम, जावेद, नवजोत और स्वामी ने भी इसमें भाग लिया था। दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, मद्रास और हैदराबाद से आए इन पांचों बच्चों ने पहले पांचों पुरस्कार हथिया लिए थे। इनके चित्रों के शीर्षक थे–'पार्क का दृश्य', 'एक व्यस्त सड़क', 'रेलवे प्लेटफार्म', 'समुद्र में तूफान' और 'स्कूल का मैदान'।

स्वामी ने बनाया था 'स्कूल का मैदान', परन्तु उसे पांचवां पुरस्कार नहीं मिला था।

पहला पुरस्कार पाने वाला छात्र किसी अन्य नगर से नहीं आया था और न ही वह 'एक व्यस्त सड़क' बनाने वाला जावेद था।

आसीम ने सदा की भांति यहां भी तीसरा पुरस्कार जीता, परन्तु उसने आज तक 'रेलवे प्लेटफार्म' कभी नहीं बनाया था और न ही वह कलकत्ता से आया था।

मद्रास के छात्र ने 'पार्क का दृश्य' बना कर चतुर्थ पुरस्कार पाया था। दूसरा पुरस्कार हैदराबाद के अंकुश को मिला।

दी गई सूचनाओं के आधार पर क्या आप बता सकते हैं कि किस छात्र ने कौन-सा चित्र बना कर कौन-सा पुरस्कार प्राप्त किया और वह कहां से आया था?
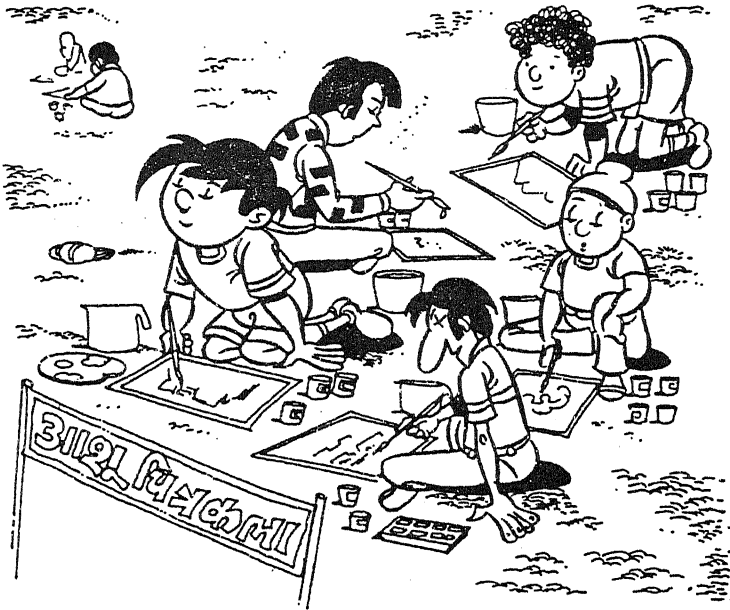
त्रिलोक धूसिया की चिट पाते ही उसके मित्र रामनिवास शर्मा ने चिट लाने वाले राधेश्याम को तत्काल अपनी जेब से कुछ रुपए और पैसे दे दिए। जल्दी में रामनिवास ने उसे पैसों के बदले रुपए और रुपयों के बदले पैसे दे दिए।

राधेश्याम ने भी ध्यान नहीं दिया और तत्काल उस राशि को अपनी खाली जेब के हवाले कर दिया। रास्ते में राधेश्याम ने ४ सिगरेट लिए और दुकानदार को उसी जेब से १ रु. ८० पैसे दे दिए।

वापस पहुंचने पर राधेश्याम ने सिगरेट और शेष राशि त्रिलोक को दे दी।

त्रिलोक ने पाया कि वह राशि चिट में मांगी गई राशि का चार गुना थी।

बताइए त्रिलोक ने चिट पर कितनी राशि लिखी थी ?

23

देश में रंगीन टी. वी. की बढ़ती हुई मांग को देख कर अरुण खन्ना ने 'खन्नाविजन' नामक कंपनी बनाई। इस कंपनी में जितने कर्मचारी थे, वे नित्य उतने ही टी. वी. बनाते थे।

फैक्ट्री प्रत्येक बुधवार को बंद रहती थी। गत माह दो राजकीय अवकाश होने के बावजूद फैक्ट्री उतने ही दिन खुली जितने कि कर्मचारी कंपनी में काम करते थे।

'खन्नाविजन' टी. वी. की गुणवत्ता को देखते हुए उसके सभी टी. वी. हाथोंहाथ बिक जाते थे। प्रत्येक टी. वी. पर अरुण खन्ना को १७३६ रुपए का लाभ होता था। गत माह बने टी. वी. सैटों की बिक्री से उसे जितने रुपए का लाभ हुआ, वह राशि सात अंकों में थी।

बताइए फैक्ट्री में कितने कर्मचारी काम करते हैं ?
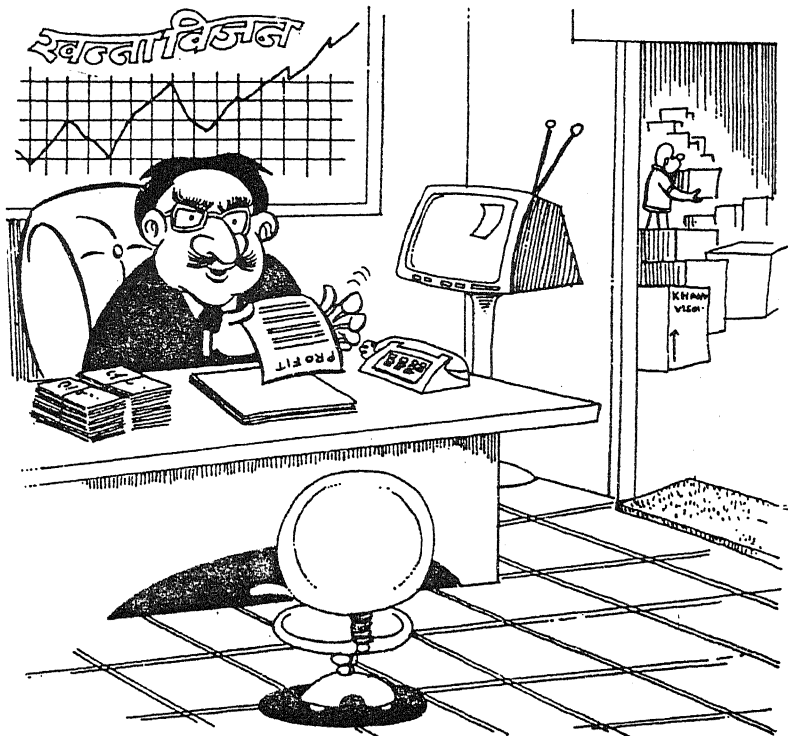
चौबीसवें ओलंपिक में भाग लेने गए पांच प्रतियोगी—केवल राम, जगतसिंह, डी. टी. निशा, बालभद्र सिंह और एस.वी. पुट्टूसामी ने जिम्नास्टिक्स, जूडो, दस हजार मीटर दौड़, तीरंदाजी और तैराकी में भाग लिया था। अपनी-अपनी प्रतियोगिताओं में इन्होंने छठा, आठवां, १२वां, २५वां और ३९वां स्थान पाया। इस प्रदर्शन पर उनके प्रशिक्षकों—चिन चो मो, जेम्स हो, तांबियार, माइकल स्पिलेन और मिखाइल कोस्यानोव को बड़ी निराशा हुई।

राष्ट्रीय तैराकी चैंपियन केवल को आठवां स्थान ही मिल सका। उसका कोच तांबियार नहीं था।

जिम्नास्टिक्स और जूडो चैंपियन चिन चो मो के प्रशिक्षु को २५वां स्थान ही मिल पाया था। लेकिन वह पुट्टूसामी नहीं था।

डी.टी. निशा ने कभी मारधाड़ या लड़ाई वाले खेलों में भाग नहीं लिया था। लेकिन उसकी स्थिति जगत से अच्छी और बालभद्र के मुकाबले में खराब थी।

जेम्स हो तीरंदाज रहा था। उसके तीरंदाज को १२वां स्थान मिला था।

दस हजार मीटर दौड़ में भाग लेने वाला ३९वें स्थान पर ही आ पाया था।

पुट्टूसामी ने सदा ही मारधाड़ पसंद की थी। उसने ऐसे ही किसी खेल में भाग लिया था, परंतु उसे छठा स्थान नहीं मिला जो माइकल के शिष्य को मिला था।

बताइए, किस खिलाड़ी ने किस खेल में भाग लेकर कौन-सा स्थान पाया और उसका प्रशिक्षक कौन था ?

25

कस्टम अधिकारी देवेन्द्र सिंह को सूचना मिली थी कि कुख्यात तस्कर 'यरामता' अपनी काली कार पर पालम हवाई अड्डे की ओर जा रहा है। सूचना मिलते ही देवेन्द्र सिंह ने पुलिस इंस्पेक्टर संजय रावत के साथ मिल कर धौला कुआं के पास अपना जाल बिछा दिया। वहां हर कार की बारीकी के साथ जांच की जा रही थी।

ठीक एक घंटे बाद एक सफेद कार वहां आ कर रुकी। सब ठीक-ठाक पा कर इं. रावत ने उसे जाने का संकेत किया ही था कि देवेन्द्र सिंह ने उसे पुनः रुकने के लिए कहा।

उसकी दृष्टि कार की नंबर प्लेट पर गई, जिसमें नंबर ऊपर था और अंग्रेजी में लिखा रजिस्ट्रेशन कोड नीचे की ओर था। ध्यान से देखने पर पता चला कि नंबर प्लेट उल्टी लगी हुई थी।

देवेन्द्र सिंह ने नोट किया कि कार का उल्टा नंबर सीधे नंबर से ५४० कम था। चार अंकों के दोनों नंबरों में कोई भी पहला अंक विषम नहीं था। और किसी भी स्थिति में पहला व दूसरा अंक समान नहीं थे।

संदेह के आधार पर पुनः रोकी कार में दाढ़ी वाला व्यक्ति ही 'यरामता' था जिसने रास्ते में कार बदल ली थी।

बताइए यरामता की कार का सही नंबर क्या था ?

'यूं ही कोई मिल गया था...'

गाने की पंक्तियां गा रहे थे अनीस अहमद, आशीष धवन, जैकी डिसूजा, प्रभु दयाल और रामपाल सिंह। अजमेर, दिल्ली, पानीपत, भोपाल और मेरठ से आए इन युवकों के साथियों के दूसरे दल ने जवाब में देशप्रेम का गीत सुनाया। इस दल में थे–जानी डिसूजा, निकुंजलाल, प्रवीण चौरसिया, रामेंद्र शर्मा और शूर सेन। दो-दो के ग्रुप में आए ये युवक कार, बस, मोटर-साइकल, रेलगाड़ी और साइकल से शिमला आए थे और उसी वाहन से वापस गए थे।

मेरठ से चलते ही अनीस और उसका साथी सो गए थे। प्रवीण रामपाल या आशीष को पहले कभी नहीं मिला था।

पानीपत से साइकल पर चले युवकों के नाम का पहला अक्षर समान था।

प्रभुदयाल ने वापसी पर प्रवीण को गले लगा कर पत्राचार करने के लिए कहा था।

दिल्ली से चलते समय निकुंज मोटर-साइकल चला रहा था, परंतु उसके पीछे आशीष नहीं था।

भोपाल से रेल पर आए मित्रों में शूर सेन या आशीष नहीं थे। वे अलग-अलग वाहनों से शिमला आए थे।

जानी अजमेर से कार पर आया था।

बताइए कौन-से युवक, किस शहर से शिमला आए थे और वे किस वाहन द्वारा वहां पहुंचे ?

27

अपराधी कितना भी चालाक क्यों न हो वह कानून की पकड़ में आ ही जाता है। और 'काला गुलाब' गिरोह के अनवर अहमद, देवेन दास, निखिल चंद्रा, रतन शाह और सुरेंद्र पाल को पुलिस ने डकैती की योजना बनाते हुए दिल्ली के चांद होटल में धर पकड़ा। गोल्डी, जोहरी, पहलवान, रूपी और सिक्का नाम से कुख्यात ये डाकू गुप्ती, छुरी, तलवार, देसी कट्टा व रिवॉल्वर जैसे हथियार रखते थे और कलकत्ता, जयपुर, दिल्ली, बंबई और मद्रास के रहने वाले थे।

पहलवान के पास तलवार नहीं थी और न ही वह कहीं बाहर से आया था।

मद्रास से आया अनवर, देवेन के आग उगलने वाले हथियार को नापसंद करता था।

सुरेंद्र ने बंबई से आए रूपी को गुप्ती दी थी। जयपुर से आने वाले के सामान में से देसी कट्टा निकला था जो गोल्डी–देवेन का नहीं था।

कलकत्ता से आने वाले के पास रिवॉल्वर था। रतन शाह को लोग जोहरी कहते थे।

बताइए कौन-सा अपराधी कहां से आया था। उसके पास कौन-सा हथियार निकला और वह किस नाम से कुख्यात था ?

28

सुप्रसिद्ध साहित्यकार मानव मुखर्जी के घर पर हुई गोष्ठी में आए प्रतिष्ठित उपन्यासकार देवेंद्र चटर्जी, एस.एन. शंकरन, पी. मलयासोमी और रमण चौधरी अपने-अपने अनुभव सुना रहे थे। इनके उपन्यास–'आकाश को छू लूंगा', 'धरती पर इंसान', 'मानव सदन', 'हम एक हैं' और 'हमारे-तुम्हारे' पुरस्कृत हो चुके थे। ध्यान पीठ, पुस्तकालय प्रकाशन, रंगीला मुद्रणालय, राष्ट्रीय प्रकाशक और साहित्य सदन द्वारा प्रकाशित इन सभी उपन्यासों को १९८२, ८३, ८४, ८५ और ८६ में पुरस्कार मिले थे।

मानव ने 'हम एक हैं' लिखा था, जिसे राष्ट्रीय प्रकाशन ने छापा था।

पुस्तकालय प्रकाशन से प्रकाशित 'धरती पर इंसान' को १९८५ में पुरस्कार मिला।

मलयासोमी का 'हमारे-तुम्हारे' साहित्य सदन से छपा था। उसे मानव से पहले पुरस्कार मिला।

रंगीला ने 'आकाश को छू लूंगा' छापा जो १९८६ में पुरस्कृत हुआ। लेकिन यह शंकरन की कृति नहीं थी। १९८४ में जो उपन्यास पुरस्कृत हुआ, वह देवेंद्र कृत था और उसे ध्यान पीठ ने छापा था।

बताइए किस लेखक के उपन्यास को किस प्रकाशक ने छापा और उसे कब पुरस्कार मिला ?

29

अमित का जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनाया गया था। अन्य लोगों के अतिरिक्त उसके दोस्त राजीव, सुधीश, विक्रम और मदन भी आए थे। इन पांचों दोस्तों को लोग प्यार से किट्टू, गिल्लू, पप्पू, बिट्टू और मिंटू भी कहते थे। इन पांचों की बहनें–दीप्ति, देविका, प्रियंका, माला और सविता भी आई थीं। इन्हें भी अनु, चीकू, छुटकी, निक्की और रिची के नाम से जानते थे। नीचे दी गई सूचनाओं के आधार पर बताइए कि किसकी बहन कौन है और उन्हें किन-किन नामों से जाना जाता है ?

बिट्टू और उसकी बहन देविका समय पर आए थे, जबकि मिंटू सबसे बाद आया था।

गिल्लू और राजीव, वहां आने से पूर्व नहीं जानते थे कि माला को रिची कहते हैं।

सुधीश अपनी बहन की सहेली दीप्ति को चीकू कहता था। वह भी उसे पप्पू कहती थी।

किट्टू की बहन अनु के साथ सविता खड़ी हुई थी।

मिंटू और उसकी बहन छुटकी, मदन और प्रियंका से बातें कर रहे थे।

विक्रम निक्की के साथ पढ़ता था और वह उसे गिल्लू कहती थी।

त्रिवेंद्रम से चली 'रजत जयंती' एक्सप्रेस में सदा २० डिब्बे लगते थे। इसका प्रत्येक डिब्बा आरामदेह था और २० मीटर लम्बा था।

बंगलौर में इसके कुछ डिब्बे कटने के बाद गाड़ी छोटी भले ही हो गई, परन्तु उसके डिब्बों की संख्या के अंक समान नहीं थे।

हैदराबाद से निकलने के बाद दिल्ली की ओर बढ़ती 'रजत जयन्ती' को दिल्ली जाती हुई 'मद्रास-दिल्ली पार्सल' गाड़ी मिली। इसे पार करने में रजत जयंती को पूरे एक मिनट का समय लग गया था। अत्यन्त लम्बी 'मद्रास-दिल्ली पार्सल' गाड़ी के गार्ड सहित सभी डिब्बे ६ मीटर लम्बे थे। लेकिन दो इंजनों के बावजूद भी इसकी गति रजत जयंती की गति का मात्र पांचवां भाग ही थी। यदि रजत जयन्ती की गति २० कि. मी. प्रति घंटा बढ़ा दी जाती, तब निश्चित रूप से वह इसे ४५ सैकंड में ही पार कर जाती।

इन दोनों ही गाड़ियों में लगे १८-१८ मीटर लम्बे तीनों इंजन चितरंजन में बने थे।

बताइए प्रत्येक गाड़ी में कुल कितने-कितने डिब्बे लगे हुए थे ?

31
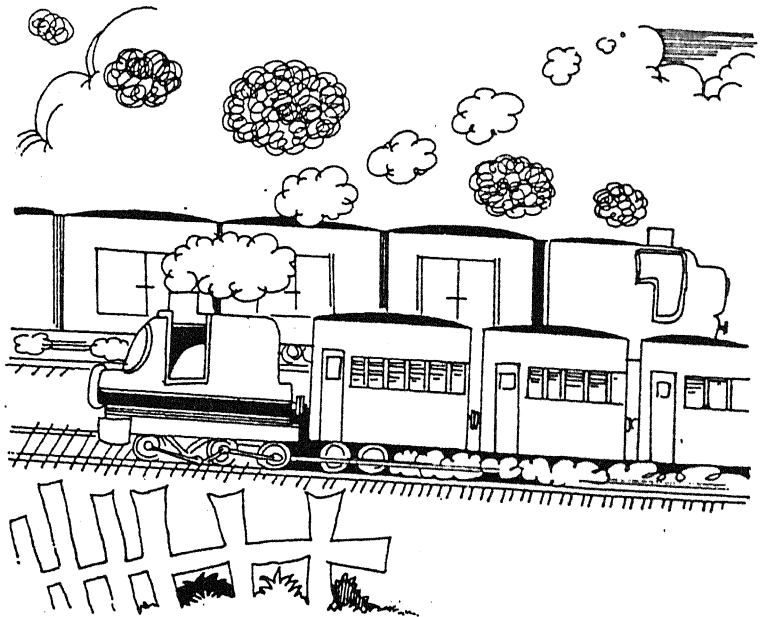
कैलकुलेटर पा कर आलोक की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। न जाने क्या-क्या गणनाएं करता रहता है वह उस पर।

और उस दिन भी वह उस पर जमा, घटा, गुणा, भाग किए जा रहा था। उसके पापा दाढ़ी बना रहे थे। अचानक उन्होंने शीशे में से देखा कि कैलकुलेटर पर कोई संख्या लिखी हुई है। चार अंकों की यह संख्या शीशे में से जितनी दिख रही थी, वास्तव में कैलकुलेटर में भी वही संख्या ही थी।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि इस संख्या का वर्गमूल आलोक के पापा के बैंक खाते का नंबर था।

बताइए, उसके पापा के बैंक खाते का नम्बर क्या था ?

32

शृंखलाओं को पूरा करने वाले खेल अशोक को बहुत भाते थे। जहां कहीं उसे ऐसे प्रश्न मिलते वह उन्हें हल करने का प्रयत्न करता। उसकी इसी रुचि को देख कर उसके पिताजी ने एक दिन उसे एक मुड़ा-तुड़ा कागज दिया। इसमें मकड़ी के जाले जैसा एक नक्शा बना हुआ था, जिसमें विभिन्न संख्याएं लिखी हुई थीं। खाली स्थान की संख्याओं को भरना था।

अशोक इसे हल करने में लग गया। और पूरे दो दिन प्रयत्न करने के बाद भी वह इसको हल न कर सका। क्या आप उसकी सहायता कर सकते हैं ? आपको केवल यह बता दूं कि खाली खानों की संख्याओं के योग के दोगुने में चार विभिन्न अंक हैं। बताइए चार अंकों की यह संख्या क्या है ?

33
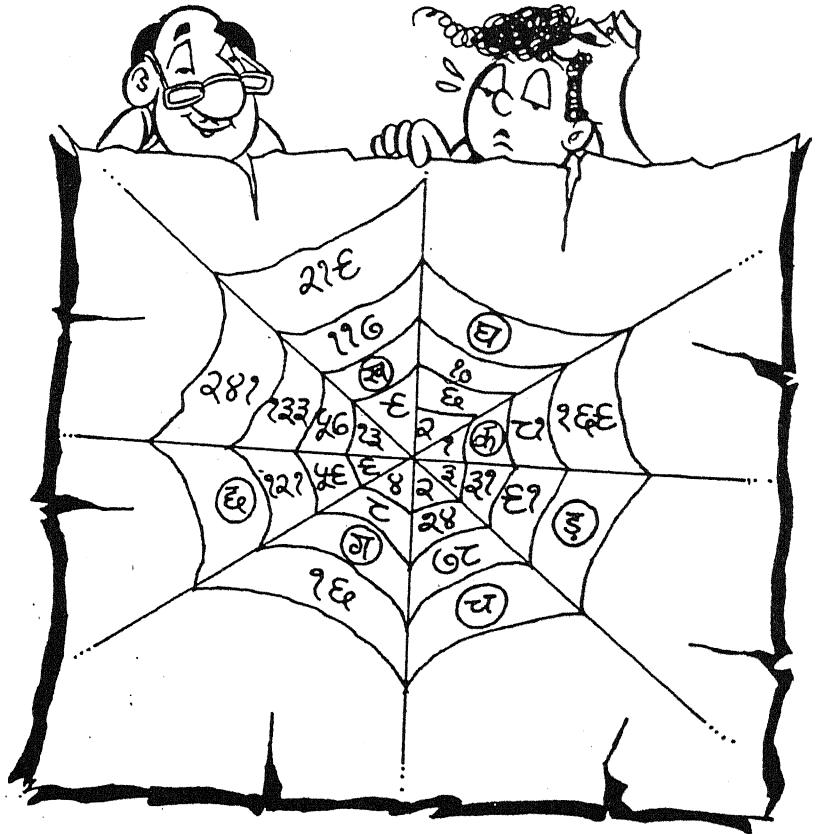
पिछले कुछ समय में पुलिस ने उपेंद्र 'जख्मी', राम 'संकट', लाल 'प्रियदर्शी', श्याम 'बेताब' और सुरेंद्र 'प्रेम' की रचनाओं—अजनबी का अफसाना; आग और शोले; उनकी कहानी; जंगल की आग और 'मेरी व्यथा' को जब्त किया था। इसके अतिरिक्त इन्हें प्रकाशित करने वाले—लाला प्रकाशन, ग्रंथ महल, भीम प्रकाशन, संघ प्रकाशन और कठिन साहित्य सदन तथा इनको छापने वाले चन्दू लाल, रमेश 'अमर', राधेश्याम 'निर्मोही', सतीश वार्ष्णेय और सत्येंद्रनाथ के छापाखानों के विरुद्ध भी पुलिस ने चालान दर्ज किए।

साम्प्रदायिकता की बलि चढ़ी १०० महिलाओं की खबर को आधार बना कर लिखी गई श्याम की रंचना भीम प्रकाशन से निकली थी, परंतु उसे सत्येंद्र ने नहीं छापा था।

संघ प्रकाशन में छापा मार कर पुलिस 'अजनबी का अफसाना' की डमी और पांडुलिपि दोनों ही ले गई थी।

सुरेंद्र 'प्रेम' की पुस्तक 'जंगल की आग' को सतीश ने छापा था। राम 'संकट' की पुस्तक 'आग और शोले' पा कर पुलिस ने उसके प्रकाशक ग्रंथ महल को भी सील कर दिया। प्रकाशक कोई पूर्व-लेखक था जो अपने उपनाम से लिखता रहा था।

'मेरी व्यथा', जो कठिन साहित्य सदन ने प्रकाशित की थी, उपेंद्र की रचना नहीं थी। लाल 'प्रियदर्शी' की पुस्तक चंदूलाल के यहां छपी; जबकि 'उनकी कहानी' निर्मोही ने नहीं छापी थी।

बताइए किस लेखक की कौन-सी रचना, किस मुद्रक ने छापी और उसे किसने प्रकाशित किया ?

कपिल का गणित-ज्ञान समय-समय पर उसके काफी काम आता था। मित्र मंडली भी उसे प्रायः भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझने का अवसर देती थी।

रविवार को मित्रमंडली निम्नांकित समस्या को हल करने में लगी हुई थी। परंतु उपयुक्त हल न पा कर हताश हो रही थी कि तभी वहां कपिल आ गया। उसने मित्रों के चेहरे पर हताशा के चिन्ह देखे तो उसका कारण पूछा। राजीव ने उसके सामने यह प्रश्न रख दिया।

और कपिल उसे हल करने में जुट गया। गणित-ज्ञान और अंकों में रुचि के आधार पर उसने इस प्रश्न को मात्र १५ मिनट में ही हल कर दिया।

क्या आप भी इसे चुटकियों में हल कर सकते हैं ? तो फिर देर किस बात की, बताइए इसका सही उत्तर क्या है ?

35

बड़ी देर से बस की प्रतीक्षा कर रहे गुरुदयाल ने जैसे ही बस को देखा, वह तत्काल आगे बढ़ कर उसमें सवार हो गया। लेकिन टिकट लेते समय उसे पता चला कि यह बस उसकी नहीं है। अगले स्टाप पर उतर कर उसने देखा कि इस बस की रूट संख्या के अलग-अलग तीनों विषम अंक वही हैं जो उसकी रूट संख्या के थे। परंतु वह हड़बड़ी में इस बस का नम्बर उलटा पढ़ गया था। इस बस का नंबर उसकी बस के रूट नंबर से ३९६ कम था। हां, एक बात और थी—वह यह कि उसकी बस संख्या के तीनों अंकों का योग ११ था।

बताइए गुरुदयाल कौन-से रूट नं० की बस पकड़ना चाहता था ?

36

दुर्घटना की सूचना पाते ही इंस्पेक्टर नरेंद्र सिंह राणा तत्काल घटनास्थल पर पहुंच गया। सड़क पर एक घायल व्यक्ति अचेत अवस्था में पड़ा हुआ था। पूछताछ के दौरान उसे पता चला कि एक काले रंग की कार उस व्यक्ति को लगभग रौंदते हुए चली गई थी और प्रत्यक्षदर्शी उस कार का नम्बर नोट कर पाते इससे पहले ही वह आंखों से ओझल हो गई।

लेकिन तभी इंस्पेक्टर राणा को एक व्यक्ति ने बताया कि वह कार का नम्बर तो नहीं याद रख सका, हां उसके तीनों अंक, सम अंक थे और अलग-अलग थे। यदि इन अंकों का क्रम उलट दिया जाए तो नई संख्या कार के नम्बर से ५९४ कम हो जाएगी। और हां, पहले दो अंकों का अंतर २ नहीं था।

यह अस्पष्ट-सी सूचना पा कर पहले तो इंस्पेक्टर राणा ने कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन थोड़ी ही देर बाद उसने अपने सहायक को कागज पर एक नम्बर लिख कर दिया। और उसी रात्रि वह काली कार पकड़ी गई।

• बताइए कार का नंबर क्या था ?

37
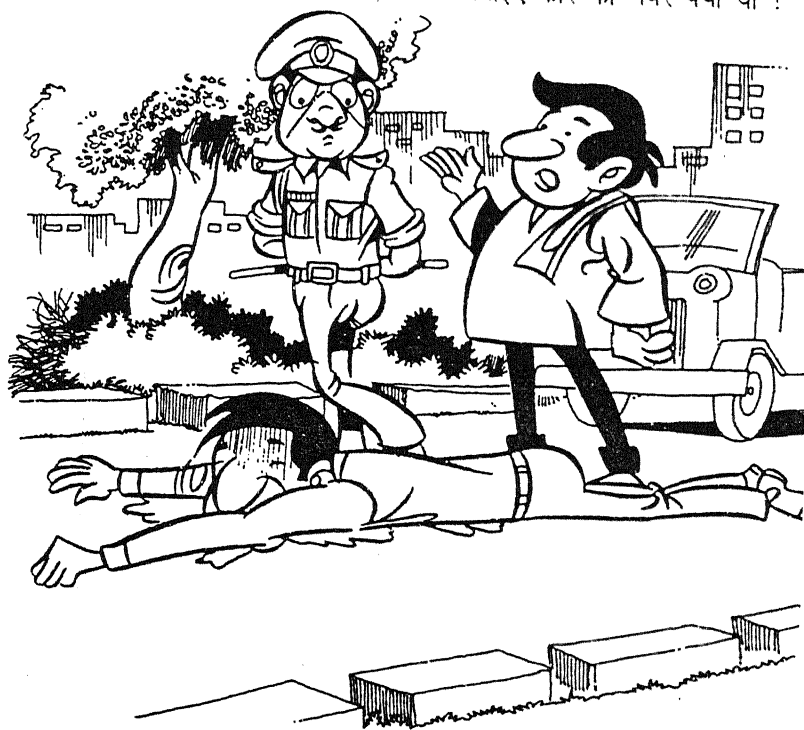
गत दिनों जनता की समस्याओं पर विचार करने के लिए जाम्बिया, ताइवान, भारत, सिंगापुर और सोवियत संघ के प्रमुख वैज्ञानिकों–डा० जे० चुंग, डा० जी० राव, डा० पी० हैनरी, डा० वी० मोहम्मद और डा० सुंग फो ने अपने परचे पढ़े। इनके विषय–जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, खाद्य पदार्थों में मिलावट, ईंधन की बचत और पेट्रोल की खपत से संबंधित थे।

डा० मोहम्मद सभागार में तनिक विलंब से पहुंचे थे। उस समय जाम्बिया के वैज्ञानिक द्वारा जल-प्रदूषण पर पढ़े गए पहले परचे पर चर्चा हो रही थी।

डा० सुंग ने पेट्रोल बचत के बारे में अपने मौलिक विचार रखे थे। ताइवान के वैज्ञानिक का परचा खाद्य पदार्थों में मिलावट पर था जो तीसरे क्रम पर पढ़ा गया।

सोवियत वैज्ञानिक के वायु प्रदूषण पर विचारोपरांत डा० चुंग ने अपना परचा पढ़ा।

भारतीय वैज्ञानिक डा० राव ने सबसे अंत में अपना परचा पढ़ा।

बताइए क्रमानुसार किस देश के वैज्ञानिक ने किस विषय पर अपने परचे पढ़े ?

तीर्थाटन सभा ने उत्तरी भारत के नगरों के धार्मिक स्थलों के दर्शनों हेतु बस का प्रबंध किया था। बस वाला बस किराए और अन्य खर्चों के लिए ६२०० रु० मांग रहा था, जिसमें ६१ यात्री जा सकते थे। जिसे खींच-खांच कर सभा ने ५६०० रु० तय किया। सभा ने अपने खर्च के लिए २० रुपए प्रति यात्री लिए। शेष व्यय सभी यात्रियों में बराबर बांटा जाना था। अंतिम दिन की पूर्व-संध्या तक मात्र ४० सीटें ही भरी गई थीं। अतः यात्रियों को प्रति यात्री टिकट पर काफी खर्च करना पड़ रहा था।

लेकिन बस रवाना होने से ३ घंटे पूर्व कुछ यात्री और आ गए जिससे सभी ४० यात्रियों को जो बचत प्रति यात्री हुई, वह पूरे रुपयों में थी। परंतु यदि कोई व्यक्ति अपनी बचत को १० स्थानों पर बराबर-बराबर बांटे, तो हर हिस्से में पैसे अवश्य होंगे।

बताइए बस में कुल कितने यात्री सवार हुए ?

सुरजीत और गिरधारी लाल सगे भाई हैं। पिछले रविवार वे अलीगढ़ गए थे। वापसी में वे अंतरराज्यीय बस अड्डे पर उतरे।

गिरधारी लाल सदा पैदल चलना ही पसंद करता है। फिर लंबा होने के कारण वह सुरजीत से दो गुनी गति से चलता है। अतः बस से उतरते ही उसने पैदल चलने के लिए सुरजीत को कहा। परंतु सुरजीत तो महा आलसी प्रकृति का व्यक्ति है और हर समय वाहन का प्रयोग करना चाहता है। अतः वह घर के लिए बस पकड़ने के लिए आधा कि० मी० पीछे की ओर चल दिया। स्थानीय बस सेवा के स्टाप तक पहुंचने में उसे पूरे १० मिनट लग गए।
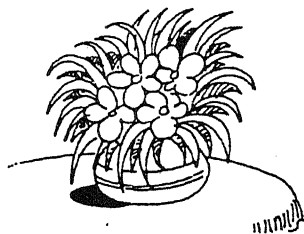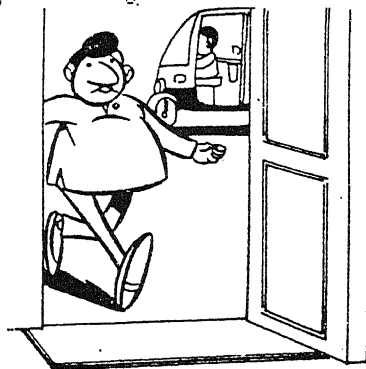
अनेक बसें आईं और चली गईं। परंतु उसके रूट की बस न आई। उकता कर उसने स्कूटर पकड़ा और ठीक आधे घंटे बाद स्टाप से चला। स्कूटर उसी मार्ग से गया जिस मार्ग से सुरजीत आया था। अंतरराज्यीय बस अड्डे से स्कूटर उसी सड़क पर हो गया जिससे हो कर गिरधारी लाल गया था। भीड़भरी सड़क होने के कारण स्कूटर १० मिनट बाद सुरजीत के घर के आगे जा रुका। परंतु यह क्या ? गिरधारी लाल तो उससे भी ५ मिनट पहले घर पहुंच चुका था और भोजन के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

बताइए सुरजीत का स्कूटर किस औसत गति से चला ?
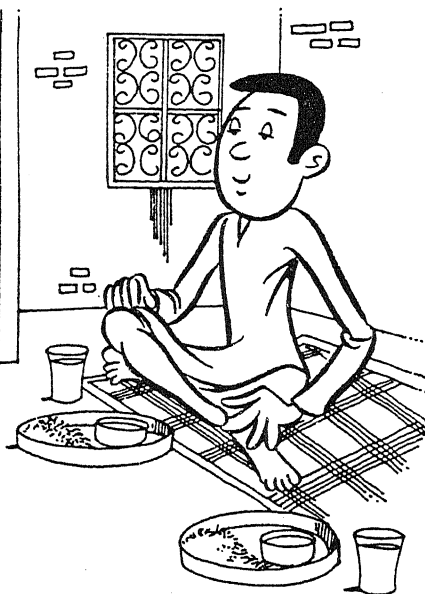
'सिने गोअर्स' क्लब ने पिछले दिनों फिल्म प्रतियोगिता की थी। इसमें 'प्यार की पुकार', 'हमारी मंजिल', 'सीमांत', 'जमाना देखेगा' और 'ज्योति जल उठी' को क्रमशः पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा और पांचवां स्थान मिला था। इन फिल्मों के निर्देशक आनंद सोज, जीवन सरहदी, पवन कुमार, प्रेम जख्मी और सुभाष भाई थे। इनमें कुमार भैरव, जतिन, प्रीतम, रवि और सत्येन्द्र नायक थे तथा करुणा, जबीना, रमणिका, सीमा और सुनयना नायिकाएं थीं।

प्रथम पुरस्कार प्राप्त फिल्म के निर्देशक सोज ने अपनी फिल्म के नए सितारे को जब मंच पर गले से लगाया तब हाल तालियों से गूंज उठा, लेकिन यह सितारा रवि न था।

'जमाना देखेगा' की नायिका जबीना थी, परंतु इसके साथ प्रीतम नहीं था। 'सीमांत' के नायक, नायिका और निर्देशक तीनों के नाम में 'स' अक्षर अवश्य था।

रमणिका सुप्रसिद्ध जुबली स्टार के साथ नायिका थी। वे निर्देशक सरहदी की फिल्म 'ज्योति जल उठी' में नहीं थे।

सुभाष भाई की फिल्म में सीमा ने कभी काम नहीं किया। जबकि जतिन, करुणा की फिल्म को भी दर्शकों ने पसंद किया था।

पवन की फिल्म में प्रीतम था, परंतु डेट्स न मिलने के कारण उसने नायक बदल कर फिल्म दुबारा बनाई थी।

दी गई सूचनाओं के आधार पर बताइए पहले से पांचवें स्थान पर आई इन फिल्मों के निर्देशक, नायक और नायिकाएं कौन थे ?

41
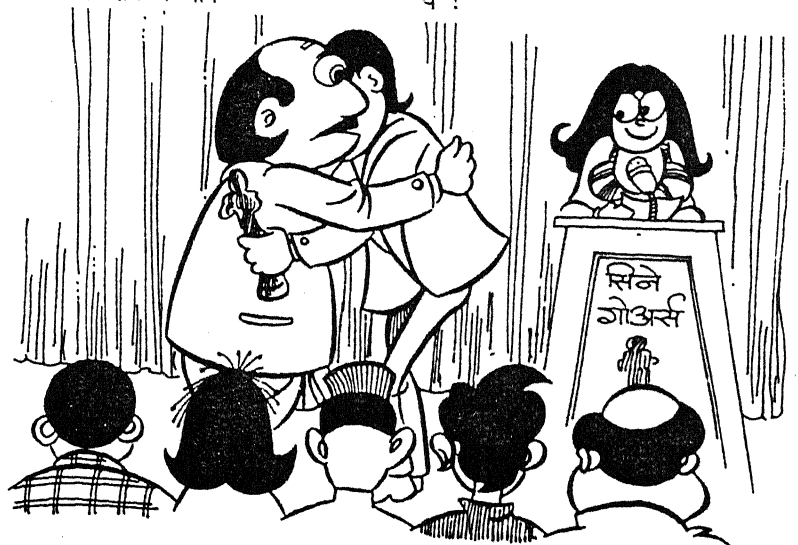
रमेश के पिता प्रोफेसर माधव प्रसाद ने अपनी पढ़ाई और उज्ज्वल भविष्य को दृष्टिगत रख कर ही देर से शादी की थी। प्रोफेसर साहब के सभी मित्रों की शादी २५ वर्ष की आयु तक हो चुकी थी। खैर, शादी के एक वर्ष बाद उनके घर रमेश ने जन्म लिया और उसके दो वर्षों के बाद सोनिया का जन्म हुआ।

आज से ११ वर्ष पूर्व रमेश और सोनिया की आयु अपने माता-पिता की आयु से ठीक आधी थी। आज रमेश और उसकी माता की आयु का योग सोनिया और प्रोफेसर साहब की आयु के योग के बराबर है।

इसके अतिरिक्त एक और आश्चर्यजनक बात यह है कि इन सभी की आयु में कोई भी अंक ऐसा नहीं है जो किसी अन्य की आयु में आया हो।

बताइए चारों की आयु कितनी है ?
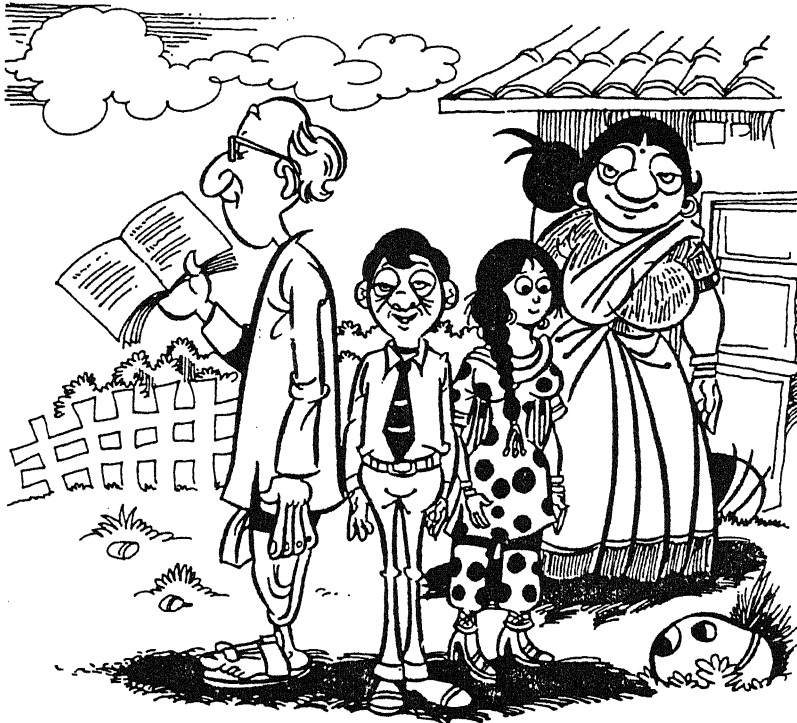
'फास्कर अवार्ड' हेतु अंग्रेजी, जर्मन, डच, फ्रांसीसी और रूसी भाषा की पांच फिल्में आई थीं। इनके नाम थे–'विदिन नाइन आवर्स', 'दि स्प्रिंग डेज', 'ब्लेसिंग्स', 'ऑन दि रिवर बैड' और 'लवली चाइल्ड'। अपराध, दुखांत, प्रेम, संगीतमय ड्रामा और हास्य की इन फिल्मों का निर्देशन जॉन पीटर्स, जेमूर कोली, टॉम ओ-नील, टी. पीयरसन और पी. रोमासोल ने किया था।

दिए गए तथ्यों के आधार पर बताइए कि किस फिल्म का निर्देशन किसने किया, उसका विषय क्या था और वह किस भाषा में बनी थी ?

पी. रोमासोल की दुखांत फिल्म रूसी भाषा में थी। लेकिन यह 'ऑन दि रिवर बैड' नहीं थी। जॉन पीटर्स की 'विदिन नाइन आवर्स' में कोई खास संगीत न था।

अपराध कथा पर आधारित 'ब्लेसिंग्स' को देख कर टी. पीयरसन ने उसकी खूब सराहना की थी।

अंग्रेजी फिल्म संगीत प्रधान ड्रामा थी, जबकि डच फिल्म प्रेमकथा न थी।

टॉम की फिल्म 'दि स्प्रिंग डेज' जर्मन फिल्म थी, जबकि कोली की फिल्म फ्रांसीसी भाषा में थी।

43
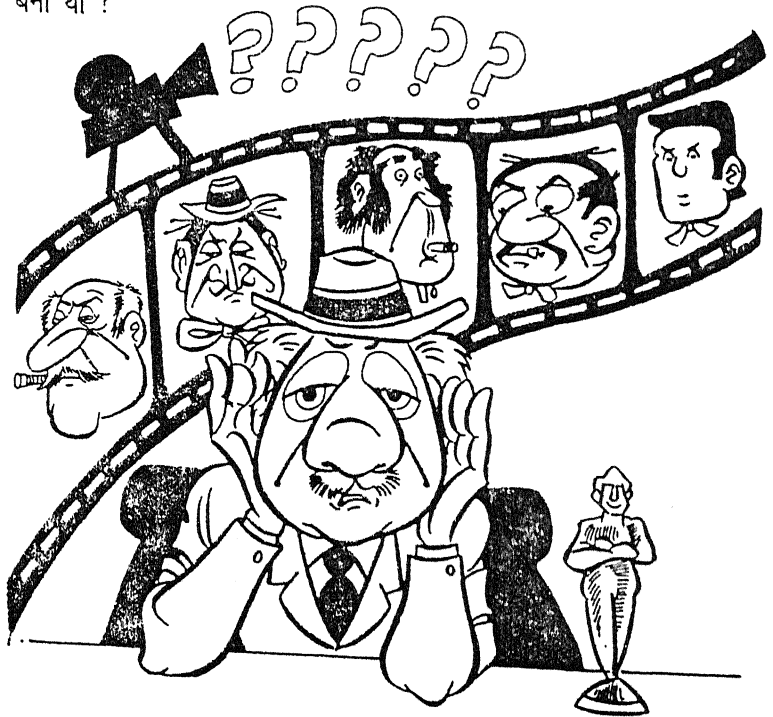
तिलकराज चुघ के स्कूटर का नम्बर बड़ा ही रोचक था। तीन अंकों की यह संख्या पूर्ण वर्ग संख्या थी। इसका दाएं हाथ का एक अंक हटाने पर बची हुई दो अंकों की संख्या भी पूर्ण वर्ग थी। यदि दाएं हाथ की ओर से दो अंक हटाए जाएं तब बचा हुआ अंक भी पूर्ण वर्ग अंक था।

बताइए तिलकराज चुघ के स्कूटर का नंबर क्या था ?

सुप्रसिद्ध रामेश्वर हत्याकांड में राधेश्याम की गवाही थी। उसने बताया कि हत्यारा लाखा उसकी दुकान पर माह के अंतिम शनिवार को आया था। बाद में वह एक सप्ताह बाद शनिवार के दिन उसकी दुकान पर आया।

राधेश्याम की बताई तिथियों के सभी अंकों का योग ११ था और इनमें से कोई भी अंक सम अंक नहीं था।

बताइए राधेश्याम की दुकान पर लाखा कब गया ?

45
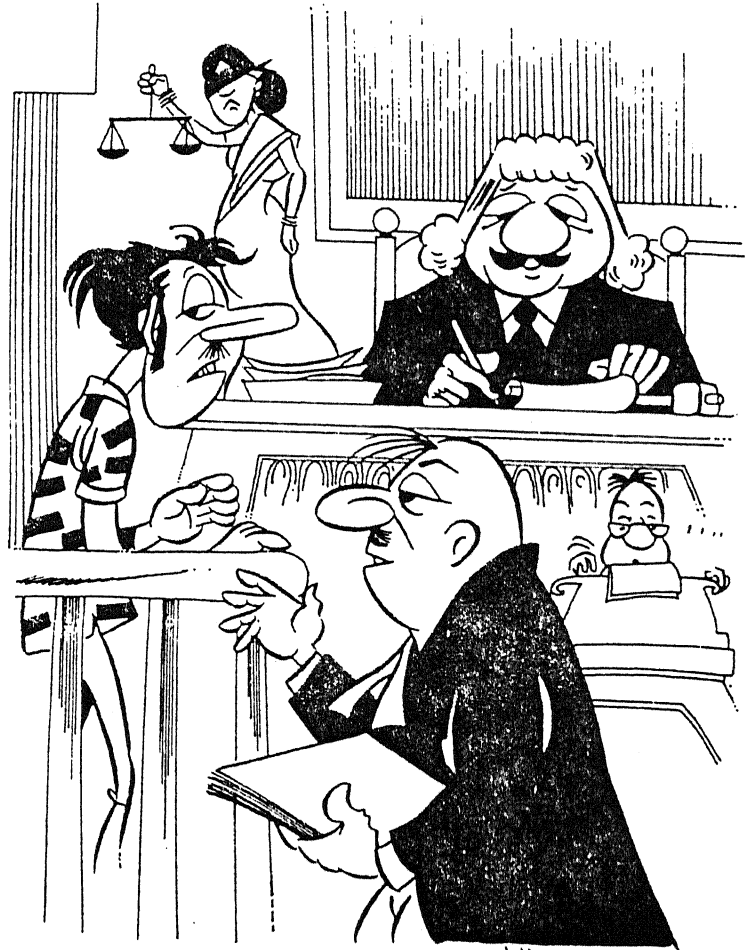
'सत्य इंडस्ट्रीज' के मालिक सत्य प्रकाश ने एक प्रकार से संन्यास ले लिया था। काम के बोझ से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने कम्पनी के सारे शेयर अपने सातों पुत्रों–भगवान दास, जनक राज, सुरेन्द्र प्रताप, अर्जुन प्रसाद, राधिका प्रसाद, जानकी दास और सत्येन्द्र प्रकाश–में इस प्रकार बांट दिए थे कि सबसे छोटे पुत्र सत्येन्द्र प्रकाश को अपने बड़े भाई जानकी दास के शेयरों से आठवां भाग कम शेयर मिले।

इसी प्रकार जानकी दास का हिस्सा राधिका प्रसाद के हिस्से का आठवां भाग कम था। न जाने क्या सोच कर शेयर बांटे गए थे कि सभी भाइयों को इसी प्रकार अपने क्रमानुसार ही हिस्सा मिला।

गत वर्ष प्रत्येक शेयर पर १ रुपए का लाभांश मिलने पर सभी भाइयों की कुल आय आठ अंकों में थी, जिसे उन्होंने अपनी मां सीता देवी को सौंप दिया। उसने इसमें से दो लाख रुपए की राशि 'दुर्गा देवी कन्या महाविद्यालय' को दान कर दी।

शेष बची सात अंकों की राशि अन्य कार्यों में उपयोग की गई। बताइए, प्रत्येक भाई के नाम में कितने शेयर उनके पिता ने हस्तांतरित किए थे ?

46

चौधरी रुद्रप्रताप का आयताकार खेत अगर बड़ा न था, तो छोटा भी न था। हां, इसकी छोटी भुजा अवश्य ही मात्र २६ मीटर लम्बी थी। दोनों बेटों–श्याम प्रताप और विष्णु प्रताप को देने के लिए चौधरी ने अपने खेत को दो भागों में बांट दिया। न जाने क्या सोच कर उसने खेत के दूरस्थ दोनों कोनों के बीच एक विभाजक मेड़ बना दी। दोनों ही समकोण त्रिभुजाकार खेतों की भुजाएं एक समान थीं।

श्याम प्रताप ने हिसाब लगाते समय पाया कि उसके खेत का क्षेत्रफल न केवल २ से बल्कि ३ से भी विभाजित हो सकता है।

बताइए रुद्र प्रताप के पूरे खेत का क्षेत्रफल कितना था ?

47
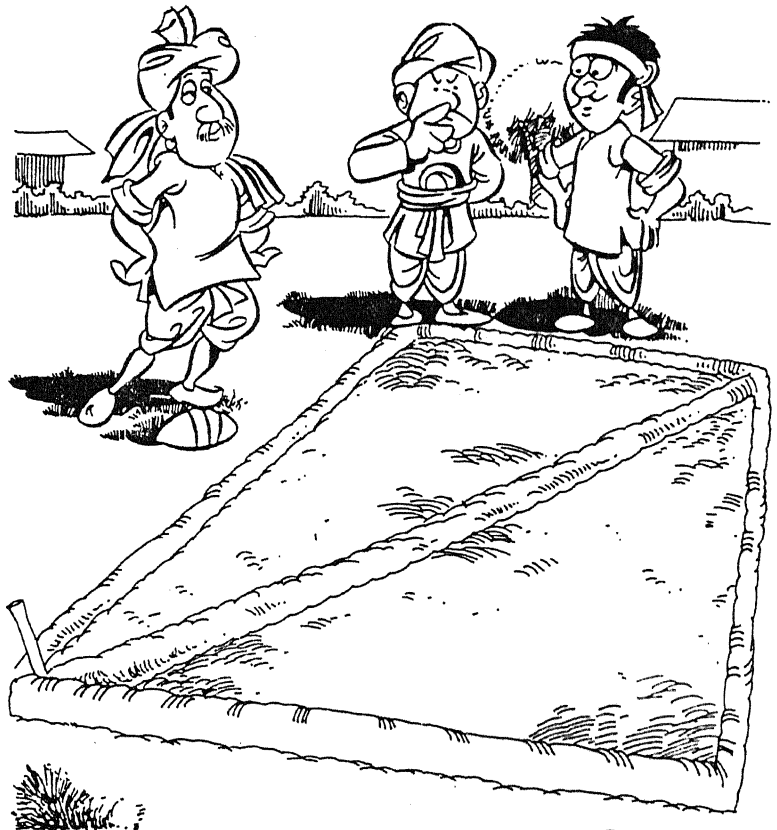
अखिल भारतीय उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के परिणाम आ गए थे। इस बार एक उल्लेखनीय बात यह थी कि पहले पांचों स्थानों पर लड़कियों ने कब्जा कर लिया था।

द्वितीय स्थान पर आई बंबई की लड़की को गणित में सर्वाधिक अंक मिले। सोनाली को हिन्दी में सर्वाधिक अंक मिले।

कोमल को विज्ञान में सर्वाधिक अंक मिले और कुल योग में एक अंक अधिक होने से उसे रजनी से पहला स्थान मिला था। हां, पहला स्थान पाने की उसकी इच्छा पूरी न हो पाई थी।

भोपाल की लड़की को राजनीतिशास्त्र में सर्वाधिक अंकों के साथ पांचवां स्थान मिला।

रमोला कलकत्ता की रहने वाली नहीं थी और न ही उसे अंग्रेजी में सर्वाधिक अंक ही मिले थे। उसके कुल अंक ईटानगर की लीना सिंह से कम थे। दिल्ली की लड़की तीसरे स्थान पर नहीं आई थी।

बताइए, किस नगर की किस लड़की को कौन-सा स्थान मिला और उसने किस विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए ?

48

'विशालदूत' वायुसेवा के संचालकों ने पर्यटकों को विशेष राहत देने के लिए इस वर्ष 'दिल्ली-आगरा' के बीच एक नई विमान सेवा प्रारंभ की। इसका किराया भी मात्र १२० रुपए प्रति यात्री रखा गया।

सेवा के आरंभिक तीन माह (जनवरी-मार्च) में ही उन्हें यात्री-किराए के रूप में २० लाख से अधिक की आय हुई। बाद के तीन माह (अप्रैल-जून) में आय में अप्रत्याशित वृद्धि हुई और विशालदूत के प्रबंध निदेशक अरुण प्रकाश को विश्वास है कि इस वर्ष जुलाई-सितंबर की अवधि में वह १ करोड़ की आय का लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे।

जनवरी-मार्च और अप्रैल-जून तिमाहियों में प्राप्त होने वाली राशियों की संख्या में एक विचित्र साम्यता यह थी कि दोनों ही संख्याओं के सभी अंकों का योग इक्कीस-इक्कीस ही था।

इसके अतिरिक्त उनके बाएं से दूसरे, तीसरे और चौथे अंक न केवल आरोही क्रम में थे, बल्कि यह तीन अंकों से बनी संख्या ९ से पूरी तरह विभाजित भी हो जाती थी। इसके अतिरिक्त एक उल्लेखनीय बात यह भी थी कि किसी संख्या में कोई भी अंक दुबारा नहीं आया था।

क्या आप बता सकते हैं कि 'विशालदूत' को अप्रैल-जून में कितनी आय हुई ?

49

डबल लाइन के स्टेशन शिवपुरी से सोमवार को ज्यों ही पार्सल गाड़ी गोकुलपुरी के लिए चली, त्यों ही 'सुपर फास्ट एक्सप्रेस' वहां आ पहुंची। अब क्या हो ? 'सुपर फास्ट' को वहां रोका नहीं जा सकता।

अतः स्टेशन मास्टर ने अधिकारियों से अनुमति ले कर गोकुलपुरी से बात की और दूसरी लाइन पर 'सुपर फास्ट' को रवाना कर दिया।

३६० मीटर लंबी होने के बावजूद 'सुपर फास्ट' की गति गजब की थी। दो इंजन वाली इस गाड़ी ने तेज गति से चलते हुए शीघ्र ही अपने से लंबी पार्सल गाड़ी को जा पकड़ा।

दोनों गाड़ियां अपनी निश्चित गति से दौड़ रही थीं। और मात्र एक मिनट में ही सुपर फास्ट ने पार्सल गाड़ी को पार कर लिया।

अगले दिन तो बड़ी ही रोचक बात हुई। यही 'सुपर फास्ट' जब गोकुलपुरी से शिवपुरी जा रही थी तब उसने गोकुलपुरी आ रही इस पार्सल गाड़ी को मात्र आधे मिनट में ही पार कर लिया था। तब उसकी गति अवश्य ही सोमवार की गति से ३ कि. मी. प्रति घंटा अधिक थी।

इस दिन भी इन दोनों ही गाड़ियों की लंबाइयां पहले जैसी ही थीं। एक बात और उल्लेखनीय थी कि पार्सल गाड़ी की लंबाई १००० मीटर से काफी कम थी। हां, उसकी गति १० का गुणक थी।

बताइए पार्सल गाड़ी की लंबाई कितनी थी ?
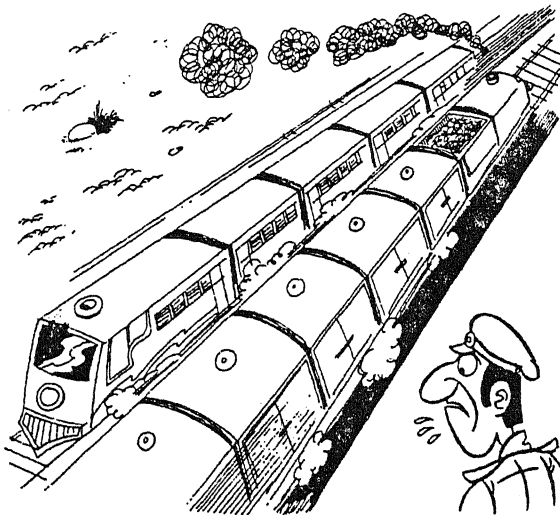
चौधरी दीनानाथ के पुत्र रणजीत की शादी थी। रणजीत के चाचा चौधरी बनवारी लाल भी सपरिवार आ रहे थे। उन्हें लाने की जिम्मेवारी दीनानाथ ने अपने मझले पुत्र सीताराम को सौंपी थी।

सीताराम ने चाचा की बस का समय अपनी डायरी में नोट कर लिया। वह डायरी में समय को बड़े विचित्र ढंग से नोट करता था। वह १-२० (अर्थात् १ बज कर २० मिनट) को लिखते समय बीच से डैश हटा देता था और १२० ही लिखता था।

चाचा जी को लिवाने के लिए वह समय से १० मिनट पहले ही पहुंच गया था। लेकिन बस शायद लेट थी, अतः सही समय पर नहीं आई। वह सामने के बुकस्टाल पर खड़ा हो गया। वहां लगे शीशे में अड्डा भी दिखाई दे रहा था और उसमें एक दीवार घड़ी का बिम्ब भी दिख रहा था जिसकी सूइयां धीरे-धीरे सरकती जा रही थीं।

तभी उसने शीशे में देखा कि बस आ गई है। उसने शीशे से ही घड़ी का समय देखा। फिर मुड़ कर घड़ी को फिर देखा। वास्तव में जो समय था और शीशे में जो समय था, उसे सीताराम के ढंग से लिखने पर बनी दोनों संख्याएं पूर्ण वर्ग संख्याएं थीं। हां, वास्तविक समय की संख्या दूसरी संख्या से बड़ी थी।

बताइए, बस वहां पर कितने बजे पहुंची ?
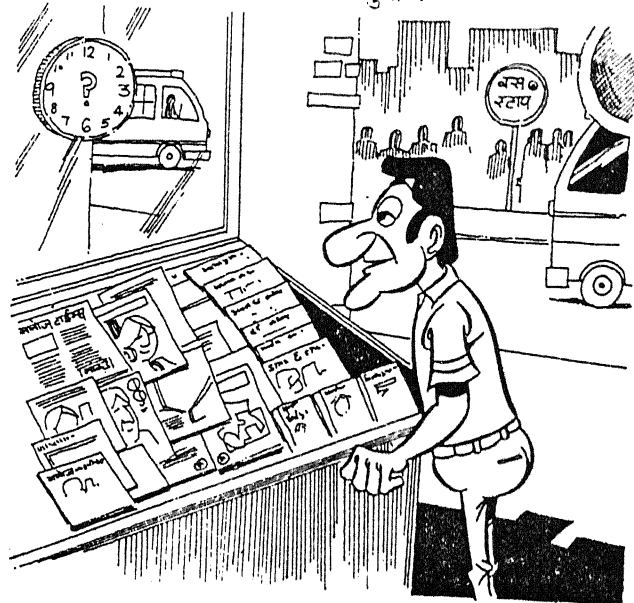
पुस्तक प्रेमी सूरज प्रकाश ने हाल ही में 'सरल अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश' खरीदा था। पांच खंडों के इस शब्दकोश के प्रत्येक खंड में चार से लेकर पांच सौ पृष्ठ थे।

कुछ दिनों बाद उसके मित्र विमल ने भी 'आदर्श हिंदी-अंग्रेजी कोश' खरीदा। लेकिन तीन खंडों के इस शब्दक़ोश में सूरज प्रकाश के शब्दकोश से ८४० पृष्ठ कम थे।

हां, एक उल्लेखनीय बात यह थी कि शब्दकोशों के कुल पृष्ठों की दोनों ही संख्याएं पूर्ण वर्ग संख्याएं थीं।

बताइए, दोनों शब्दकोशों में कुल कितने-कितने पृष्ठ हैं ?
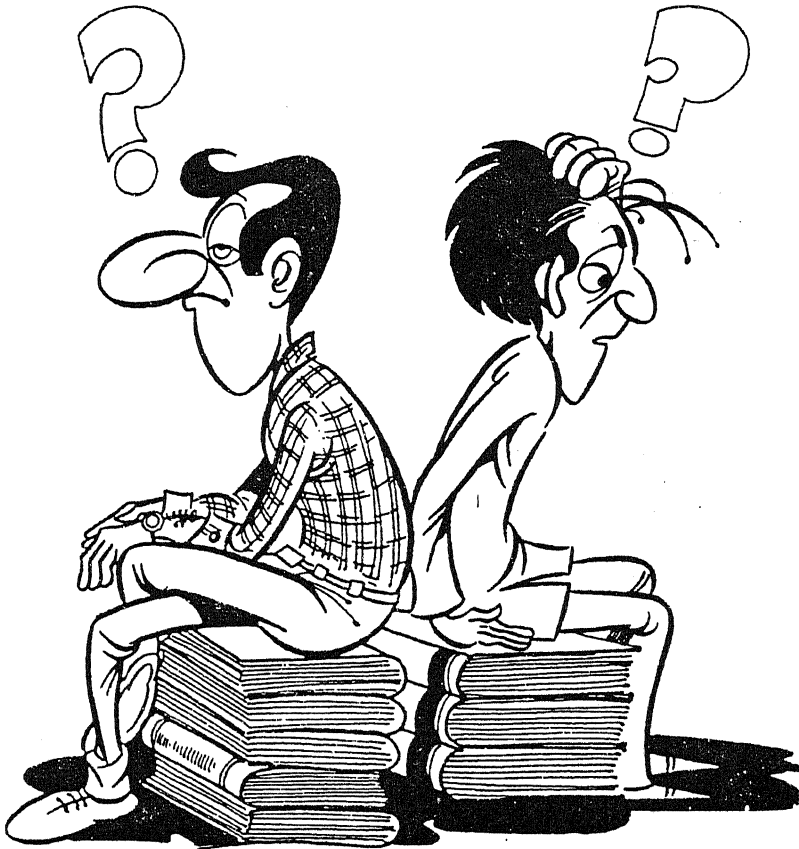
रामेंद्र ने अपने मित्र प्रदीप का फोन नंबर अपनी डायरी में कहीं लिखा हुआ था। परन्तु अब आवश्यकता पड़ने पर नंबर तो क्या, पूरी डायरी ही नहीं मिल रही थी।

उसे परेशान देख कर सुरेंद्र ने परेशानी का कारण पूछा। रामेंद्र ने उसे कारण बताया।

सुरेंद्र के प्रश्नों के उत्तर में रामेंद्र ने उसे बताया, 'प्रदीप का फोन नंबर छह अंकों का है।'

'फोन नंबर के छहों अंक अलग-अलग हैं।'

'मध्य के दो अंकों से बनी संख्या अंतिम दो अंकों के योग से एक अधिक है।'

'फोन नंबर छह अंकों की न्यूनतम सम्भावित संख्या है।'

इन सूचनाओं को पा कर सुरेंद्र ने कुछ ही मिनटों में उसे प्रदीप का फोन नंबर कागज पर लिख दिया। उस नंबर पर तत्काल फोन मिलाने से रामेंद्र की प्रदीप से बात भी हो गई।

क्या आप बता सकते हैं कि प्रदीप का फोन नंबर क्या है ?

53
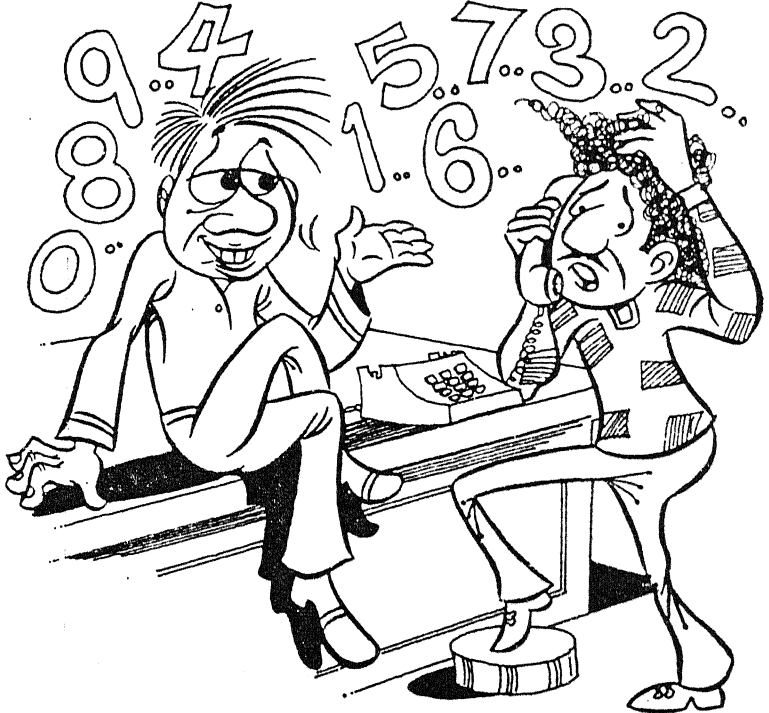
वीरमपुर में सात भाई रहते थे। सभी भाइयों की एकता देखते ही बनती थी। कपड़े के पुश्तैनी व्यापार में सब भाइयों का बराबर का हिस्सा था। प्रत्येक माह की आय का आठवां भाग दानखाते के लिए निकालने के बाद शेष राशि सभी भाइयों में बांट दी जाती थी।

उस बार जब भाइयों में आय की राशि बांटी जा रही थी तब सोम प्रकाश ने शीतल प्रकाश से पूछा, 'क्यों शीतल, दानखाते की राशि अलग निकाल दी है ?'

'जी हां'

'तो अब कितने रुपए बचे हैं बांटने के लिए ?'

'जी अब केवल १०० और ५ के नोट ही बचे हैं।'

'मैं नोटों की बात नहीं कर रहा हूं। मैं यह पूछ रहा हूं कि आपस में बांटने के लिए कितने रुपए बचे हैं ?'

'जी। इन बचे हुए रुपयों की संख्या पांच अंकों की है। इसके अलग-अलग पांचों अंकों का योग २५ है।'

'अरे भाई पहेलियां मत बुझाओ ?'

'भाई साहब संख्या आप ही निकालो। हां, यह संख्या इन अंकों से बनने वाली संभावित बड़ी संख्या है और नोट बांटने के बाद सबको पांच का केवल एक-एक नोट ही मिलेगा। अब तो आप जान गए न।' कह कर शीतल प्रकाश शरारतपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

क्या आप सोम प्रकाश की समस्या हल कर सकते हैं ? तो बताइए प्रत्येक भाई को कितने रुपए मिले और उनको उस माह कुल कितनी आय हुई ?

54

'दीनबंधु लाइब्रेरी' के लिए चलाए गए धन-संग्रह अभियान में मोहल्ले के सभी ३५ बच्चों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। इसके लिए उन्होंने कूपन छपवाए थे। प्रत्येक कूपन का मूल्य ५ रुपए रखा गया था।

शाम को हिसाब लगाने पर लाइब्रेरी के संचालक देवीदयालजी ने पाया कि सभी बच्चों ने कूपन बेच कर जो धनराशि एकत्रित की है वह चार अंकों की संख्या है।

अभी अलग-अलग अंकों वाली इस संख्या के अंकों का क्रम उलट देने पर प्राप्त होने वाली नई संख्या राशि की संख्या से मात्र ६०६ ही कम थी।

इसके अतिरिक्त प्रत्येक बच्चे द्वारा एकत्रित की गई औसत राशि एक अविभाज्य संख्या है।

बताइए 'दीनबंधु लाइब्रेरी' के लिए उस दिन कितने रुपए एकत्रित हुए ?

55

'ज्ञान कुंज' कॉलेज, शिक्षा के अतिरिक्त खेल के मैदान में भी प्रथम स्थान पर था। गत वर्ष क्रिकेट, बास्केटबॉल, फुटबॉल, वालीबॉल और हॉकी की ट्राफियां इसी कॉलेज को मिली थीं। इन खेलों में कॉलेज की टीमों का नेतृत्व अजय कुमार, कृष्ण चन्द्र, प्रेममोहन, मनोहर आजाद और राजीव पांडे ने किया था। इन्हें कोचिंग देने के लिए 'लांगर्स क्लब', 'दी चिक्स ग्रुप', 'राइजिंग सन', 'रैबिट्स' और 'गोल्डन बॉक्स' के विख्यात कोच–गुरवचन सिंह, दर्शन सिंह बेदी, राजेन्द्र भसीन, सुरेन्द्र पाल और हरेन्द्रनाथ की सेवाएं ली गई थीं। बाद में ये सभी खिलाड़ी इस वर्ष इन्हीं क्लबों की ओर से ही खेले।

दी गई सूचनाओं के आधार पर बताइए कि कौन से खिलाड़ी को किसने कोचिंग दी ? उसने कौन-सा खेल, किस क्लब की ओर से खेला ?

'राइजिंग सन' के खिलाड़ी के नाम में 'ज' अक्षर कहीं नहीं है और वह खिलाड़ी कभी क्रिकेट नहीं खेला।

कृष्ण चन्द्र के कोच हरेन्द्र ने ही उसे 'दि चिक्स' में सम्मिलित किया था। परंतु वह हॉकी नहीं खेलता।

अजय, फुटबॉल खेलता है जबकि दर्शन सिंह वालीबॉल का कोच है।

लंबा होने के कारण मनोहर बास्केटबॉल खेलता था। लेकिन वह राजेन्द्र भसीन के 'लांगर्स क्लब' की ओर से नहीं खेला।

'रैबिट्स' के खिलाड़ी के नाम में 'म' अक्षर नहीं आता जबकि उसका कोच गुरवचन ही है।
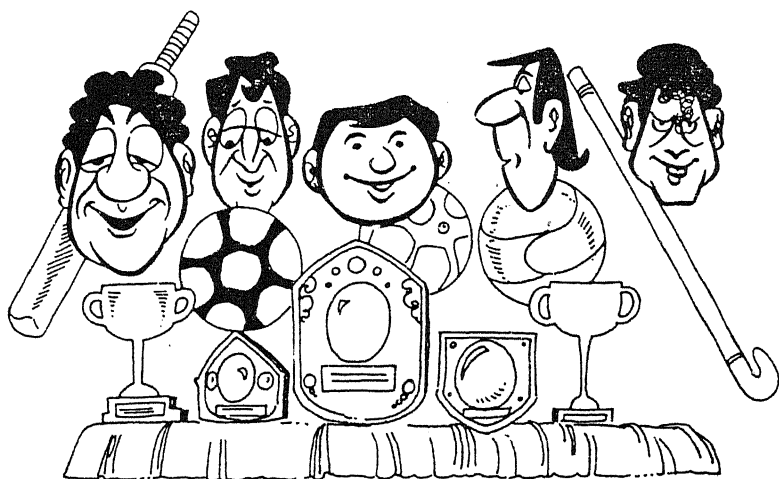
शहर के अंतिम छोर पर बने ताप उत्पादन केन्द्र के प्रशीतन टावर की विशेषता उसकी ऊंचाई न होकर उसके ऊपर बना रेस्तरां था। इस रेस्तरां में लगे घूमने वाले प्लेटफार्म पर बैठकर दर्शक सारे शहर का विहंगम दृश्य देखकर आनंद लेते थे। परंतु भोजन की दरें अधिक होने के कारण वहां के खाने का आनंद बहुत ही कम लोग ले पाते थे।

इस रेस्तरां की छत फर्श से तीन मीटर ऊपर है जिसके ऊपर लगा था लाल बत्ती चमकाने वाला मोटा खंबा जिसकी ऊंचाई तीन मीटर थी। यह लाल बत्ती रात के समय टिमटिमाती रहती थी ताकि हवाई अड्डे पर उतरने वाले विमान सावधान रह सकें।

और उस दिन जब गले में कैमरा लटकाकर सत्येन्द्रनाथ वहां पहुंचा तो उस अलौकिक दृश्य को देखता ही रह गया। फिर उत्सुकतावश पूछ ही बैठा, "कितनी ऊंचाई पर है यह रेस्तरां ?"

उसके पूछने पर वहां के प्रभारी अधिकारी आशीष शर्मा ने बताया, "महोदय यह तो मुझे पता नहीं। पर हां यह बता सकता हूं कि इस रेस्तरां के ऊपर जो खंबा है उसकी चोटी की छाया दो बजे सामने वाले मैदान के इस ओर के छोर पर पड़ती है और ५ मिनट बाद ही यह छाया मैदान के दूसरे छोर पर पड़ती है। यह मैदान १८ मीटर चौड़ा है। आधे घंटे बाद खंबे की चोटी की छाया वहां से भी १७ मीटर आगे बस स्टैंड की पटरी पर पड़ती है।"

सत्येन्द्र को असमंजस में पड़ा देख आशीष फिर बोला, "और हां साहब, मैदान के उस ओर से चोटी की सीधी दूरी अगर इस ओर वाले कोने की सीधी दूरी से १२ मीटर अधिक है तो स्टैंड की पटरी से सीधी दूरी से १३ मीटर कम भी है।

लीजिए सत्येन्द्र तो पड़ गया हिसाब-किताब के चक्कर में। चलिए आप ही बताइए कि रेस्तरां कितनी ऊंचाई पर बना है ?

57
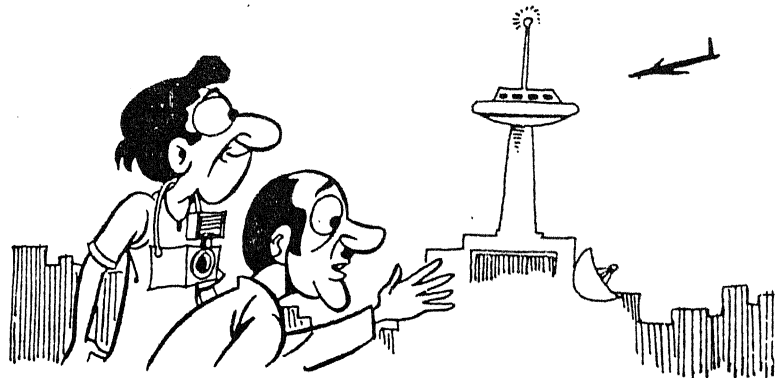
दीपक राय, प्रवीण कुमार, राजेन्द्र सिंह, विद्या प्रकाश और सुरेन्द्र पुरी पांच मित्र थे जो राजकीय महाविद्यालय, रोहतक में पढ़ते थे। इनमें से स्थानीय मित्र को छोड़कर शेष चार मित्र ग्वालियर, चंडीगढ़, जयपुर और दिल्ली से वहां पढ़ने के लिए आए थे। अपनी पढाई पूरी करके ये मित्र अपने मूल शहर वापस चले गए। बाद में इनमें से एक मित्र अध्यापक बना। अन्य मित्रों में से एक बैंक में तथा दूसरा राज्य सरकार के मंत्रालय में भर्ती हो गया। शेष दो मित्रों को नौसेना और वायुसेना में स्थान मिला। अब ये कलकत्ता, चंडीगढ़, जयपुर, दिल्ली और भोपाल में रहते हैं।

आजीविका उपार्जन हेतु सभी मित्रों को अपना शहर छोड़ना पड़ा। दी गई सूचनाओं के आधार पर बताइए कि किस मित्र को कहां नौकरी मिली, वह किस शहर में गया और कहां का मूल निवासी था ?

शिक्षा पूरी करने के बाद सभी को बस अड्डे से विदा करने के बाद राजेन्द्र बड़ी देर तक शून्य में निहारता हुआ न जाने क्या सोचता रहा था। हां, सुरेन्द्र के शहर में जब वह अध्यापक बन कर पहुंचा तब उसे पता चला कि सुरेन्द्र दिल्ली के एक बैंक में कार्य कर रहा है।

चंडीगढ़ में वायुसेना में कार्यरत दीपक की ग्वालियर के विद्या प्रकाश से विशेष रूप से गहरी दोस्ती थी।

विद्या प्रकाश को राज्य सरकार के मंत्रालय में नौकरी मिली थी, परंतु वह कभी कलकत्ता नहीं गया था।
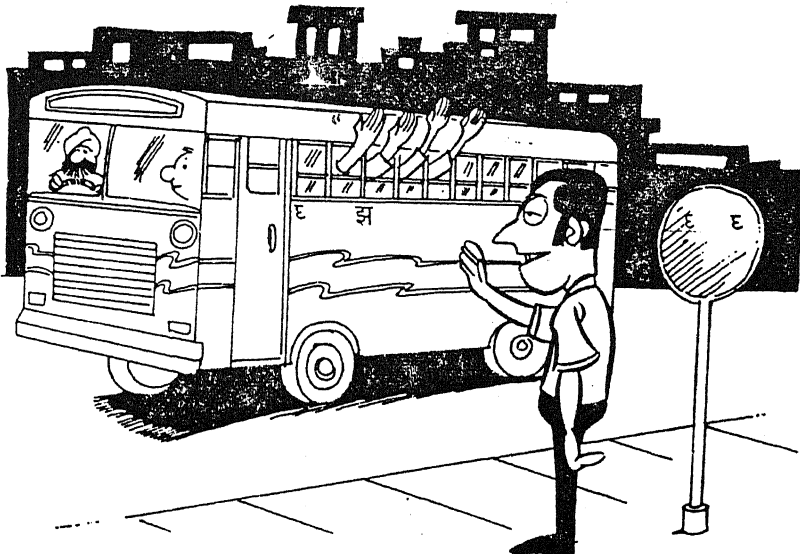
नागर बंधुओं की कव्वाली बड़ी ही लोकप्रिय थी। किसी भी कार्यक्रम में उन्हें बुलाना बड़े ही उत्सव की बात थी। पिछले दिनों दूरदर्शन पर दिखाए गए उनके दो कार्यक्रमों के लिए उन्हें दूरदर्शन से दो चैक मिले।

पहले चैक की राशि के अंक आरोही क्रम के चार निरंतर अंक थे।

दूसरे चैक की राशि पहले चैक की राशि से आधी थी। इस चैक की राशि को ६ से भाग करने पर कुछ शेष न बचता था।

बताइए, नागर बंधुओं को मिले चैकों की राशियां कितनी थीं ?
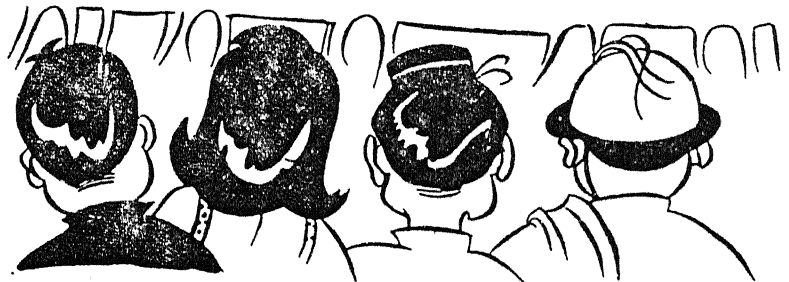
प्रेम चन्द्र ने एक साथ दो प्लाट खरीदे थे। बड़ा प्लाट आयताकार था जो छोटे वर्गाकार प्लाट से ड्योढ़ा था। चूंकि खाली प्लाटों पर असामाजिक तत्व कई बार कब्जा कर लेते हैं, इसलिए प्रेम चन्द्र ने उन पर चारदीवारी बनवा दी।

पैमाइश के दौरान उसे पता चला था कि आयताकार प्लाट की चारदीवारी की कुल लंबाई १५० मीटर है। वर्गाकार प्लाट की चारदीवारी की कुल लंबाई तो मुझे पता नहीं, परंतु वह भी १०० मीटर से कम नहीं है।

बताइए दोनों प्लाटों का क्षेत्रफल कितना है ? हां, एक बात और बता दूं कि दोनों ही प्लाटों की लंबाई-चौड़ाई पूरे मीटरों में है।
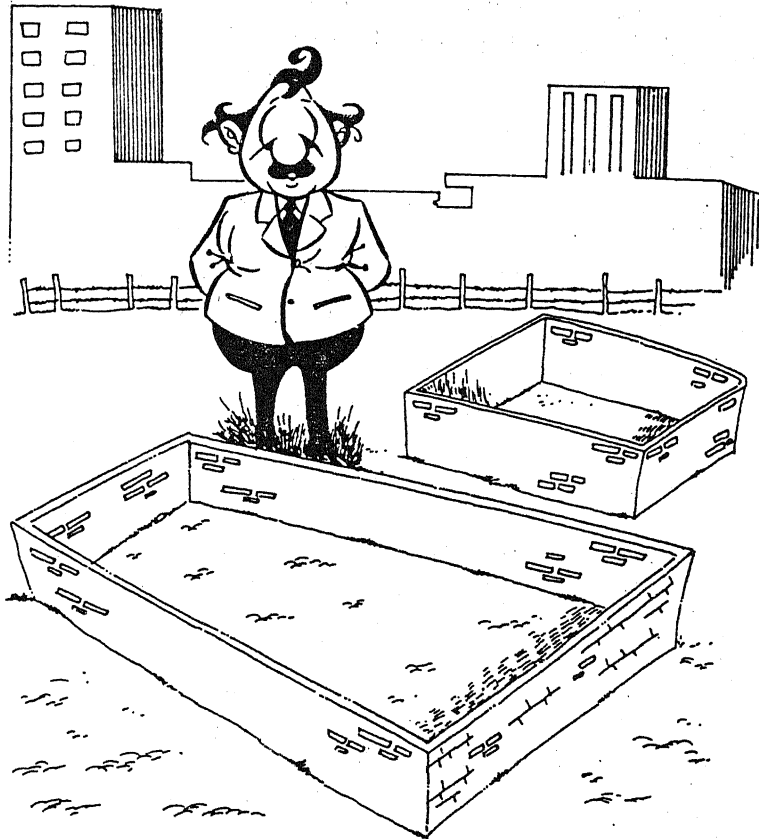
खैरपुर गांव के चार मित्रों अरुण कुमार, दर्शन सिंह, रामेश्वर प्रसाद और विजय प्रताप ने फलों के बागों का ठेका लिया। चारों मित्रों ने जिन बागों के ठेके लिए थे, उनके आकार थे–५ एकड़, ६ एकड़, ७ एकड़ और ८ एकड़।

चारों ही बागों में अलग-अलग फल थे। आम के बाग से प्रति एकड़ ६,००० दर्जन आम उतरे थे। केले की फसल ८,००० दर्जन प्रति एकड़ थी। चीकू की फसल अच्छी होने के कारण प्रति एकड़ ९,००० दर्जन चीकू प्राप्त हुए। हां, संतरा अवश्य कुछ कम हुआ परन्तु यह भी प्रति एकड़ ५,००० दर्जन तोड़ा गया था।

दर्शन सिंह ने ठेका लेते समय यह ध्यान अवश्य रखा था कि बाग में चीकू न हों। चूंकि चीकू शीघ्र खराब हो जाते हैं, इसलिए वह इन्हें पसन्द नहीं करता था।

पूरी फसल उतरने के बाद पाया गया कि सभी मित्रों ने कुल एक लाख अस्सी हजार दर्जन फल प्राप्त किए हैं।

बताइए प्रत्येक मित्र ने किस आकार का बाग लिया और उसमें से उसे कौन-सा फल मिला और कितना ?

61

अरुण बड़ी व्यग्रता से कार की प्रतीक्षा कर रहा था। परंतु उसकी कार नहीं आई। वह ब्रीफकेस थामे टहलता रहा। चूंकि ब्रीफकेस पूरी तरह से नोटों से भरा हुआ था, इसलिए वह बड़ा ही चिंतित-सा लग रहा था।

तभी एक काली कार सामने से आ कर ठीक अरुण के पास आ कर रुकी। इससे पहले कि वह संभलता, उसमें से चार गुंडे उतरे और उन्होंने चाकू दिखा कर उससे ब्रीफकेस छीन लिया तथा तत्काल कार में बैठ कर रवाना हो गए।

कुछ देर बाद एक कार और आई। अरुण को इसी की प्रतीक्षा थी। उसमें बैठ कर अरुण सीधा थाने पहुंचा। वहां उसने रिपोर्ट लिखवाई। लेकिन कार का नंबर लिखवाने में उससे एक गलती हो गई। नंबर लिखवाते समय उसने कार के नंबर को उल्टा (मिसाल के लिए १२३४ को ४३२१) लिखवा दिया था। उसने जो नंबर लिखवाया था, वह कार के वास्तविक नंबर से ६७१४ कम था।

क्या आप बता सकते हैं कि उस काली कार का वास्तविक नंबर क्या था।

ठहरिए, आपको एक बात और बता दूं। वह यह कि कार का नंबर दो से नहीं, बल्कि तीन से पूरा विभाजित हो जाता था।

62

राम सुलभ 'स्नेही' जी की कविता जितनी सुंदर होती थी, उतने ही सुंदर उनके हस्ताक्षर थे। हस्ताक्षर के नीचे वह बड़े विचित्र ढंग से तिथि लिखते थे।

२६ सितंबर, १९८८ की बात है। उस दिन ललित ने जब अपनी 'हस्ताक्षर पुस्तिका' (आटोग्राफ बुक) में उनके हस्ताक्षर करवाए, तब 'स्नेही' जी ने नीचे २६०९८८ भी लिख दिया। ललित ने पुस्तिका जेब में डाल ली।

ललित उनके बारे में और भी बहुत कुछ जानना चाहता था। पूछने पर उसे पता चला कि 'स्नेही' जी का जन्म भोपाल में हुआ था। उनके पिताजी सन् १९३६ में पहली बार भोपाल आए थे। यहां आ कर उन्हें नौकरी मिल गई तो वे यहीं बस गए। बाद में शादी हुई और कुछ समय बाद 'स्नेही' जी का जन्म हुआ।

जन्म-तिथि पूछने पर 'स्नेही' जी ने उसी ढंग से तिथि लिख दी। छह अंकों की इस संख्या में सभी अंक अलग-अलग थे। यह संख्या अंतिम तीन अंकों की संख्या का २००१ गुना थी।

बताइए 'स्नेही' जी का जन्म कब हुआ?

63
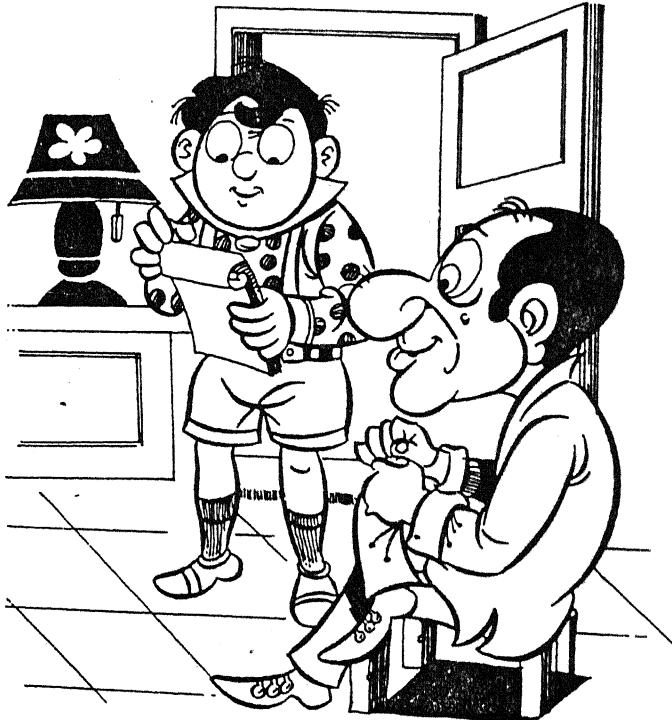
महादेव बहुत खुश था। फरवरी माह की चार तारीख को ही उसके तीनों बेटों का जन्मदिन होता है।

आज भी वह तीनों बेटों का जन्मदिन धूमधाम से मना रहा था। बड़ा लड़का राम उसके व्यवसाय में हाथ बंटा रहा था। मंझला श्याम डाक्टर था और घनश्याम ने हाल ही में चार्टर्ड एकाउंटेंट की डिग्री प्राप्त की थी।

'क्यों भाई अब कितने साल के हो गए हैं तीनों ?' महादेव से उसके मित्र गिरधारी लाल ने पूछा।

'भाई यह तो ठीक-ठीक याद नहीं। हां, आज से १२ वर्ष पूर्व तीनों की कुल आयु वर्तमान आयु से मात्र आधी थी।' कह कर महादेव मुस्कराया, 'और हां, दो वर्ष पूर्व राम की आयु घनश्याम की आयु से ड्योढ़ी थी।'

और गिरधारी लाल सोच रहा है। क्या आप उसकी सहायता कर सकते हैं ?

तो फिर देर किस बात की। बताइए, तीनों की वर्तमान आयु कितनी-कितनी है?

'पुलिस मैडल' से पुरस्कृत किए गए पुलिस अधिकारी–ग्रेशम डियास, मृत्युंजय सिन्हा, रणजीत पाल, स्वतंत्र प्रकाश और विजय सिंह आज बड़े प्रसन्न थे। और प्रसन्न भी क्यों न होते, इन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे कुख्यात अपराधियों–अमरलाल, डिकोस्टा, प्रेमेन्द्र, रतन और हमीद को इनके शहरों में पकड़ा था। कोचीन, गया, पहाड़पुर, वापी और श्रीनगर में पकड़े गए ये अपराधी ड्रग्स, नकली नोट, फाइल की चोरी, मूर्ति चोरी और स्मगलिंग जैसी गतिविधियों में संलिप्त थे।

स्वतंत्र प्रकाश ने जिसे पकड़ा, वह स्मगलर नहीं था। मूर्ति चोर पहाड़पुर में पकड़ा गया।

ग्रेशम कभी श्रीनगर नहीं गया था और न ही उसने हमीद को गिरफ्तार किया था।

सिन्हा द्वारा फाइल की चोरी के आरोप में पकड़ा डिकोस्टा कभी गया नहीं गया था।

वापी में प्रेमेंद्र को जिस इंस्पेक्टर ने पकड़ा था, उसके नाम में 'व' था।

ड्रग्स एजेंट रतन श्रीनगर या गया में कभी नहीं गया था। न ही उसे ग्रेशम ने पकड़ा था।

रणजीत ने नकली नोट छापने वाले को रंगेहाथों पकड़ा था।

बताइए, किस पुलिस अधिकारी ने किस अपराधी को कौन-सी आपराधिक गतिविधि में संलिप्त होने पर कहां पकड़ा था ?

खजाने की खोज में निकले दल के नेता रवीन्द्र के हाथ में विचित्र-सा नक्शा देख कर सभी सदस्य उसे देखने लगे। खंडहरों में लगे निशानों और अंकों का साम्य अवश्य ही नक्शे के साथ था। परन्तु इसमें अनेक खानों में लिखे अंकों के अतिरिक्त कई खाने खाली थे।

'इन खाली खानों में लिखी संख्याएं यदि पता लग जाएं तो शायद खजाने का पता लगाने में हमें आसानी हो जाए।' दल के नेता रवीन्द्र ने कहा।

'अरे, यह संख्याओं का खेल भी बड़ा विचित्र है। मेरे पल्ले तो कुछ भी नहीं पड़ रहा।' सत्येन्द्र बोला।

तभी जगन ने उसके हाथ से नक्शा छीना और कुछ सोचते हुए बोला, 'भैया, ये खाली खाने तो मैं भर दूंगा, परन्तु मुझे जरा एकान्त चाहिए।'

फिर रवीन्द्र से पैन ले कर वह जुट गया खाली खानों की संख्याओं को खोजने में। और लगभग एक घंटे की माथापच्ची के बाद उसने खाली खानों की संख्याएं खोज ली थीं।

जगन ने जो संख्याएं खोजी थीं, बताइए उनका योग कितना है ?
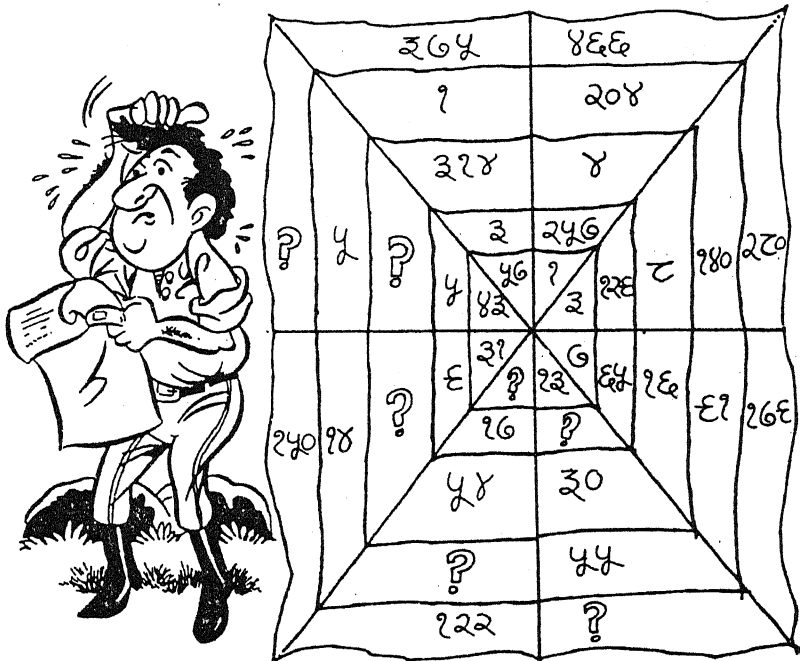
राज्य परिवहन निगम का लेखा तैयार करते समय लेखाकार रूपकिशोर ने देखा कि निगम के निर्माणाधीन भवन में अब तक दो करोड़ चालीस लाख से कुछ अधिक ईंटें लग चुकी हैं।

ईंटों की संख्या को ध्यान से देखने पर कुछ और बातें देखने को मिलीं। इनका विश्लेषण करने पर रूपकिशोर ने पाया कि इस संख्या के केवल दो ही गुणनखंड बनाए जा सकते हैं।

छोटा गुणनखंड दो अंकों की अविभाज्य संख्या है, जबकि बड़ा गुणनखंड ६ अंकों की संख्या है।

बड़े गुणनखंड के सभी अंकों का योग २८ है। सबसे रोचक बात तो यह है कि इसमें केवल तीन विभिन्न अंकों का ही प्रयोग हुआ है।

इस खंड संख्या के अंतिम तीन अंकों से बनी संख्या पहले तीन अंकों की संख्या के दो गुने से भी एक अधिक है।

हां, एक बात और है कि पहले तीन अंकों से बनी संख्या ९ से विभाजित हो सकती है।

बताइए भवन निर्माण में अब तक कुल कितनी ईंटें लगी हैं ?

हाल ही में 'जनप्रिय टाइम्स' ने दूरदर्शन द्वारा दिखाए गए विभिन्न कार्यक्रमों का सर्वेक्षण करने पर पाया कि ७८%, ६१%, ४७%, ४६%, और २७% दर्शकों द्वारा देखे जाने वाले पहले पांच कार्यक्रमों में स्थान पाने वाले धारावाहिक थे–'अचला', 'क्रांति की आवाज', 'जीवन की डगर', 'श्यामचंद जासूस' और 'सजनी'।

जोगेंद्र प्रताप, टोनी बर्गेजा, प्रेम भगत, मदन वर्मा और हरीचन्द सैनी लिखित इन धारावाहिकों का निर्माण अरुण सिन्हा, मगन मेहता, रमण शर्मा, विजय ढींगड़ा और सुरेंद्र प्यारे ने किया था।

टोनी बर्गेजा का धारावाहिक ५०% से अधिक दर्शकों की पसंद था। जबकि अरुण सिन्हा का जासूसी धारावाहिक सर्वाधिक तीन लोकप्रिय कार्यक्रमों में से एक था।

मदन वर्मा की 'जीवन की डगर' और 'अचला' की लोकप्रियता में विषेष अंतर न था।

हरीचंद सैनी लिखित 'क्रांति की आवाज' को लोकप्रियता में दूसरा स्थान मिला। इसका या 'सजनी' का निर्माण सुरेंद्र प्यारे ने नहीं किया था।

रमण शर्मा का धारावाहिक तीसरे स्थान पर रहा।

'सजनी' के लेखक प्रेम भगत को विजय ढींगड़ा नहीं जानता था।

जोगेंद्र का धारावाहिक 'जीवन की डगर' से अधिक लोकप्रिय रहा।

बताइए, लोकप्रियता क्रम से किस धारावाहिक का निर्माण किसने किया और उसका लेखक कौन था ?

68
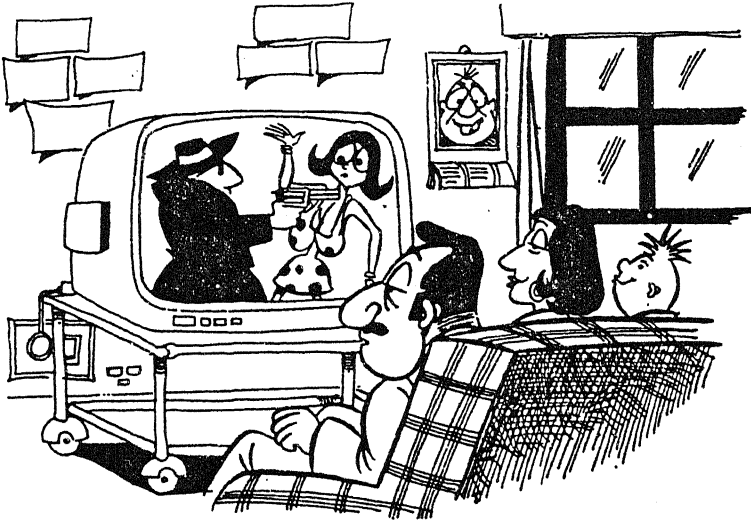
प्रेम और पंकज ने एक ही दिन मारुति गाड़ी की बुकिंग करवाई थी। संयोग से दोनों को एक ही दिन गाड़ी मिली। शो रूम वाले को कह कर उन्होंने अपनी अपनी गाड़ी के लिए दो अंकों वाले नम्बर की व्यवस्था की। दोनों ही कारों को दो अंकों वाली नम्बर प्लेटें मिलीं जिस दिन वे कार लेने शो रूम पहुंचे तो प्रेम के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दोनों ही कारों के नम्बर अविभाज्य संख्याएं थे।

सायंकाल जब वे दोनों अपने मित्र मंथन के घर पहुंचे तो उन्हें मंथन ने अपनी मर्सीडीज गाड़ी दिखाई। इस गाड़ी का नम्बर तीन अंकों की संख्या था। यह संख्या प्रेम और पंकज की कार के गुणनफल से १ अधिक थी।

क्या आप बता सकते हैं कि तीनों कारों के नम्बर क्या हैं ?

चलिए आपको यह भी बता दें कि तीनों ही कारों के सातों विभिन्न अंकों का योग २७ है।

69
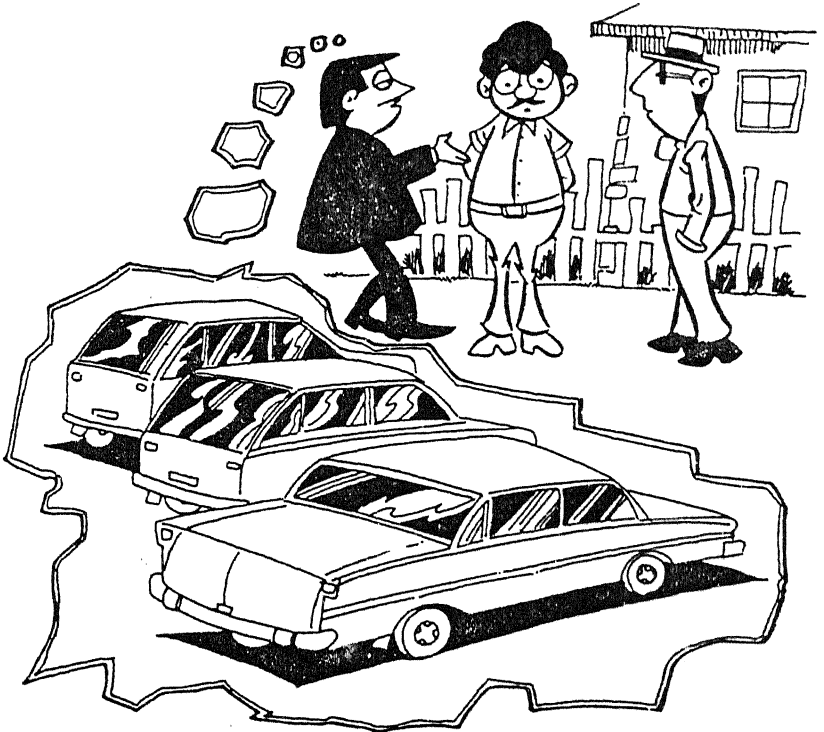
वालीबॉल में विश्व चैंपियन–'आर्केड क्लब' को विगत विश्व चैंपियनशिप में प्राप्त पुरस्कारों का योग करने के पश्चात् टीम के प्रबंधक भूतपूर्व खिलाड़ी यांचे आनरू ने पाया कि यह राशि सात अंकों की न्यूनतम सम्भावित राशि थी तथा इन सातों विभिन्न अंकों का योग मात्र २१ था।

टीम में रिजर्व सहित कुल दस खिलाड़ी थे। प्रबंधक सहित सभी खिलाड़ियों में बराबर-बराबर पुरस्कार राशि बांटने पर पाया गया कि प्रत्येक को मिलने वाला हिस्सा पूरे रुपयों में ही है।

बताइए 'आर्केड क्लब' को कुल कितनी राशि पुरस्कार स्वरूप मिली।

70

'रिलायबल विश्व कप' का वह मैच बड़ा ही रोमांचक था जिसमें भारत के ३०० रनों के जवाब में न्यूजीलैंड की टीम 'निन्यानवे के चक्कर में' ऐसी फंसी कि उसके अंतिम तीन खिलाड़ी शून्य पर ही आउट हो गए। और भारत ने २०१ रनों से शानदार जीत प्राप्त की।

लेकिन बेचारा आशीष परणामी क्या करे ? उसकी तालिका को न जाने क्यों किसी ने जगह-जगह से ऐसा खराब कर दिया कि लाख प्रयत्न करने पर भी उसमें से कुछ पढ़ पाना कठिन था।

दी गई सूचनाओं के आधार पर आशीष की तालिका पूरी करके क्या उसे सांत्वना न देंगे ?

मार्टिन क्रो दो अंकों पर नहीं पहुंच पाया था। उसे सिद्धू ने कैच कर लिया।

जब न्यूजीलैंड के ८१ रन थे तब मनोज की थ्रो पर उसका बल्लेबाज रन आउट हो गया। परंतु यह जेफ क्रो न था।

मोरे ने जिसे स्टंप किया उसने ३१ रन ठोके थे। बिन्नी के शिकार ने केवल ८ रन बनाए।

गावस्कर ने मनिंदर के चौथे ओवर की चौथी गेंद पर गोता लगा कर जब गेंद को लपका तब सारा स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से देर तक गूंजता रहा। उसका शिकार बूक नहीं था।

एक खिलाड़ी को कपिल ने भी कैच आउट किया था। शास्त्री के एक ओवर में गेंद लग जाने से मनोज प्रभाकर पैवेलियन लौट गया। जब वह वापस आ रहा था तभी मैच समाप्त हो गया।

आशीष परणामी की तालिका

मार्टिन स्वीडन	–के. शात्री–बो. कपिल	–	२
केन रदरफोर्ड	–रन आउट	–	३
मार्टिन क्रो	–		
एंड्रयू जोन्स	–रन आउट	–	५
जेफ क्रो	–		
दीपक पटेल	–		
जान ब्रेसवैल	–आउट नहीं	–	९
इयान स्मिथ	–पगबाधा मनोज	–	८
स्टीफन बूक	–		
फिल होर्न	–		
इवान चैटफील्ड	–बोल्ड मनिन्दर	–	०
	अतिरिक्त – नो बॉल	–	६
	कुल (२६.५ ओवर में)		९९

१-३, २-६, ३-१२, ४-३१, ५-८१, ६-८३, ७-९५, ८-९९, ९-९९
कपिल-७-१-१२-१ बिन्नी-४-१-१९-१ मनोज-६-२-२१-२
शास्त्री-६-१-२१-१ मनिंदर-३.५-१-२०-२

अनिरुद्ध, कनकलता, निकोलस, रहीमन और सिद्धार्थ बचपन से ही साथ रहे थे। एक ही कॉलेज में उन्होंने स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त की। बाद में इनमें से तीन ने आगे पढ़ाई की और क्रमशः एम.ए., एम.बी.ए. एवं पी.एच.डी. की डिग्रियां प्राप्त कीं।

कुछ समय बाद ज्ञात हुआ कि ये गांधीनगर, जिम कार्बेट पार्क, दिल्ली, नोएडा और बंबई में कार्यरत हैं। इनमें से तीन क्रमशः आई.ए.एस., फॉरेस्ट सर्विस और एअर इंडिया जैसी सरकारी या अर्द्ध सरकारी नौकरियां पाने में सफल रहे थे। शेष दो में से एक टाटा इंस्टीट्यूट में था और पांचवें ने स्वरोजगार योजना के अंतर्गत अपना काम शुरू कर लिया था।

स्नातक होने के बाद से ही कनकलता दिल्ली में नौकरी कर रही है।

एम.बी.ए. करने के बाद सिद्धार्थ बंबई स्थित टाटा इंस्टीट्यूट में नहीं गया था। हां अनिरुद्ध जिम कार्बेट पार्क में फॉरेस्ट आफिसर था।

पी. एच. डी. करने के कारण निकोलस किसी प्रतियोगी परीक्षा में नहीं बैठ पाया था।

विज्ञान स्नातक (बी. एस-सी.) होने के दस माह बाद ही प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पा कर रहीमन को नौकरी मिली। वह बंबई कभी नहीं गई। स्वरोजगार योजना के अंतर्गत फैक्ट्री नोएडा में लगी थी और आई.ए.एस. अधिकारी की नियुक्ति गांधीनगर में हुई।

बताइए किस मित्र ने कहां तक शिक्षा प्राप्त की और वह किस शहर में क्या काम करता है ?
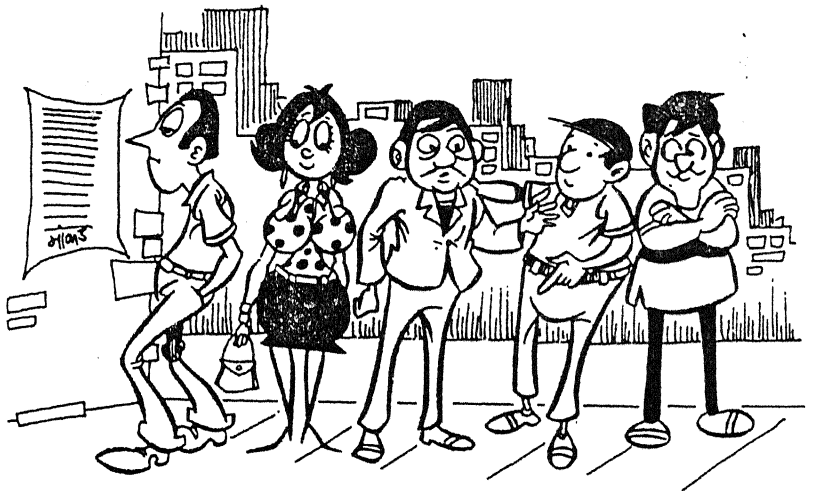
चुनाव की सरगर्मी से कौन अछूता रह सकता है। फिर टऊमकंड क्षेत्र का चुनाव था भी बड़ा कांटे का। वहां से जगनसिंह प्यारे मियां, रामेंद्र प्रसाद, लाखनदास और सोहन राम ने चुनाव लड़ा था। इन प्रत्याशियों के दल थे–एकता मंच, जन मोर्चा, प्रगतिशील मोर्चा, राष्ट्रवादी पार्टी और समतावादी दल।

चुनाव कार्यक्रम का सफल संचालन करने के लिए कृष्णदत्त, जानकी नन्दन, प्रीतम सिंह, मगन भाई और रमाकांत ने अपने-अपने प्रत्याशियों की भरपूर सहायता की। कांटे का चुनाव होने के कारण इन प्रत्याशियों को प्राप्त हुए मतों का अंतर मात्र दस-दस ही था।

प्रगतिशील मोर्चा ने सोहनराम को टिकट दिया था। परंतु रमाकांत इसका चुनाव-संचालक न था।

जानकी नन्दन ने प्यारे मियां के चुनाव कार्यक्रम का संचालन किया परंतु उसे अंतिम स्थान नहीं मिला था।

राष्ट्रवादी पार्टी को चौथा स्थान ही मिल सका यद्यपि उसके चुनाव-संचालक प्रीतम सिंह ने डट कर काम किया था।

कृष्ण दत्त के प्रत्याशी ने चुनाव जीता था। मगन भाई उसके विरुद्ध एकता मंच के प्रत्याशी का चुनाव-संचालक था। परंतु उसका प्रत्याशी दूसरा स्थान नहीं पा सका था।

लाखन दास को जनमोर्चा प्रत्याशी रामेंद्र प्रसाद से अधिक लेकिन जगन सिंह से कम वोट मिले थे।

बताइए, क्रमानुसार प्रत्याशियों की क्या स्थिति रही, उनका दल कौन-सा था तथा उनके चुनाव का संचालन किसने किया ?

73
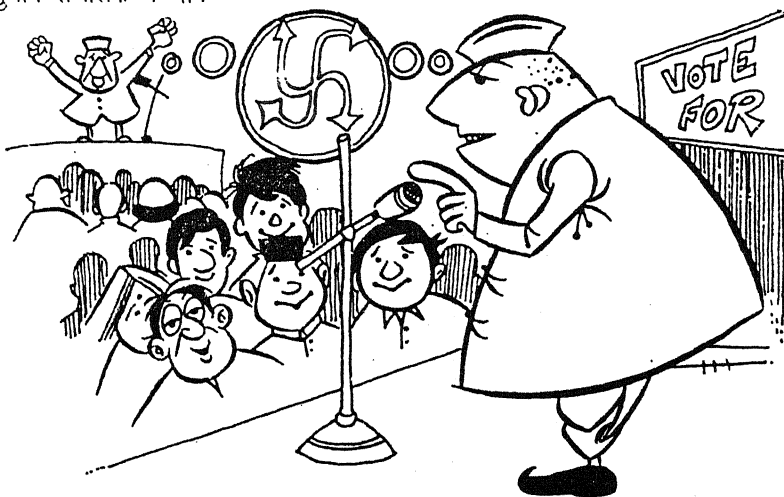
नंदन वन के नीति कुंज में एक ही स्थान पर पास-पास बरगद, पीपल, नीम और शीशम के चार पेड़ लहलहा रहे थे। इन पेड़ों पर पक्षियों ने अपने बसेरे बनाए हुए थे। गत वर्ष इनकी संख्या दो हजार से कुछ कम थी जो इस वर्ष हुई वृद्धि के कारण इक्कीस सौ से कुछ ही कम थी।

बढ़ती हुई आबादी को देख कर पक्षियों के मुखिया ने एक बैठक बुलाई। चर्चा के मध्य पता चला कि बरगद के पेड़ पर जहां सर्वाधिक पक्षी रहते हैं वहां अब स्थान का एकदम अभाव हो गया है। अतः उसके आधे पक्षी अन्य पेड़ों पर चले जाएं।

यह सुन कर पीपल के पेड़ वाले पक्षियों ने कहा, 'ठीक है, हम ले लेंगे बरगद के पेड़ के आधे पक्षी। परंतु फिर हमारे पेड़ पर सर्वाधिक पक्षी हो जाएंगे।'

इस पर नीम पेड़ के पक्षियों ने समस्या का समाधान पेश किया। उन्होंने सुझाव देते हुए कहा, 'पीपल के पेड़ के पक्षियों की नई संख्या का एक तिहाई हम ले लेंगे और बदले में अपनी बढ़ी हुई संख्या का मात्र एक चौथाई भाग ही शीशम के पेड़ को दे देंगे।'

यह सुन कर मुखिया ने कुछ सोच कर हां में सिर हिलाया और कहा, 'ठीक है इस प्रकार सभी पेड़ों पर बराबर पक्षी हो जाएंगे।'

बताइए बरगद के पेड़ पर कितने पक्षी थे ? हां यह ध्यान रहे कि बरगद के पेड़ के पक्षियों की संख्या में कोई भी अंक दोबारा नहीं आया।

74
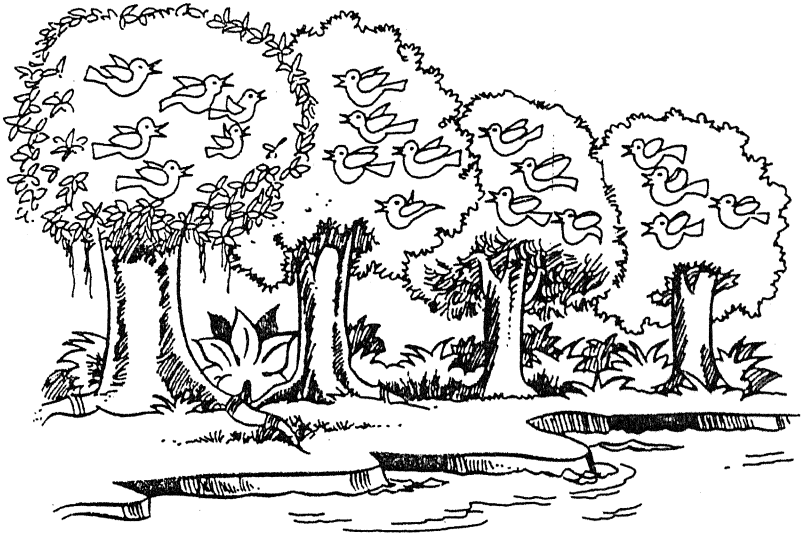
'अंजानी राहों का सफर', 'कुछ दूर साथ दो', 'कोई अजीब बात नहीं', 'जीवन भर का साथ है ...' और 'लब पे जमाने के' ये वे कैसेट्स थे जिन्होंने जारी होने के साथ ही चारों ओर धूम मचा दी थी। इससे न केवल इनके गायकों–जीवकरण 'शलभ', पीयूष 'खुमार', रमण 'कृपाल', शामलाल 'सहरा' और हरमण 'भोला' को प्रसिद्धि मिली, बल्कि इनको पेश करने वाले कैसेट्स-प्रोडयूसर्स–गजल कॉर्नर्स, जीवन रिदमूस, 'सी' सीरीज और सोनम कैसेट्स को भी लाखों रुपए का लाभ हुआ।

रमण के कैसेट के बाद आकर 'लब पे जमाने के' छा गया था। सर्वाधिक बिकने वाले इस कैसेट को सोनम ने पेश नहीं किया था।

शामलाल की गजलों को 'गजल कॉर्नर्स' ने पेश किया था, परंतु यह बिक्री की दृष्टि से तीसरे स्थान पर आया कैसेट 'कुछ दूर साथ दो' नहीं था।

'कोई अजीब बात नहीं' के गायक हरमण भोला थे, परंतु सोनम ने या दूसरे स्थान पर बिक्री कैसेट के निर्माता 'सी' सीरीज ने पेश नहीं किया था।

'अंजानी राहों का सफर' बिक्री की दृष्टि से चौथे स्थान पर रहा।

पीयूष की गजलों को 'जीवन कैसेट्स' ने पेश किया था। जीवकरण के कैसेट्स शामलाल से अधिक लेकिन रमण से कम बिके।

बिक्री के क्रमानुसार बताइए कि किस गायक का कैसेट कौन-सा था और उसे किसने पेश किया ?

बढ़ती हुई तस्करी को रोकने के लिए 'दिल्ली' हवाई अड्डे पर विशेष अधिकारी–नरेंद्र पाल सिंह की नियुक्ति की गई थी। अपनी नियुक्ति से अगले दिन ही नरेंद्रपाल ने अपनी पैनी दृष्टि से–जगन्नाथ प्रसाद, प्रेम किशोर, रमेशनाथ, शाम प्रकाश और सुरेंद्र कुमार को तस्करी के सामान से भरे सूटकेसों सहित धर पकड़ा। इनके पास ऑडियो सैट; कैमरे; टी.वी., वी. सी. आर. और शराब की बोतलें थे। हर तस्कर के पास केवल एक ही प्रकार का सामान था जो इन्होंने कुवैत, दुबई, बैंकाक, सिंगापुर या हांगकांग से खरीदा था और एअर इंडिया, गल्फ एअर, जाल, लुफ्तांसा या पैन एम के जहाजों पर लाद कर लाए थे।

हांगकांग से आई जाल की उड़ान से उतरने वाले के पास वी. सी. आर. थे। सिंगापुर से आया तस्कर रमेश शराब नहीं लाया था।

सुरेंद्र और प्रेम किसी विदेशी एअरलाइंस से आए थे और अपने साथ इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान लाए थे। लेकिन ये बैंकाक से आए लुफ्तांसा के जहाज से नहीं उतरे थे।

टी.वी. लाने वाला तस्कर एअर इंडिया के जहाज से उतरा था परंतु यह कुवैत से आने वाला शाम प्रकाश नहीं था।

जगन्नाथ कैमरा लाया था। परंतु दुबई से आने वाला न तो पैन एम से आया था और न ही वह सुरेंद्र था।

बताइए कौन-सा तस्कर, किस एअरलाइन के विमान से उतरा, वह कहां से आया और उसके पास तस्करी का कौन-सा सामान था ?

76

पहले युरेशियाई खेलों का उद्‌घाटन १० तारीख को हुआ था। शुक्रवार १५ तारीख को सभी टीमों को दिल्ली दर्शन कराया गया। इन खेलों में कुश्ती, गोल्फ, जूडो, टेबल टेनिस, फुटबॉल, मुक्केबाजी, लान टेनिस, वालीबॉल और हॉकी की प्रतियोगिताएं हुईं। प्रत्येक दिन अन्य प्रतियोगिताओं के साथ केवल एक ही खेल की प्रतियोगिताओं का उद्‌घाटन किया जाता था।

१६ तारीख को समापन समारोह भी हुआ। विदा होते समय सभी खिलाड़ियों ने हर्षोल्लास का प्रदर्शन किया।

लॉन टेनिस और टेबल टेनिस की स्पर्धाएं क्रमशः १३ और १६ से पूर्व ही शुरू हुई थीं। हां, सोमवार को फुटबॉल के मैच नहीं हुए।

रविवार को जो स्पर्धाएं आरंभ हुईं उस खेल में 'ट' अक्षर नहीं था। इसी प्रकार मंगलवार को आरंभ होने वाले प्रतियोगी खेलों में 'ल' अक्षर नहीं था।

अधिक खिलाड़ी होने के कारण मुक्केबाजी की प्रतियोगिताएं प्रत्येक दिन हुईं।

हॉकी की प्रतियोगिताएं गोल्फ से चार दिन पूर्व तथा कुश्ती के एक दिन बाद शुरू हुईं ?

क्या आप बता सकते हैं कि किस खेल की प्रतियोगिताएं कब शुरू हुईं। १० से १६ तक प्रारंभ हुए खेलों का केवल पहला-पहला अक्षर ही आपने बताना है।

राम और श्याम उस दिन फल बाजार गए थे। वहां से राम ने चार पेटी आम खरीदे और श्याम ने आमों की केवल एक ही पेटी खरीदी।

घर आकर राम ने सड़े हुए आमों को निकाल कर, सभी आमों को एक-एक कर कई पंक्तियों में इस प्रकार सजा दिया कि प्रत्येक पंक्ति में उतने ही आम थे जितनी पंक्तियां थीं।

उधर श्याम ने जब पेटी खोली तो उसके अधिकांश आम खराब निकले। आमों को गिनकर पता चला कि ठीक आमों की संख्या उतनी ही है जितनी राम ने पंक्तियां बनाई थीं।

राम ने एक और बात नोट की कि दोनों के ठीक आमों की संख्या में यदि २८ और जोड़ दें तो एक पूर्ण वर्ग संख्या प्राप्त होती है।

तो बताइए राम के कुल कितने आम ठीक निकले ?

हां, एक बात बता दूं कि एक पेटी में कुल ४० आम होते हैं।

78

'गिरधारी लाल के मकान का नंबर क्या है ?' जगन्नाथ ने अपने मित्र सतीश से पूछा।

'उसका नम्बर ४ अंकों का है। इस संख्या के सभी अंक अलग-अलग हैं।' सतीश कह रहा था कि उसे जगन्नाथ ने टोका, 'अरे भाई मैं उसके घर का नंबर पूछ रहा हूं।'

'वही बता रहा हूं। इस संख्या का पहला अंक अंतिम दोनों अंकों का गुणक है जबकि दूसरा अंक अंतिम दो अंकों का योग है। अब मकान भी तुम ढूंढ़ो और नंबर भी।' कह कर सतीश शरारतपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

'हां एक बात ध्यान रखना कि मकान का नंबर एक विषम संख्या है।' सतीश ने हंसते हुए कहा, 'अब तो तुम सब समझ ही गए न।'

और जगन्नाथ अभी सोच रहा है। तो बताइए गिरधारी के मकान का नम्बर क्या है ?

79

'विक्रम वीर के लड़के की शादी में कितने अतिथि होंगे ?' जागेराम ने अपने मित्र धनीराम से पूछा।

'भाई अतिथियों की संख्या चार अंकों में थी। सभी को चार-चार के ग्रुप में बांटने पर कोई भी अतिथि अलग नहीं बचा था।'

'और इन चारों अंकों का योग भी चार से विभाजित होने वाली दो अंकों की संख्या थी। यह भी एक संयोग ही है कि योग की यह संख्या ही अतिथियों की संख्या के अंत में थी।'

'परंतु अतिथि कितने थे ?' जागेराम ने फिर पूछा।

'भई, यह तो तुम जानो। हां इतना और बता देता हूं कि इनकी संख्या का पहला अंक दूसरे और चौथे अंक के योग के समान था।' धनीराम ने मुस्करा कर कहा।

क्या आप जागेराम की सहायता कर सकते हैं ? तो बताइए कि कुल कितने अतिथि उस विवाह में सम्मिलित हुए ?

80

'भाई साहब, मुझे कुछ रुपए दे दो और यह भी बता दो कि मामाजी के मकान का नंबर कितना है ?' सतीश ने अपने बड़े भाई रोशन लाल से पूछा।

'भई, उनका नंबर चार अंकों का है और इन चारों विभिन्न अंकों के योग के समान रुपए मेरी जेब में हैं।' रोशन लाल ने मुस्करा कर कहा।

'भाई साहब, बात मकान नंबर की हो रही थी और यह रुपए कहां से आ टपके ? खैर कितने रुपए हैं आपकी जेब में ?' सतीश ने पूछा।

'मकान नंबर के घनमूल के जितने ही रुपए हैं भाई।' रोशन लाल कहकहा लगाकर बोले, 'मकान नंबर तो तुम खुद ही निकाल लो अब।'

'ठीक है।' सतीश ने तनिक सोचा और बाला, 'आप एक बात और बताइए कि आपकी जेब में जो रुपए हैं उनकी संख्या सम है या विषम ?'

'विषम।'

'तत्काल सतीश ने मकान नंबर निकाल लिया। और रोशन लाल ने अपनी जेब के रुपए उसे पुरस्कार के रूप में दे दिए।

बताइए, सतीश को पुरस्कार के रूप में कितने रुपए मिले और मामाजी के मकान का नंबर कितना है ?

81

जोसेफ ने निम्नांकित चित्र बना कर उसके खानों में अलग-अलग संख्याएं लिखीं। इन्हें लिखने में उसने कुछ विशेष बातों का ध्यान रखा था। लेकिन मित्रों को छकाने की दृष्टि से उसने इसके आठ खाने खाली छोड़ दिए।

बाद में उसने अपने मित्रों–रमेश, प्रीतम आदि को जब इन खाली खानों में संख्याएं भरने के लिए कहा तो वे सफल नहीं हो पाए।

क्या आप इनकी सहायता कर सकते हैं ? चलिए केवल खाली खानों की संख्याओं का योग ही बताइए।

82
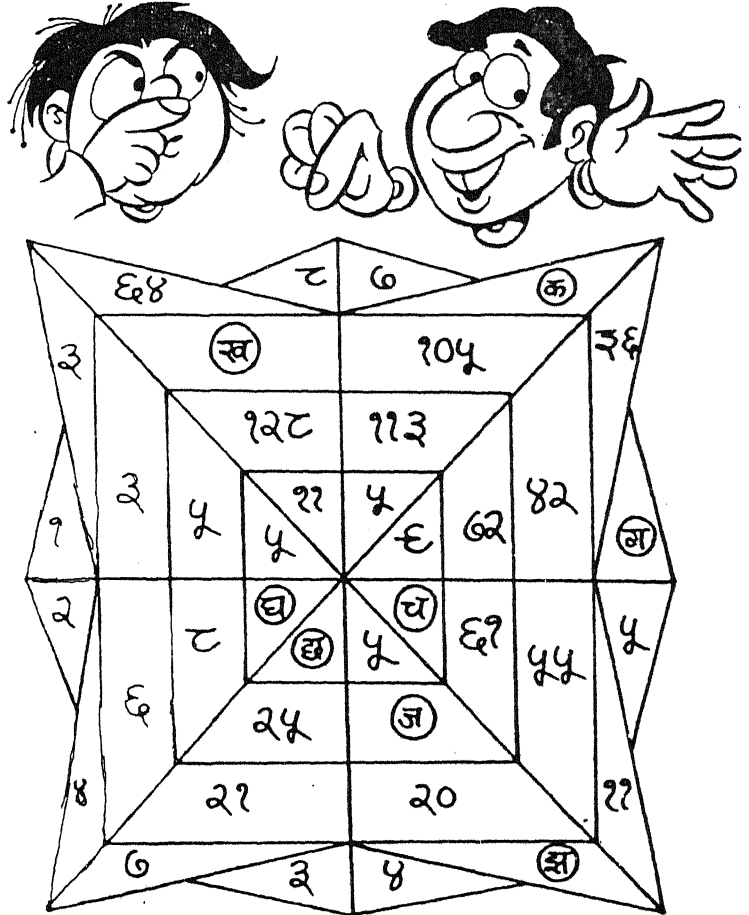
पिछले दिनों दिखाई गई 'अपना हाथ', 'तवारीख', 'जीवन', 'हमसफर' और 'हमारी यादें' नामक टेली फिल्मों के निर्देशक थे–जगन्नाथ, प्रदीप स्नेही, रामनरेश पांडे, सुरेंद्र बतरा और हरिशरण। पहले पांच स्थान पाने वाली इन फिल्मों का निर्माण कृपाशंकर, जानकीदास, संजय शर्मा, सुरमण सहाय और हनुमंत ने किया था।

सुरेंद्र बतरा की टेलीफिल्म का निर्माण जानकीदास ने किया था लेकिन यह तीसरा स्थान प्राप्त टेलीफिल्म–'तवारीख' नहीं थी।

'जीवन' के निर्देशक हरिशरण ने सुरमण सहाय या हनुमंत के साथ कभी काम नहीं किया था।

सर्वाधिक लोकप्रिय टेली फिल्म 'हमारी यादें' का निर्माण रामनरेश पांडे की टेली फिल्म के साथ ही शुरू हुआ। हनुमंत इनमें से किसी के साथ भी सम्बद्ध न था।

प्रदीप ने सदा संजय शर्मा की फिल्मों को ही निर्देशित किया था। उनकी फिल्म को चौथा स्थान नहीं मिला।

'अपना हाथ' को 'जीवन' से अधिक लेकिन 'हमसफर' से कम लोकप्रियता मिली। जगन्नाथ इनमें से किसी के साथ सम्बद्ध न था।

सुरमण की टेलीफिल्म को दूसरा स्थान मिला था।

बताइए लोकप्रियता क्रम के अनुसार फिल्म के निर्देशक और निर्माता कौन थे ?

83

'चाचाजी, इस बार कितने साल के हो जाओगे ?' रणजीत ने अपने रिटायर्ड फौजी चाचा नरोत्तम से पूछा।

चाचा नरोत्तम ने सीधे-सीधे उत्तर न देकर कहा, 'देखा बेटा रणजीत, तुम्हारे दादाजी और मेरी आयु में इस वर्ष एक विशेष समानता आ जाएगी।'

'वह क्या चाचाजी ?'

'वह यह कि मेरी आयु का पहला अंक उनकी आयु के अंतिम अंक के समान हो जाएगा। उनकी आयु का पहला अंक मेरी आयु के दोनों अंकों के योग के समान हो जाएगा। समझे।'

'जी समझ गया। लेकिन मैंने तो आपकी आयु पूछी थी।' रणजीत ने कहा।

'चलो तुम्हें बता दें कि गत वर्ष मेरी आयु में एक विषम अंक भी था।'

'चाचाजी इतने से तो मैं कुछ भी नहीं जान सका। आप सीधे से क्यों नहीं बताते ?' रणजीत की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

'ठीक है इस बार हमारी और पिताजी की आयु के चारों अंकों का योग ११ से भाग हो जाएगा। अब तो जान जाओगे न ?' चाचा नरोत्तम ने कह कर तिरछी निगाहों से उसे देखा।

रणजीत कुछ समझा या नहीं परंतु उसका छोटा भाई शरद समझ गया था।

बताइए चाचा नरोत्तम और उनके पिताजी की आयु इस वर्ष कितनी हो जाएगी ?

84

दावजीपुर एक छोटा सा कस्बा था। यहां के निवासी बड़े ही प्रसन्न थे। कुछ ही समय पूर्व 'अपना मकान' बनाओ योजना के अंतर्गत सभी परिवारों को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार छोटा या बड़ा मकान मिल गया था। कोई परिवार ऐसा न था जिसे मकान न मिला हो और कोई मकान ऐसा न था जो खाली हो। सभी व्यक्ति अपने ही मकान में रहते थे। वहां मकानों की संख्या वहां की आबादी का ठीक छठा भाग थी।

दावजीपुर की आबादी ५ अंकों की संख्या थी जिसके पहले दो अंकों (उसी क्रम में) संख्या पांचों अंकों के योग से आधी थी। जनसंख्या का मध्य का अंक, दूसरे और अंतिम अंक के योग का आधा था।

बताइए वहां कुल कितने मकान थे ?

सुमन ने 'पूर्व कप फुटबाल' की 'बी' लीग में खेले गए सभी मैचों की एक तालिका बनाई थी। इस तालिका में सुमन ने अंकों के स्थान पर अक्षरों का उपयोग किया था। प्रत्येक अक्षर अलग-अलग अंक दर्शाता है। इस लीग के मैच संपन्न हो जाने के बाद तालिका इस प्रकार थी–

'बी' लीग

क्लब	मैच		बराबर	हारे	गोल		अंक
	कुल	जीते			किए	खाए	
वेसिन क्लब, ब्राजील	क	क	ज	ज	च	ज	छ
टिराने क्लब, इटली	क	घ	ज	ग	ख	घ	ख
जोकिनो क्लब, युगोस्लाविया	क	ज	ग	घ	ज	च	ग
मीर क्लब, सोवियत संघ	क	ज	ग	घ	ज	घ	ग

कूट सूत्र : च=ख+छ–ग

बताइए वेसिन क्लब और जोकिनो क्लब के बीच हुए मैच का परिणाम क्या रहा और दोनों टीमों ने कितने-कितने गोल किए ?

86

चौ० बृजप्रताप सिंह, सागरपुर कस्बे के लोकप्रिय नेता हैं।

सन् १९९२ में उनके ३२ वर्षीय पोते–सीताराम सिंह ने २९ फरवरी को उनके जन्मदिन पर उनके सम्मान में एक बड़े भोज का आयोजन किया। चूंकि इस अवसर का लाभ उठा कर वह अपने व्यवसाय को और फैलाना चाहता था, अतः उसने छोटे-बड़े सभी को इसमें आमंत्रित किया।

भोज में रोशन प्रताप ने बृजप्रताप सिंह से पूछा, 'चौधरी साहब, आज आप कितने वर्ष के हो गए हैं ?'

उसका प्रश्न सुन कर चौधरीजी तनिक मुस्कराए और फिर बोले, 'देखो, मेरा भाई रवि प्रताप मुझसे ४ वर्ष छोटा है। हम दोनों का जन्म आज ही के दिन हुआ था। हां, आज उसकी और मेरी जो आयु है, उसके चारों अंक अलग-अलग हैं। और याद रखना, रवि की आयु का कोई भी अंक विषम नहीं है।'

लेकिन रोशन प्रताप अभी भी उनकी आयु जानने में लगा हुआ है।

क्या आप उसकी सहायता कर सकते हैं ? तो फिर बताइए चौ० बृजप्रताप सिंह का जन्म कब हुआ ?

87
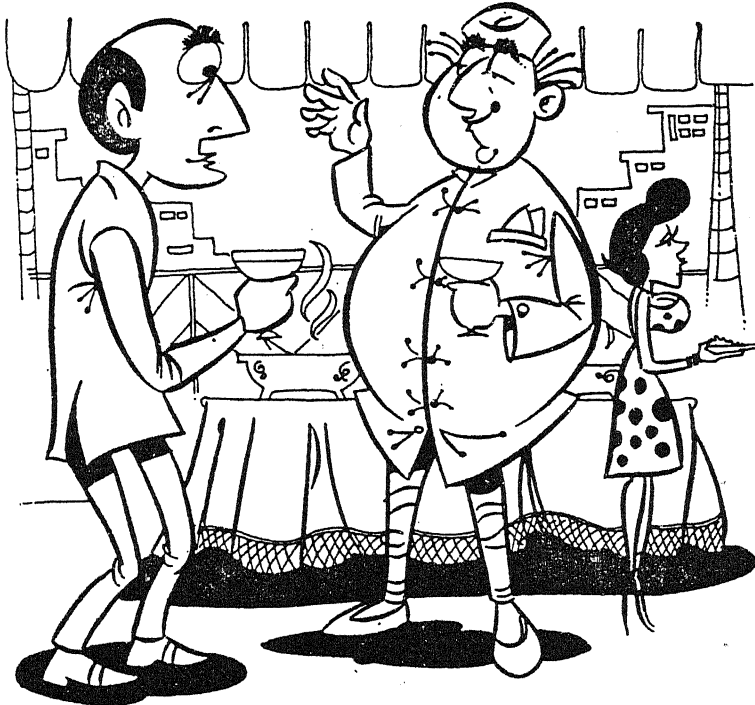
वन अधिकारी रणबीर को सूचना मिली थी कि कुछ शिकारी चोरों का गिरोह उसके क्षेत्र में सक्रिय है। अतः उन्हें पकड़ने के लिए वह पेट्रोलिंग पर निकला। दोपहर हो जाने के कारण वह भोजन के लिए वापस वन कार्यालय की ओर लौट ही रहा था कि उसने समीप ही गोली चलने की आवाज सुनी। आवाज सुनते ही वह तत्काल जीप में बैठ कर सिपाहियों के साथ घटनास्थल की ओर चल दिया।

वहां पहुंच कर उसने देखा कि दो चोर शिकारी, मारे गए हिरण को बड़ी मस्ती से देख रहे थे। इससे पहले कि वे हिरण को उठाकर अपनी कार में रखते, रणबीर ने उन्हें सिपाहियों की सहायता से गिरफ्तार कर लिया। जब उन्हें हथकड़ी पहनाई जा रही थी तब उसने घड़ी की ओर देखा। समय था दो बजकर पांच मिनट।

वे सभी वन कार्यालय जा पहुंचे। अंदर प्रवेश करते समय उसकी दृष्टि सामने लगी कार्यालय की घड़ी पर पड़ी। यह क्या ? उसकी छोटी सूई तो एक और दो के बीच ही थी। कहीं घड़ी रुक न गई हो इस विचार से उसकी दृष्टि सैकंड की सूई पर पड़ी। परंतु नित्य की भांति वह तो निरंतर दौड़ती ही जा रही थी। उसने पाया कि दोनों घड़ियों में समय का अंतर मिनटों में १३ के गुणक में था।

उसने फिर अपनी घड़ी की ओर देखा। उसकी घड़ी में ३ बजने में ५ मिनट ही बाकी थे। उसे यह चक्कर समझ नहीं आ रहा था। तभी उसे याद आया कि सुबह ६ बजे के समाचार सुनने के कुछ देर बाद जब वह घर से निकला था तब उसने नगर के घंटाघर के साथ अपनी घड़ी मिलाई थी। और साथ ही याद आया कि उसकी अपनी घड़ी तो पिछले दस दिनों से तेज चलने के कारण हर एक घंटे में १५ मिनट आगे हो जाती थी। दिन की ड्यूटी होने के कारण वह उसे ठीक नहीं करवा पाया था।

रिपोर्ट लिखने के समय जब गिरफ्तारी का समय वह भरने लगा तब वह रुका और कागज पर कुछ हिसाब लगाने लगा। और फिर उसने गिरफ्तारी का सही समय भर दिया।

क्या आप बता सकते हैं कि उसने फार्म में क्या समय भरा ? एक बात ध्यान में रखने योग्य है कि कार्यालय की घड़ी और घंटाघर की घड़ी के समय में कभी अंतर नहीं आया है।

88
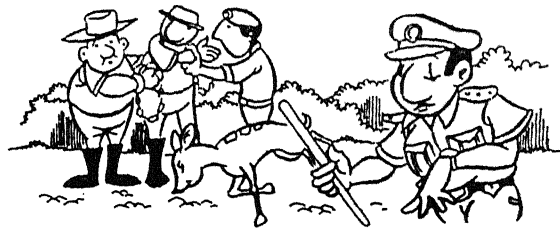
हॉल के अंदर बज रही निरंतर तालियों की आवाज में अभी भी गीत के स्वर गूंज रहे थे–'...जीवन की डोर, बड़ी कमजोर... क्या जाने कब कोई साथी छूट जाए...'।

गीत सुन कर उन पांचों साथियों–कृष्णकांत, दमणेंद्र सिंह, पूर्णेंदु कुमार, बंसी लाल और महेंद्र सिंह की आंखों में आंसू आ गए। एक अरसे के बाद वे इकट्ठे हुए थे। यद्यपि वे पांचों अलग-अलग स्कूलों–काशी विद्या मंदिर, दया शिक्षण संस्थान, पराग विद्यालय, वनस्थली विद्यालय और मान विद्या भवन के विद्यार्थी थे। परंतु एक ही मोहल्ले के थे। उनके अनन्य प्रेम की चर्चा पूरे कस्बे में थी। लेकिन समय ने ऐसी करवट ली कि वे एक-दूसरे से बिछुड़ कर कलकत्ता, दिल्ली, पूना, बंबई और मद्रास जा पहुंचे। जहां जीविका के लिए तीन मित्र कला, गीत, संगीत का सहारा ले कर चित्रकार, गायक और संगीतकार बने, वहां दो मित्र हॉकी और क्रिकेट खेल कर जीविकोपार्जन में लग गए।

बंसी और कृष्ण को रुचि के अनुसार गायन और संगीत के क्षेत्र में स्थान मिला। वे मान विद्या भवन के विद्यार्थी नहीं थे।

पराग विद्यालय का विद्यार्थी दिल्ली जा पहुंचा था। उसने कभी क्रिकेट नहीं खेला था और न ही वह कृष्णकांत था।

दमणेंद्र का खेल-प्रेम उसे कलकत्ता ले गया। वनस्थली विद्यालय के विद्यार्थी को मद्रास के कला क्षेत्र में बड़ा नाम मिला।

काशी विद्या मंदिर का महेंद्र बंबई में था परंतु वह हॉकी कभी नहीं खेला।

पूना गए व्यक्ति को संगीत देने का कभी कोई अवसर नहीं मिला था।

उपर्युक्त सूचनाओं के आधार पर बताइए कि वे किस विद्यालय में पढ़ते थे। अब किस नगर में हैं और उनकी जीविका का साधन क्या है ?

शहर में फिल्मोत्सव हो और कपिल कुमार अपनी मित्र मंडली सहित वहां न हो यह कहना, सुनना बड़ा कठिन है। जैसे ही मित्र मंडली को ११वें फिल्मोत्सव की सूचना मिली वैसे ही वे टिकटें प्राप्त करने की तिकड़म में लग गए। लेकिन इस बार पांचों मित्रों–कपिल कुमार, चिरंजीव वर्मा, तड़ित शर्मा, दिनेश झा और नवीन घोरपड़े–को मात्र पांच ही टिकटें मिल पाईं। पांचों टिकटें अलग-अलग फिल्मों–'गोल्डन ईगल', 'जस्ट टैन मिनट्स बिफोर', 'दी पीकाक वाज व्हाइट', 'रोड टु वंडरलैंड' और 'से मी गुडबाई'–की थीं। ऐतिहासिक, जासूसी, प्रेमकथा, रहस्य-रोमांच और हास्य विषयों पर बनी ये फिल्में ट्रोंजो, दिंको, नीडोज, पैराडाइज और रैम्पर्न छविग्रहों पर प्रदर्शित हुईं।

तड़ित ने रैम्पर्न पर 'गोल्डन ईगल' देखी जो प्रेमकथा नहीं थी।

कपिल को जो टिकट मिला वह हास्य फिल्म 'रोड टु वंडरलैंड' का था। लेकिन उसने अपने किसी मित्र से टिकट बदल कर बाद में ट्रोंजो पर लगी जासूसी फिल्म देखी थी।

दिनेश को रहस्य-रोमांच से भरपूर फिल्म देखने को मिली। लेकिन यह फिल्म पैराडाइज पर लगी 'से मी गुडबाई' नहीं थी।

चिरंजीव वर्मा ने नीडोज पर फिल्म देखी।

दिंको पर प्रदर्शित फिल्म का नाम था–'दी पीकाक वाज व्हाइट'।

बताइए किस मित्र ने किस हाल पर कौन सी फिल्म देखी तथा वह फिल्म किस विषय पर आधारित थी ?

90
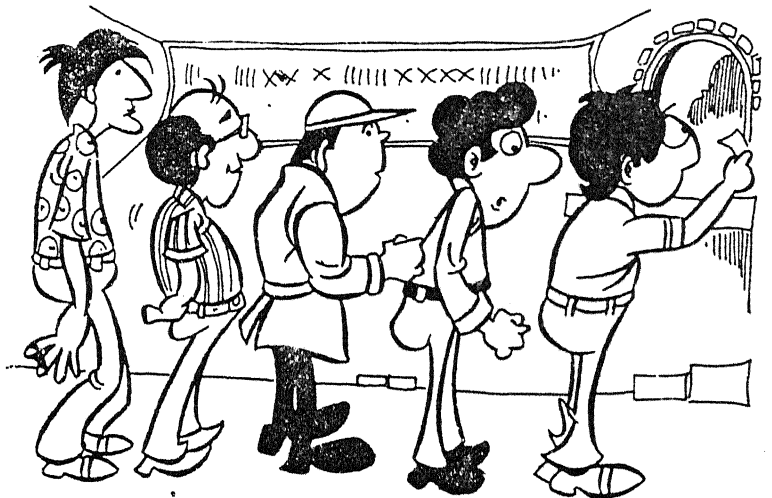
जीत 'निर्मल', देवेन्द्र 'प्रीत' रामेश्वर वर्मा, विजय पांडे और सुधीर मंगल ने एक ही स्कूल से शिक्षा पाई थी। बाद में ये मित्र अध्यापक, इंजीनियर, डाक्टर, पुलिस अधिकारी और वैज्ञानिक के रूप में अपने जीवन की नैया खेने लगे। समय आने पर इनकी नियुक्ति ऊटी, गुलमर्ग, डलहौजी, माथेरन और शिमला में हुई। कल्याणी, प्रिया, मालती, लक्ष्मी और शांति इनकी पत्नी थीं।

अपने उपनाम से कविताएं लिखने वाले दोनों मित्र अध्यापक और पुलिस अधिकारी थे। इनमें से एक गुलमर्ग में और दूसरा धुर दक्षिण–ऊटी में था।

शांति अपने डाक्टर पति के साथ माथेरन में खुश थी।

कल्याणी को इच्छानुसार पुलिस में कार्यरत पति मिला था।

इंजीनियर सुधीर कभी शिमला नहीं गया था।

विजय और लक्ष्मी की शादी सबसे पहले हुई थी।

प्रिया न तो डलहौजी में रहती थी और न ही कभी गुलमर्ग गई थी। वह देवेन्द्र की पत्नी नहीं थी।

बताइए कौन–सा मित्र किस व्यवसाय में है, उसकी शादी किससे हुई और वे कहां रहते हैं ?

देश में 'पल्वितुर बैंक' खातों के बारे में बहुत शोरगुल मचा हुआ था। विदेश स्थित इस बैंक के खाताधारियों के बारे में बैंक वाले कोई भी सूचना किसी को नहीं देते थे। इसलिए अनेक देशों के धनी व्यक्ति इस बैंक में खाता खोलते थे।

६ अंकों के गुप्त खाता नम्बर के पहले पांच अंक खाताधारी के रहने के स्थान को दर्शाते थे। शेष अंक खाते का नम्बर दर्शाते थे।

पहला अंक महाद्वीप का कोड था। इस कोड में एशिया का अंक ५ था। उसके बाद के दो अंक देश का कोड थे। शेष अंक नगर का कोड थे।

भारत के पृथ्वीनाथ ने अपने गुप्त खाता नम्बर में एक विशेषता देखी थी। उसमें स्थान दर्शाने वाला कोड न केवल एक पूर्ण वर्ग संख्या ही थी बल्कि यह अन्तिम चार अंकों वाले खाता नम्बर का सोलह गुणा थी।

हां पृथ्वीनाथ के गुप्त खाते में और चाहे जो भी अंक आया हो परन्तु १ या ७ का अंक उसके गुप्त खाता नम्बर में नहीं था।

बताइए पृथ्वीनाथ के खाते का नम्बर क्या है ?

92

बड़ा ही हाजिर जवाब था बलजीत। उस दिन मेहमान घर पर आए तो उसने दोनों हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार किया। मेहमान ने पुचकार कर अपने पास बिठा लिया। तरह तरह के प्रश्नों की बौछार की। परन्तु बलजीत ने बिना घबराए, बड़ी ही सहजता से सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। मेहमान बड़ा खुश। उसने जेब से पर्स निकाला और बोला, 'बलजीत तुम्हारी जेब में कितने नोट हैं ?'

'जी एक भी नहीं' कह कर बलजीत ने जेब उलट कर दिखा दी।

उसकी इस अदा पर सभी हंस पड़े।

मेहमान ने फिर कहा, 'अच्छा, तुम्हारी इस खाली जेब में कितने नोट डालूं कि वह खाली न रहे ?'

बलजीत ने कुछ कहा परन्तु वह हमें सुनाई नहीं दिया। चलिए आप ही बता दीजिए कि उसकी खाली जेब में कितने नोट डाले जाएं कि जेब खाली न रहे।

93

खिले-खिले फूल, रंग-बिरंगे ताजे महकते हुए फूल किसे अच्छे नहीं लगते। यही कारण था कि मोहन ने अपनी कोठी के बाहर खाली स्थान पर तरह-तरह के फूलों वाले अनेक पौधे लगाए हुए थे। जब मौसम आता तो कोठी उनकी महक से ही भर जाती और मोहन का चेहरा भर जाता मुस्कान से, छाती प्रसन्नता से फूल उठती। वह बाग से कुछ फूल लेकर उनका गुच्छा अपने ड्राइंगरूम के गुलदस्ते में भी लगा देता था।

पर यह क्या? पिछले कुछ दिनों से उसके चेहरे की मुस्कान न जाने कहां गायब हो गई थी। यह देखकर उसका मित्र अशोक रह न सका और पूछ ही बैठा मोहन से।

मोहन ने बताया, 'क्या करूं ? न जाने कहां से इतनी मक्खियां आ जाती हैं। आ जाएं तो भी कोई बात नहीं, पर आते ही ड्राइंगरूम में गुलदस्ते के फूलों पर ही बैठती हैं। हटती भी तो नहीं।'

'तो क्या चाहते हो तुम ?' अशोक ने पूछा।

'चाहना क्या है। मैं तो चाहता हूं कि मक्खियां ड्राइंगरूम में ही न आएं।' मोहन ने कातर स्वर में कहा।

अशोक मुस्कराया और बोला, 'तो फिर एक काम करो।'

''क्या'' मोहन एकदम बोला।

अशोक ने कहा, 'ड्राइंगरूम से गुलदस्ते को ही हटा दो। न रहेगा बांस और न बजेगी बां.....'

'नहीं-नहीं यह तो नहीं हो सकता।' अशोक की बात को बीच में ही काटकर मोहन बोला।

'फिर।' अशोक ने पूछा।

'मैं तो चाहता हूं कि गुलदस्ता और उसमें लगे फूल ड्राइंगरूम की शोभा तो बढ़ाते ही रहें। कितना सुंदर लगते हैं।' कहकर मोहन फिर खिन्न हो उठा।

'फिर तो तुम एक काम करो...।'

'वह क्या ?' मोहन ने आतुर हो पूछा।

अशोक ने उसकी आतुरता देखी तो उसके कान में कुछ कहने लगा। यद्यपि उनकी बात हमें नहीं सुनाई दी परंतु, बात सुनकर मोहन की हंसी लौट आई और कहने लगा, 'हां यह तो मैं मान सकता हूं। और चाहे कुछ भी हो फूलों की सुंदरता तो रहेगी।'

बताइए अशोक ने उसे क्या सुझाव दिया ?

94
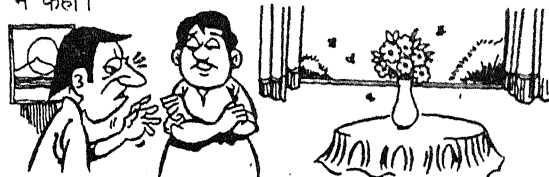
'शोभाराम एंड सन्स' का मालिक शोभाराम दुकान में एक से एक बढ़िया कपड़ा रखता था। नए-नए रंग और नवीनतम डिजाइन वाले कपड़े। ऐसा कोई कपड़ा नहीं होता था जो उस शहर में आए और उसकी दुकान पर न मिले। परन्तु इसके बावजूद भी उसकी दुकान पर ग्राहक कम ही आते थे। इसका कारण था उसका बेईमान स्वभाव। शोभाराम ने अपने कपड़ा मापने वाले मीटर के दोनों सिरों को सवा दो-सवा दो सेंटीमीटर घिस रखा था। इसलिए जो उसकी दुकान पर एक बार चढ़ जाता था वह दुबारा नहीं आता था।

पर बेचारा भोलाराम। वह तो फंस ही गया था न उस दिन। बेचारा इस बात को जानता ही नहीं था। उसने कपड़े देखे। एक डिजाइन उसे पसंद आया तो पूरे पौने ग्यारह मीटर कपड़ा कटवा लिया उसने।

किसी के कहने पर जब उसने कपड़ा नापा तो कम निकला।

बताइए भोलाराम को कुल कितना कपड़ा कम मिला ?

क्रिकेट के सत्र में किसे नहीं होता क्रिकेट बुखार ? फिर सतीश जो स्कूल का माना हुआ खिलाड़ी था, भला वह कैसे इस बुखार से वंचित रह जाता। उठते-बैठते, खाते-पीते क्रिकेट ही क्रिकेट ध्यान रहती है। और उस दिन जब वह थक-हार कर सोया तो खो गया अपने क्रिकेट के संसार में। मध्य रात्रि में भारत-वेस्ट इन्डीज के बीच उसने एक मैच देखा।

सपना समाप्त होने के तत्काल बाद उसकी नींद खुल गई। वह उठ बैठा और उसने स्वप्न में देखे मैच की तालिका बनाई। तालिका मेज पर रखकर वह फिर सो गया। सुबह उठकर उसने देखा कि तालिका में कुछ स्थानों पर धब्बे पड़े हुए थे। उन स्थानों पर क्या लिखा है यह पढ़ पाना कठिन था।

नीचे दी गई सूचनाओं के आधार पर क्या आप सतीश की तालिका पूरी कर सकते हैं ?

आखिर क्लाइव लायड ने कपिल को १४६ रन पर लपक कर आउट कर ही दिया।

होल्डर का शिकार बोल्ड हो गया था।

मनिन्दर सिंह आउट होने से पूर्व २ रन बना सका था। जबकि महेन्द्र ७० रन पर राबर्टस की 'नो' बॉल पर कैच हुआ था।

जिसे लायड ने रन आउट किया था उस खिलाड़ी का योगदान गार्नर के प्रत्येक शिकार से अधिक था।

पाटिल अर्द्धशतक के चक्कर में गार्नर की गेंद पर आउट हो गया।

ग्रीनिज ने जिसे कैच किया था वह तीसरा शिकार था तथा उसने ४६ रन बनाए थे।

हेन्स के शिकार का योगदान पूरी टीम में दूसरे नम्बर पर था। जबकि एंडी राबर्ट्स ने जिसे आउट किया था उसका योगदान दो अंकों में था।

तालिका

१. सुनील गावस्कर	कैच रिचर्ड्स बो. गार्नर	–	६०
२. अंशुमन गायकवाड़	– – – –	–	–
३. महेन्द्र अमरनाथ	– – – –	–	–
४. संदीप पाटिल	– – – –	–	–
५. यशपाल शर्मा	कैच गार्नर बो. होल्डिंग	–	३०
६. कपिल देव	– – – –	–	–
७. सैयद किरमानी	कैच ग्रीनिज बो. गार्नर	–	१६
८. मदनलाल	कै. ग्रीनिज बो. होल्डर	–	२४
९. रवि शास्त्री	आउट नहीं	–	१४

१०. महेंद्र संधू	कैच लायड बो. गार्नर	–	६
११. मनिन्दर सिंह	– – – –	–	–
	अतिरिक्त रन	–	३६
	कुल रन संख्या	–	५२७

विकटों का पतन :

१-१२०, २-२१०, ३-२५०, ४-२८५, ५-४२२, ६-४४८, ७-४७५, ८-४६६, ६-५१६.

गेंदबाजी विश्लेषण :

होल्डर	३१	५	१११	२
होल्डिंग	२५	३	१३२	२
लायड	१५	२	४५	०
राबर्ट्स	१८	१	१०५	१
गार्नर	२१	६	६८	४
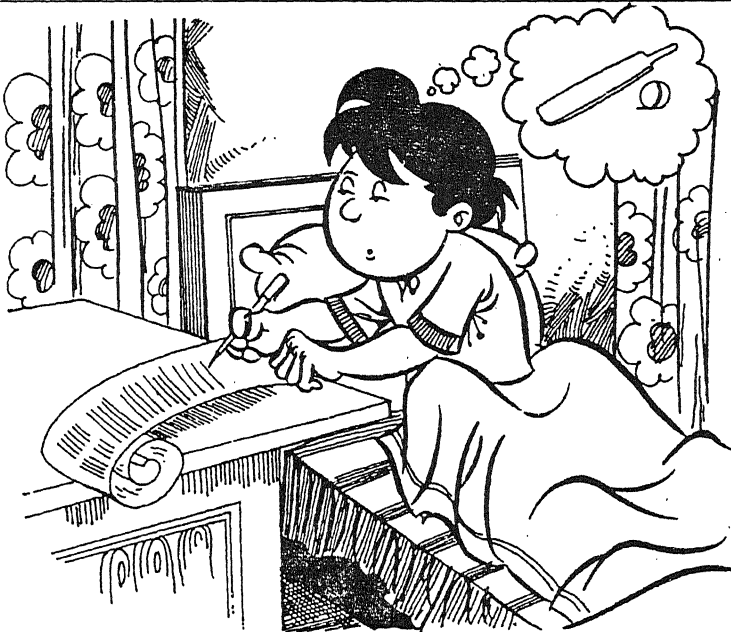
'हूं, तो क्या करने आए हो तुम लोग ? कहां से आए हो तुम लोग ?' रकोच द्वीप के राजा चलद मच सपोर ने पूछा।

'हमारा दल विश्व-भ्रमण पर निकला था। फीजी से आस्ट्रेलिया की ओर बढ़ते हुए मार्ग में भयंकर समुद्री तूफान के कारण हमारा जहाज भटक गया। कई दिन बाद हम इस द्वीप के समीप पहुंचे हैं। भोजन की तलाश कर रहे थे कि आपके सैनिकों ने हमें पकड़ लिया। हम भारत से आए हैं। और हमारा विचार किसी प्रकार का आक्रमण करने का नहीं है।' भ्रमण-दल के नेता गुलशन ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

आश्वस्त हो कर राजा सपोर ने समुद्र शान्त होने तक उन्हें वहां ठहरने की अनुमति प्रदान कर दी।

दल के लोगों को राजा सपोर के विशाल महल के एक भाग में ठहराया गया। शाम को जब वे महल देखने गए, तब राजा सपोर का खजाना देख कर दंग रह गए। खजाने में चारों ओर मोती ही मोती देख कर गुलशन और उसके साथी ठगे-से रह गए।

राजा सपोर ने गुलशन की आंखें देख कर कहा, 'हूं! मोती पसंद हैं ? सभी को एक-एक मोती मिल सकता है, यदि तुम यह बताओ कि यहां कुल कितने मोती हैं ?'

गुलशन मोतियों के अम्बार को देख कर अनुमान लगाना चाहता था कि राजा सपोर फिर बोला, 'व्यर्थ है गुलशन! तुम इस प्रकार गिन नहीं सकते इन्हें। मोतियों की संख्या इतनी बड़ी है कि उसमें सभी अंक हैं। सभी अंकों से बनी इस न्यूनतम संख्या में कोई भी अंक दुबारा नहीं आया है। हां, हमारे द्वीप के जितने निवासी हैं, सभी को उतने ही मोती दे दूं, तब यह खजाना खाली हो सकता है।

'सोचो और मोतियों की सही गिनती बता कर भेंट पाओ।' राजा सपोर ने आत्मविश्वास से कहा।

अमूल्य मोतियों के उपहार को पाने की इच्छा से गुलशन तत्काल जुट गया उनकी संख्या निकालने में। और अन्ततः उसने राजा सपोर को बता दिया कि खजाने में कितने मोती हैं।

उनकी बात अति मन्द स्वर में थी। क्या आप बता सकते हैं कि राजा सपोर के पास कुल कितने मोती थे और रकोच द्वीप की जनसंख्या कितनी थी ?

एशियाई देशों में हुए हॉकी के निमन्त्रण टूर्नामेण्ट में कुवैत, चीन, जापान, पाकिस्तान, फिलीपीन, बांग्लादेश, बहरीन, भारत, मलेशिया और श्रीलंका ने भाग लिया। इस टूर्नामेण्ट में सभी देशों ने अन्य सभी देशों के साथ मैच खेले। इन मैचों के अन्त में विभिन्न देशों को प्राप्त अंकों की जो सूची राधेश्याम ने बनाई, वह इस प्रकार थी–

जापान (१७), चीन (१५), भारत (१५), पाकिस्तान (१०), मलेशिया (६), बांग्लादेश (८),... (. . .) बहरीन (५), श्रीलंका (४), . . . (. . .)।

जी हां, दो देशों के नाम और अंक मैं भी नहीं पढ़ पाया। फिर भी दी हुई सूचनाओं के आधार पर बताइए कि किस देश ने किसको हराया और किससे बराबर रहा ?

चीन की गोल औसत भारत से अच्छी थी। यद्यपि भारत किसी से नहीं हारा तथापि बांग्लादेश जैसी कमजोर टीम भी भारत से एक अंक छीन ले गई। बहरीन ने अपने से कहीं अधिक शक्तिशाली पाकिस्तान की टीम को २-१ से हरा कर सनसनी फैला दी। कुवैत की टीम कोई भी अंक नहीं ले पाई। मलेशिया और बहरीन के बीच हुए मैच का स्कोर ६-६ रहा।

तो बताइए इन मैचों के परिणाम क्या रहे ?

98

माइकल एंथनी ने भारत और इंग्लैण्ड के बीच हुए क्रिकेट मैच का विवरण जिस कागज पर लिखा था, उसे चूहों ने इस प्रकार कुतर दिया था कि डेनिस एमिस, माइक ब्रियरली, एलन नॉट, जॉन लीवर तथा डेरेक अण्डरवुड वाला भाग भलीभांति नहीं पढ़ा जा सकता था। माइकल को खेल-तालिका याद नहीं रही, फिर भी उसे मैच की कई बातें याद थीं।

क्या आप उसके द्वारा दी गई निम्नांकित जानकारी के आधार पर बता सकते हैं कि कौन-सा खिलाड़ी, किस गेंदबाज की गेंद पर, कैसे आउट हुआ और अपनी टीम को उसने कितने रनों का योगदान दिया?

१. नॉट को किरमानी ने 'स्टम्प' किया, जबकि लीवर प्रसन्ना की गेंद पर आउट हुआ। जो खिलाड़ी क्लीन बोल्ड हुआ, उसे चन्द्रशेखर ने गेंद नहीं फेंकी थी।

२. गावस्कर ने जिसे कैच किया, उसका योगदान दूसरे क्रम पर था। ब्रियरली रन-आउट हुआ।

३. वेंकट ने जिसे आउट किया, उसे शर्मा ने कैच नहीं किया तथा उसका व्यक्तिगत योगदान दो अंकों में नहीं था।

४. इन पांच बल्लेबाजों ने कुल ३२८ रन बनाए। यद्यपि नॉट और लीवर दोनों के रनों में ५ और ७ के अंक थे, तथापि दोनों का योगदान समान नहीं था।

५. जिस खिलाड़ी ने शतक पूरा किया, वह जब बेदी की गेंद पर कैच हुआ तब उसके रन एलन नॉट अथवा लीवर में से किसी एक द्वारा बनाए गए रनों से १०० रन अधिक थे।

६. अण्डरवुड और ब्रियरली दोनों में से एक के रन दो अंकों में नहीं थे तथा दूसरे के रन उससे दुगुने थे।

बाबा लखपतराय की श्वेत दाढ़ी बता रही थी कि वह सौ से ज्यादा वसन्त देख चुके हैं। जनगणना अधिकारी प्रेमदीप ने उनसे जब उनकी आयु पूछी तो उन्होंने बताया–'मेरे जितने लड़के हैं, लड़कियां ठीक उनसे आधी हैं। प्रत्येक पुत्र के उतने लड़के हैं जितनी उनकी बहनें, और जितने उनके भाई हैं उतनी उनकी लड़कियां हैं। इसी प्रकार प्रत्येक पुत्री की उतनी लड़कियां हैं, जितनी उनकी बहनें हैं तथा जितने भाई हैं उतने लड़के हैं।

इनके योग में से हम पुरुषों की संख्या निकाल दी जाए तो मेरी आयु निकल आएगी।

'अब आप ही बताइए कि मैं कितने वर्ष का हूं ?

'और यह भी आप ही बताइए कि मेरे कितने लड़के-लड़कियां हैं ?

'हां मैं यह तो बताना ही भूल गया कि मेरी आयु डेढ़ शताब्दी तक नहीं पहुंची है।' कह कर लखपतराय ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा।

जनगणना अधिकारी विचारमग्न है कि बाबा लखपतराय के फार्म में उनकी आयु, लड़के-लड़कियों की संख्या के खानों में क्या भरें ?

क्या आप प्रेमदीप की सहायता कर सकते हैं ?

100

विगत दिनों 'दिवाना स्मारक हॉकी प्रतियोगिता' के लिए लीग मैच खेले गए। प्रत्येक लीग में तीन विभिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि दलों ने भाग लिया।

लीग 'क' में भाग लेने वाले क्लब थे–आंध्र प्रदेश क्लब, महाराष्ट्र क्लब और तमिलनाडु क्लब।

कुछ मैचों के बाद बनी लीग तालिका को सुरेश ने अपने ढंग से नोट किया। इसमें एक विचित्रता यह थी कि अंकों के स्थान पर अक्षरों और प्रश्नचिन्हों का प्रयोग किया गया था। जब उसके मित्र बी० सुन्दरमूर्ति ने तमिलनाडु क्लब की स्थिति जाननी चाही तब उसने उसके समक्ष यह तालिका रख दी–

क्लब का नाम	मैच				गोल		अंक
	खेले	जीते	अनिर्णीत	हारे	किए	खाए	पाए
आंध्र प्रदेश क्लब	?	?	ग	?	च	ख	घ
महाराष्ट्र क्लब	क	ख	ग	ख	घ	छ	क
तमिलनाडु क्लब	क	ग	?	?	ख	ज	ग

(संकेत–छ = घ + ख तथा ज – छ = क)

सुन्दरमूर्ति चक्कर में पड़ गया। किस अंक के लिए कौन-सा अक्षर है, वह नहीं जानता। प्रत्येक अक्षर अलग अंक दर्शाता है।

क्या आप सुन्दरमूर्ति की सहायता कर सकते हैं ?

यदि हां, तो आपके कान में चुपके से एक बात बता दें कि महाराष्ट्र क्लब और तमिलनाडु क्लब के बीच खेले गए मैच में किसी एक टीम के गोलची ने इतनी दक्षता से खेल खेला कि उसने एक भी गोल नहीं होने दिया।

तो तालिका पूरी कीजिए और साथ ही यह भी बताना है कि इन क्लबों द्वारा खेले गए मैचों में स्कोर क्या था ?

101

'चैम्पियन्स कप' के लीग 'क' में खेले गए फुटबॉल मैचों में पिछले वर्ष पंजाब प्रान्त, हरियाणा प्रान्त, रेलवे और सेना की टीमों ने भाग लिया। सत्रह अक्तूबर को प्रदर्शित लीग तालिका आपके समक्ष है।

इसके अतिरिक्त इन मैचों की कुछ उल्लेखनीय बातें इस प्रकार हैं–

पंजाब और रेलवे में हुए मैच में पंजाब की ओर से नाथसिंह और सेवकराम ने गोल किए, जबकि गत वर्ष की चैम्पियन-टीम रेलवे की ओर से एकमात्र गोल उनके कप्तान बनर्जी ने किया।

गत वर्ष की रनर-अप हरियाणा की टीम के विनय कुमार बत्रा ने सभी मैच खेले और प्रत्येक में एक-एक गोल दागा।

लीग-तालिका को देखकर क्या आप बता सकते हैं कि किस टीम ने, किस टीम के विरुद्ध, कितने गोल किए, मैचों के परिणाम क्या रहे और कौन-सी दो टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी ? और हां, दी हुई लीग तालिका को भी आपने पूरा करना है।

तालिका : लीग 'क'

	मैच				गोल		
टीम	**खेले**	**जीते**	**हारे**	**बराबर**	**किए**	**खाए**	**प्राप्त अंक**
पंजाब	ज	र	ठ	द	ल	ज	च
हरियाणा	?	ठ	?	र	द	छ	?
रेलवे	द	ठ	र	र	ज	७	?
सेना	ज	र	ठ	?	१०	च	च

होली है। कितना प्यारा है यह स्वर ? क्या बच्चा क्या बूढ़ा, क्या छोटा क्या बड़ा सभी उस दिन होली के रंग में रंग जाते हैं। और तो और उस दिन दुश्मनों की दुश्मनी भी राह पलट कर दोस्ती में बदल जाती है।

फिर रामकिशोर और जगत किशोर की दुश्मनी भी क्या दुश्मनी थी। मामूली से गणित के सवाल पर ही तो झगड़ पड़े थे दोनों।

चलो अच्छा हुआ, झगड़ा मिटा। होली के दिन वे गले मिल ही गए। फिर रामकिशोर को अपने घर ले गया जगत किशोर।

वाह! क्या स्वागत किया उसने अपने दोस्त का। एक के बाद एक, मेज पर कुल २० प्लेटें मिठाई की सजी हुई थीं। सभी प्लेटों में अलग-अलग मिठाई। ऐसे में किसके मुंह में पानी न भर आएगा। फिर रामकिशोर तो ठहरा पूरा चटोरा। देखते ही देखते उसने रसगुल्ला उठा लिया।

ज्योंहि वह रसगुल्ला मुंह में डालने लगा त्योंहि जगत किशोर बोला, "ठहरो, रामकिशोर, रसगुल्ला बाद में खाना। पहले यह बताओ कि क्या तुम एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी इस प्रकार से सभी प्लेटों से मिठाई खा सकते हो ? यदि हां तो फिर इन प्लेटों को एक पंक्ति क्रम देकर रखो और फिर खाओ मिठाई।"

सुनकर रामकिशोर ने पहले उसे थोड़ा घूरा, फिर प्लेटों की ओर देखकर वह उन्हें अपनी पसंद के अनुसार क्रम देने में जुट गया। जब रामकिशोर ने उन प्लेटों को एक पंक्ति में रख दिया तो जगत किशोर ने मुस्कराते हुए पूछा-"अच्छा यह बताओ कि तुम इन प्लेटों को अलग-अलग कुल कितने क्रम दे सकते हो ? और कितनी देर में ?"

"अरे यह कौन-सा कठिन काम बताया। मैं इनके अलग-अलग सभी तरह के क्रम लगाकर दिखाता हूं।" और फिर रामकिशोर २० प्लेटों को विभिन्न तरीकों से एक ही पंक्ति में क्रम देने लगा तो क्रम देता ही रह गया।

क्या आप बता सकते हैं कि वह अपने मंतव्य में सफल होगा ?

मास्टर किशोरसिंह गत १० वर्षों से समीप के गांव में पढ़ाने जाते थे। वह गणित पढ़ाते थे।

एक दिन वापस आते हुए उन्हें पता चला कि उनकी गाड़ी पूरे डेढ़ घण्टे विलम्ब से आएगी। मन ही मन बड़े कुपित हुए। परन्तु कर भी क्या सकते थे। वह टहलने लगे। टहलते-टहलते प्लेटफार्म के छोर पर जा पहुंचे। वहां थोड़ी देर खड़े रहे। तभी उन्हें दूसरे छोर से मालगाड़ी की सीटी की गूंज सुनाई दी। अचानक उन्हें जाने क्या सूझा कि ज्यों ही मालगाड़ी के इंजन ने प्लेटफार्म के दूसरे छोर को छुआ, तभी उन्होंने अपनी घड़ी देखी। फिर जब इंजन उनके सामने से निकला, तब उन्होंने समय देखा और तीसरी बार मास्टरजी ने तब समय देखा, जब मालगाड़ी का अन्तिम सिरा भी उस प्लेटफार्म को पार कर गया। चूंकि गाड़ी ने उस स्टेशन पर रुकना नहीं था, अतः उसकी गति में कोई परिवर्तन नहीं आया था।

इस प्रकार मास्टरजी ने नोट किया कि मालगाड़ी ने प्लेटफार्म को पार करने में १६ सैकण्ड का समय लिया, जबकि उनके आगे से निकलने में गाड़ी को केवल १२ सैकण्ड का समय ही लगा।

चूंकि मास्टरजी वहां रोज आते थे और गांव का वह स्टेशन छोटा था, अतः सारा स्टाफ उन्हें जानता था। न जाने मास्टरजी को क्या सूझा कि उन्होंने स्टेशन मास्टर द्वारकानाथ से प्लेटफार्म की लम्बाई पूछी। द्वारकानाथजी ने भी खूब उत्तर दिया। कहने लगे–'मास्टरजी इस प्लेटफार्म की लम्बाई को चाहे गजों में नापा जाए अथवा फुटों में, दोनों ही स्थितियों में तीन-तीन विभिन्न अंकों वाली संख्याएं ही मिलेंगी। इन दोनों संख्याओं के अंक भी ऐसे होंगे कि जो अंक एक में है वह दूसरी में नहीं है। और साथ ही इस प्लेटफार्म की लम्बाई दो से विभाज्य नहीं है।'

एक बात और है कि गाड़ी की फुटों में लंबाई भी तीन अंकों में ही है। है न विचित्र बात। फिर बताइए कि गाड़ी और प्लेटफार्म की लंबाई कितनी थी ? और मालगाड़ी किस गति से जा रही थी ?

C1

104
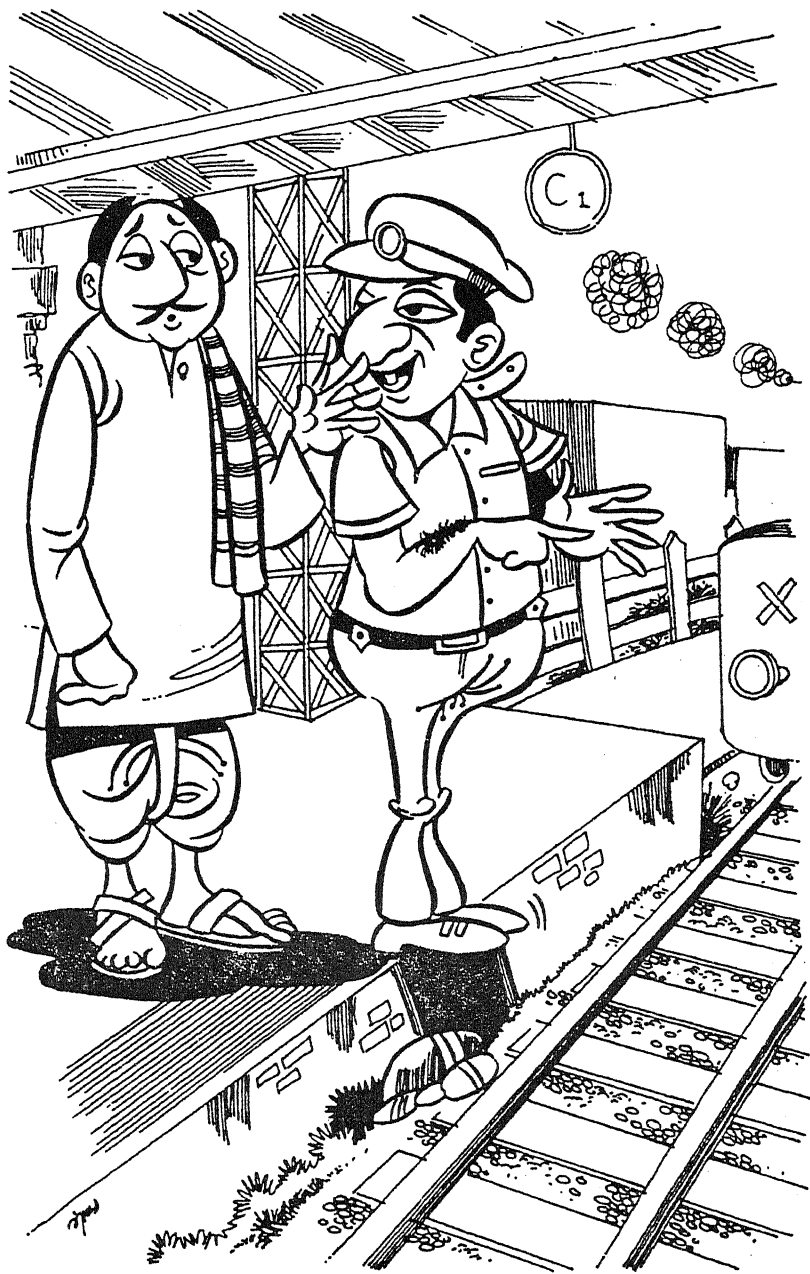
नन्हे रवि को बगीचे में खेलना बहुत अच्छा लगता है। उस दिन वह बड़ा खुश था क्योंकि बगीचे में खेलते हुए उसे फुदकता हुआ मेढक दिखाई दे गया था। फिर क्या था, वह लग गया उस मेढक के पीछे। मेढक ने लाख उछलकूद मचाई परंतु रवि ने उसे पकड़ कर ही दम लिया।

मेढक पकड़ कर उसने उसे तत्काल अपनी जेब के हवाले कर दिया। अभी वह सोच ही रहा था कि उसे कहां छिपाए तभी उसे ढूंढ़ती हुई उसकी मां बगीचे में आ गई। मां को देखते ही रवि आंख बचा कर वहां से सरक गया। घर पहुंच कर जब वह कमरे में गया तो उसे एक बड़ा शीशे का जार दिख गया। वह जार के पास गया और मेढक को जेब से निकाल कर देखने लगा। अभी वह कुछ सोचता कि मेढक उसके हाथ से फिसल कर जार में जा गिरा। बेचारा रवि, मेढक को निकालने के लिए उसने हाथ जार में डाला पर बेकार। मेढक उसके हाथ से सिर्फ छह इंच नीचे रह गया था। उसने आसपास देखा पर कोई भी वस्तु वहां ऐसी न थी जिसको जार में डालकर वह मेढक को बाहर निकाल पाता। वह रुआंसा हो उठा। अगर मां ने देख लिया तो। यह सोचकर परेशान था वह। खैर देखी जाएगी सोचकर वह सामने गुसलखाने में जा पहुंचा, मुंह धोया अभी वह तौलिए से अपना मुंह पोंछ ही रहा था कि बिजली की गति से एक विचार उसके दिमाग में कौंध गया। और कुछ ही देर के बाद मेढक उसके हाथ में था। हां एक बात अवश्य थी कि उसने मेढक निकालने के लिए किसी डंडे, कपड़े या किसी भी लंबी वस्तु की सहायता नहीं ली थी। बताइए फिर रवि ने मेढक कैसे बाहर निकाला ?

105
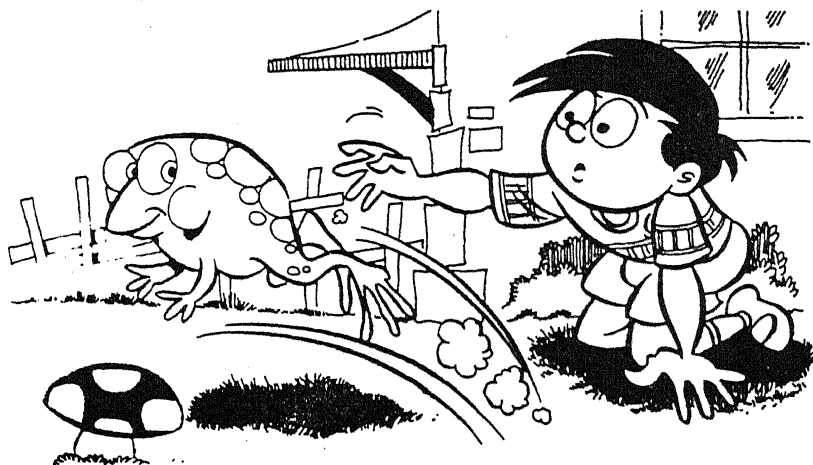
पिछले दिनों "शैंपियन हॉकी टूर्नामेंट" की बड़ी धूम थी। विजय ढींगड़ा ने इस टूर्नामेंट में खेले गए सभी मैचों का विवरण एक कागज पर नोट कर लिया। परंतु अचानक स्याही के धब्बे पड़ जाने के कारण उसकी विवरण तालिका इस योग्य नहीं रह गई थी कि उससे सभी मैचों के बारे में पता चल सके।

हा समाचार पत्रों को पढ़ने से पता चला कि टूर्नामेंट के सभी मैच समाप्त हो जाने के बाद ही यह तालिका बनाई गई थी।

सभी मैचों में कुल ६१ गोल हुए थे। पाकिस्तान की टीम ने जितने गोल किए उसने उतने ही गोल खाए भी थे। हालैंड की शक्तिशाली टीम ने जितने गोल खाए उससे दुगने गोल उसने ठोके थे। पाकिस्तान को ३-२ से हराने के बाद हालैंड ने दूसरा स्थान हथिया लिया था।

जहां केन्या हालैंड से हार गया था वहां भारत-पाकिस्तान के बीच खेले गए मैच में अंतर केवल एक गोल का ही था। न्यूजीलैंड की टीम ने अप्रत्याशित रूप से अपने सभी मैच जीत लिए थे।

केन्या जैसी टीम के साथ भी मैच बराबर हो जाने के कारण भारत अंतिम स्थान पर लुढ़क गया था। भारत के विरूद्ध जीतने वाले सभी देशों ने पहले हाफ में जितने गोल दागे उन्होंने उतने ही गोल दूसरे हाफ में भी दागे।

स्पेन-हालैंड के बीच हुए मैच में विजेता टीम ने अंतिम क्षणों में दो गोल ठोके थे।

बताइए भारत-स्पेन; स्पेन-हालैंड और केन्या-हालैंड के बीच हुए मैचों में कुल कितने गोल हुए ?

देश	अंक	गोल		केन्या	न्यूजीलैंड	पाकि०	भारत	स्पेन	हालैंड
		किए	खाए						
केन्या	२	८	१५	–	०-●	२-५	३-३	●	●
न्यूजीलैंड	●	१०	४	●-०	–	३-१	○	●	●
पाकिस्तान	४	●	●	५-२	१-३	●	○	●	२-३
भारत	१	८	१५	३-३	● ●	● ●	–	●	●
स्पेन	●	१०	६	२-●	● ●	●	○	●	●
हालैंड	●	●	●	● ●	● ●	३-२	○	●	–
योग	●	●	●	● ●	● ●	●	○ ○	●	●

106

'यूथ इण्टरनेशनल' का दसवां वार्षिक सम्मेलन गत वर्ष तमिलनाडु की राजधानी मद्रास में हुआ। तीन दिन के इस सम्मेलन में दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई और मद्रास के युवकों ने भाग लिया।

कलकत्ता से आए युवकों का दल समीर पाल के नेतृत्व में आया था। इस दल की संख्या दिल्ली से आए रंधीर गुप्ता के दल के आधे से नौ अधिक थी। बम्बई से आए दल का नेतृत्व सुनील करमठकर कर रहा था। सुनील के साथियों की संख्या दिल्ली से आए दल के दोगुने से केवल सात कम थी।

मद्रास के दल का नेतृत्व आर० सुब्रह्मण्यम ने किया था। चूंकि यह दल मेजबान नगर का दल था, अतः इस दल की सदस्य संख्या सबसे अधिक थी। मद्रास का यह युवक-दल सदस्य संख्या में दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई की सम्मिलित संख्या के समान था।

सम्मेलन की समाप्ति के अगले दिन युवकों को मद्रास के प्रसिद्ध पर्यटन-स्थल दिखाने का कार्यक्रम भी था। लेकिन दिल्ली से आए सतीश नरूला ने अपना जोर केवल विजयवाहिनी फिल्म स्टूडियो देखने में लगाया, जिसमें वह सफल रहा। दिल्ली से आए चार युवकों ने स्नेक-पार्क और तीन ने म्यूजियम देखा। इनमें दोनों स्थान देखने वाली जुगल-जोड़ी–राम और श्याम भी सम्मिलित हैं। इनके एक साथी घनश्याम ने मद्रास देखने के बजाय महाबलीपुरम देखना पसन्द किया। दिल्ली से आए शेष युवकों में से चार को छोड़ कर बाकी सबने मद्रास बन्दरगाह (पोर्ट) और उसके साथ लगे बर्मा बाजार को देख कर ही सन्तोष कर लिया।

सम्मेलन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में दो बसों पर इन युवकों को घुमाने का प्रबन्ध था। इन बसों में एक बस बड़ी थी। बड़ी बस में यात्रियों के बैठने की क्षमता छोटी बस से ड्योढ़ी थी। इन बसों में भ्रमण करने वालों में कलकत्ता और मद्रास के पूरे दल थे। बम्बई के दल के तीन युवकों को छोड़ कर शेष सभी थे। दिल्ली के दल के चार युवक इस दल में थे। बम्बई के तीन युवक रामेश्वरम चले गए थे।

इन दोनों बसों में एक-एक पर्यटक-गाइड, एक-एक चपरासी भी थे। दोनों बसों में एक-एक सीट कण्डक्टर के लिए भी थी। ये दोनों बसें एक साथ म्यूजियम गईं। वहां से स्नेक पार्क। स्नेक पार्क से बड़ी बस बन्दरगाह चली गई, जहां से वापसी में वह बर्मा बाजार गई। बाद में बस वापस यूथ होस्टल आ गई, लेकिन दिल्ली के चारों युवक मार्ग में उतर गए। वे वहां से 'मेरीना बीच' चले गए।

छोटी बस स्नेक पार्क से सीधी 'मेरीना बीच' गई। लेकिन बीच पर पहुंचने से पहले ही इसमें से तीन युवक उतर कर वापस यूथ होस्टल आ गए।

बाद में एकत्र की गई सूचना से ज्ञात हुआ कि इस सम्मेलन में भाग लेने आए युवकों में से पोर्ट और बर्मा बाजार देखने वालों की संख्या ४६ थी।

क्या आप बता सकते हैं कि दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई से कितने-कितने युवकों का दल इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आया था ? सम्मेलन में भाग लेने वाले युवकों की कुल संख्या बताना भी न भूलिएगा !

सेठ रोशनलाल के बगीचे में माली का भी एक कमरा था। बुरा हो पिछले दिन हुई उस तूफानी बारिश का जिसके कारण उस कमरे की १० फुट लंबी और ६ फुट ऊंची पिछली दीवार ढह गई थी।

माली के गिड़गिड़ाने पर सेठ जी ने उस दीवार को बनवाने का फैसला कर लिया। माली के जाने के बाद सेठजी ने अपने पुत्र को कह कर सुंदर और लक्ष्मी नामक राज मिस्त्रियों को बुलवा लिया। रुपए-पैसे तय हो गए तब सेठजी ने पूछ ही लिया, 'क्यों सुंदर, कब तक बन जाएगी दीवार।'

सुंदर ने अपने कागज पर दीवार का नक्शा बनाया और कुछ सोचकर बोला, 'सेठजी यह दीवार तो मात्र एक घंटे में ही बन जाएगी।'

सुंदर की बात सेठ जी के पास बैठा उनका पुत्र बालकराम भी सुन रहा था। बालकराम को 'गिनेस बुक आफ रिकार्ड' पढ़ने और नए रिकार्ड बनाने की बड़ी इच्छा रहती थी।

उनकी बातें सुनकर वह रह न सका और बोल ही पड़ा, 'पिताजी, इस दीवार को बनाने के लिए अगर आप ४००० मिस्त्री लगा दें तो हम भी विश्व रिकार्ड बना सकते हैं।'

बालकराम की बात सुनकर सेठजी कुछ बोले तो नहीं पर वह बालकराम को तेज नजरों से घूरने लगे।

तो आप ही बताइए कि ४००० मिस्त्री लगाने पर दीवार कितनी देर में बन सकती है ?

108

पंकज की दादी अपना अधिकतर समय पूजा-पाठ में बिताती थी। लेकिन उनके पोते पंकज को उनका हर समय माला फेरते रहना पसंद न था। वह चाहता था कि दादी उसे नई-नई कहानियां सुनाए। और उस दिन तो पंकज ने हद ही कर दी।

दादी जब पूजा-पाठ करके अपने कमरे में गई तब पंकज चुपके से पूजा के कमरे में गया और दादी की पूजा की मनकों वाली माला उठा लाया। उसने माला के मनके गिने जो ६६ थे। बाद में माला उसने अपने बस्ते में छुपा दी और अगले दिन स्कूल चला गया।

स्कूल में छुट्टी के समय पंकज जब अपना खाना बस्ते से निकालने लगा तब उसके मित्र रवि और कृष्ण भी पास ही बैठे थे। माला देखकर वह उसे लेने के लिए झपटे। पंकज उन्हें रोकता इससे पहले ही माला टूट गई। तीनों के हाथ में माला के कुछ मनके रह गए।

तभी मास्टर जी आ गए। पंकज को रुआंसा देख उन्होंने कारण जानना चाहा। पंकज ने हाथ के मनके दिखाते हुए सारी बात बता दी।

तीनों के हाथ में मनकों की मात्रा देखकर मास्टर जी मुस्कराए और कहने लगे, 'देखो बच्चो, यदि पंकज अपने मनकों में से कृष्ण को उतने ही मनके दे दे जितने कि पहले से उसके पास हैं तब क्या होगा ?'

पंकज एकदम बोल उठा, 'कृष्ण के पास सबसे ज्यादा मनके हो जाएंगे।'

'अच्छा, फिर कृष्ण रवि को उतने मनके दे देगा जितने कि रवि के पास हैं तब।'

'जी तब मेरे पास सबसे ज्यादा मनके हो जाएंगे।' कृष्ण ने कहा।

'ठीक है कृष्ण, फिर तुम पंकज को उतने ही मनके दे देना जितने उसके पास बचे होंगे, तब तो ठीक हो जाएगा।' कहकर मास्टर जी हंसने लगे।

सभी बच्चे सोचने लगे और एकाएक समवेत स्वर में बोले, 'फिर तो सबके पास एक जितने मनके हो जाएंगे।'

तो बताइए माला टूटने पर किस बच्चे के हाथ कितने मनके लगे थे ?
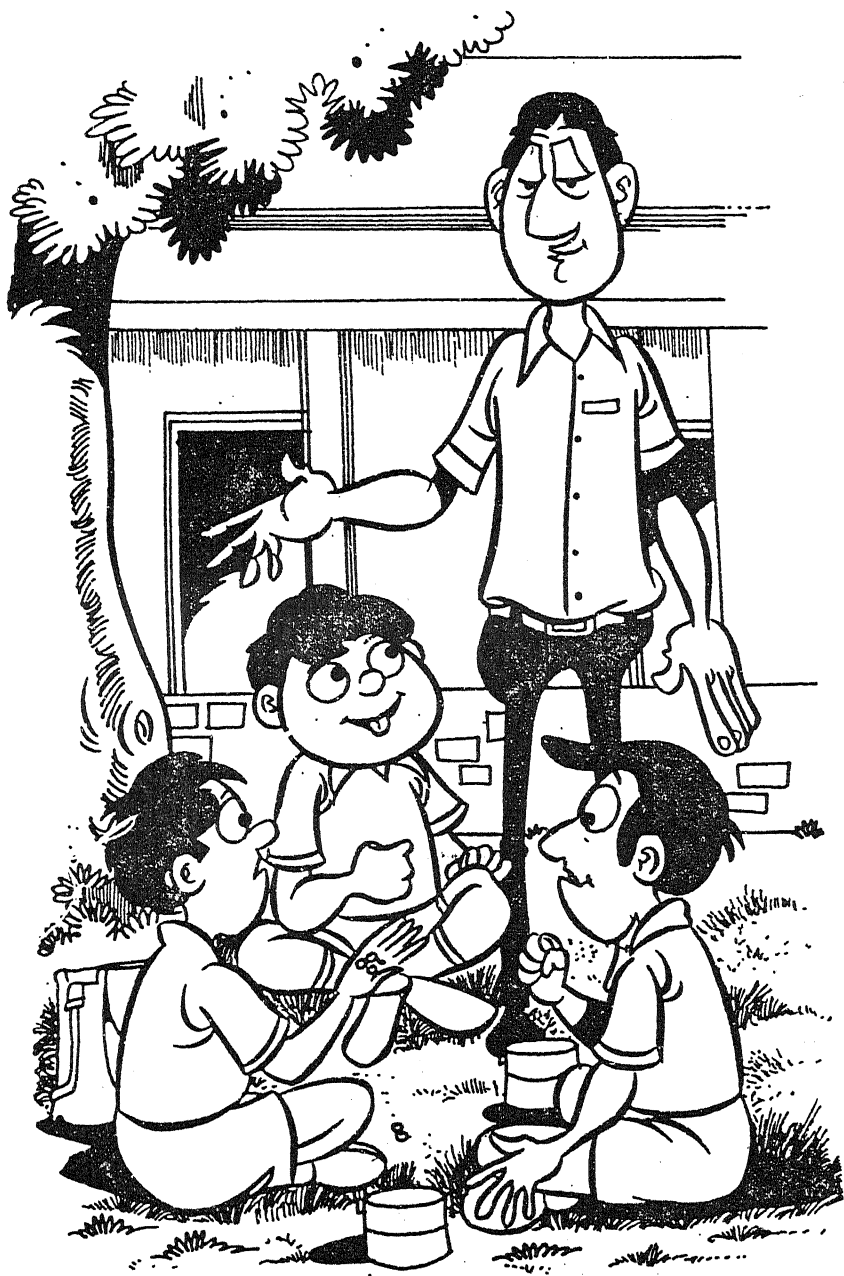
मोहन को इस बार व्यापार में भारी लाभ हुआ था। पूरे शहर में उसकी छह दुकानें थीं। इन दुकानों से पूरे रुपयों में हुए लाभ की राशि की संख्या यद्यपि सात अंकों की थी तथापि इसमें ७ का अंक नहीं था। पांच से विभाज्य इस संख्या के अंतिम तीन अंकों का योग पहले चार अंकों के योग का आधा ही था।

इस संख्या में बाएं से पांचवां और छठा अंक समान था। सभी अंकों का योग २७ था। तीसरा और चौथा अंक दो अंकों की जिस विषम संख्या को दर्शा रहे थे उसका वर्गमूल ही पहले स्थान पर था।

और हां एक महत्वपूर्ण बात यह कि यह संख्या छह विभिन्न अंकों से बनी है। तो फिर बताइए मोहन को कुल कितने रुपए का लाभ हुआ ?

110

बहुत विशाल था वह तेलवाहक जहाज 'लिदेरुग'। अचानक उससे टकरा जाने के कारण यात्रीवाहक जहाज 'एम०वी० दिलीप' के बाएं भाग में एक छेद हो गया और यह छेद भी कोई छोटा-मोटा नहीं था। पूरे ५ फुट व्यास का यह छेद सागर तल से मात्र आठ फुट ऊंचाई पर था। सभी यात्री डरे हुए थे। उनके डर की बात सही भी लगती थी अशोक को।

अशोक का कहना था कि उस समय सागर में ज्वार का समय था और प्रति घंटे सवा फुट की गति से सागर का जल स्तर बढ़ रहा था।

बताइए छेद तक जलस्तर कब पहुंचेगा ?
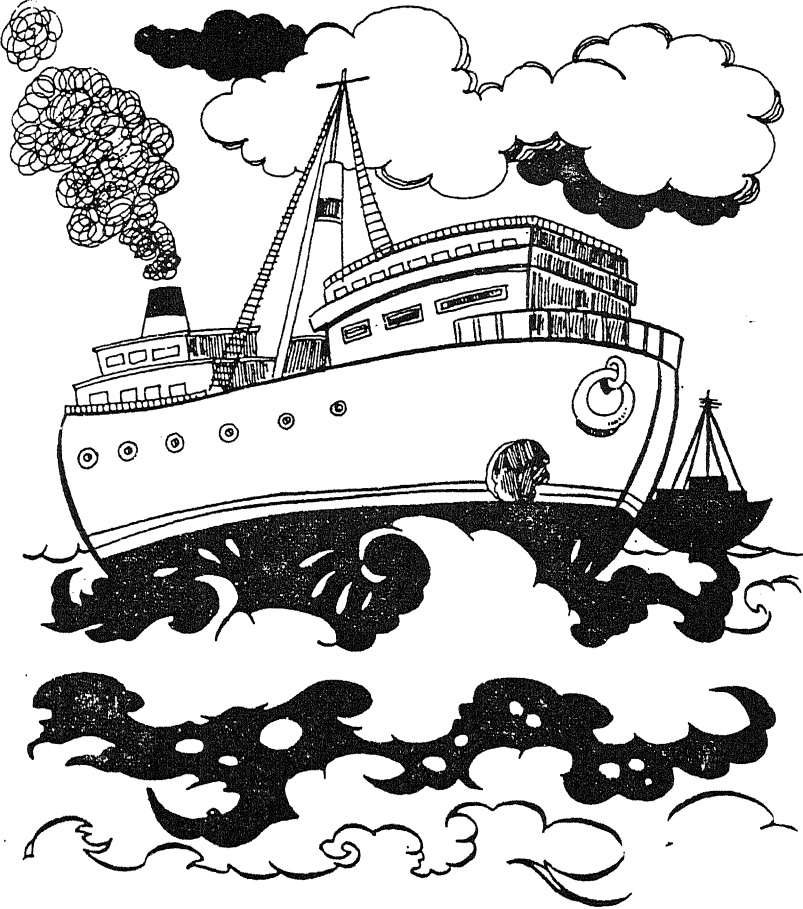
"त्यौहार का दिन होने के कारण आज मेरी दुकान पर काफी भीड़ थी। आज तो सुबह के दो घंटों में ही कल पूरे दिन से अधिक आय हो गई।" रामेश्वर ने बताया।

"कल और आज कितनी आय हुई तुम्हें ?" बनवारी चाचा ने पूछा।

"चाचा, यह छोड़ो। हां दोनों दिनों की कुल आय चार अंकों में है।"

"चार अंकों में।" चाचा खुश होकर बोला। "पर यह तो बता आज कितनी आय हुई।"

"मेरी आज की आय का क्रम उलट दो तो वह कल की आय बन जाएगी। सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि दोनों ही दिनों की आय की संख्याएं तीन अंकों की पूर्ण वर्ग संख्याएं हैं।" कहकर रामेश्वर मुस्कराया।

चाचा बनवारी गहरी सोच में पड़ गए। और अभी तक सोच में पड़े हुए हैं। क्या आप ही उनकी सहायता करेंगे ? तो फिर बताइए कि रामेश्वर की आज और कल की आय कितनी थी ?

112

चीन में हुई एशियाई खेल प्रतियोगिताओं में विभिन्न देशों के खिलाड़ी आए हुए थे। पहले दिन सभा भवन के बाहर चीन, जापान, मलेशिया, सिंगापुर और हांगकांग के खिलाड़ी–वांगयान, टिमवान, जो ची ली, ताओ ती और मा उनत्स चुंग आपस में मिले तो मित्र बन गए। ये मित्र एथलेटिक्स, जिम्नास्टिक, फुटबॉल, तीरंदाजी और हॉकी की प्रतियोगिताओं में भाग लेने आए थे। इन्हें खिलाड़ी आवास भवन की स्वदेशी, पहली, दूसरी, तीसरी और चौथी मंजिल में कमरे मिले थे।

चीनी खिलाड़ी ने एथलेटिक्स में भाग लिया।

हॉकी खिलाड़ी टिमवान पहली मंजिल पर रहता था। वह जापान या सिंगापुर से नहीं आया था।

फुटबॉल खिलाड़ी हांगकांग का था और तीसरी मंजिल पर रहता था।

जापानी खिलाड़ी को उसकी मंजिल पर छोड़ते हुए वांग ने अपनी मंजिल पर पहुंचकर मा उनत्स को शुभरात्रि कही जो बाद में ऊपर की मंजिल पर चढ़ गया।

ताओ ती ने तीरंदाजी में भाग लिया परंतु वह और जो ची ली अंतिम मंजिल पर नहीं रहते थे।

बताइए ये खिलाड़ी किस देश से आए थे ? इन्होंने किस प्रतियोगिता में भाग लिया और इन्हें किस मंजिल पर कमरा मिला हुआ था ?

113
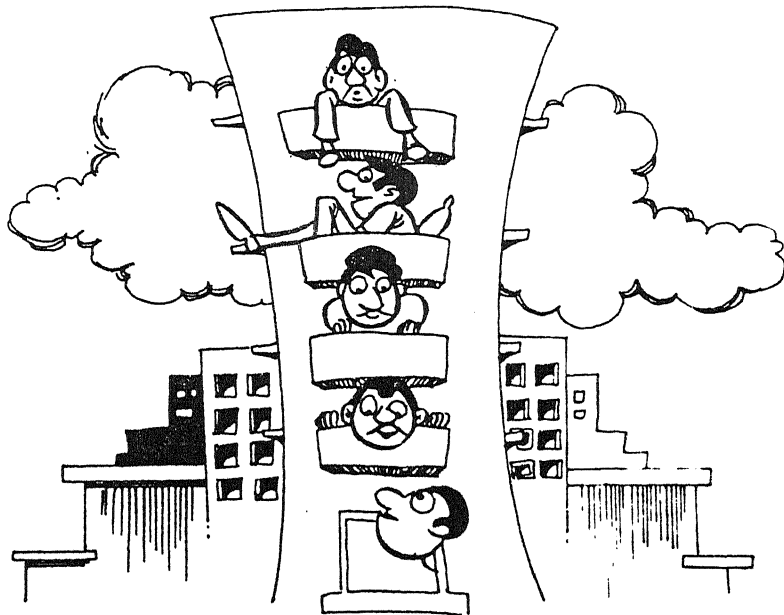
परीक्षा परिणाम की प्रतीक्षा प्रत्येक विद्यार्थी बड़ी उत्सुकता के साथ करता है। हाल ही में दिल्ली शिक्षा मण्डल द्वारा आयोजित दसवीं कक्षा के जो परिणाम घोषित हुए, उससे कई विद्यार्थियों की मनोकामनाएं पूरी हुईं और कुछ विद्यार्थी केवल पास ही हो पाए।

इस परीक्षा के पहले पांच स्थान कोटला मुबारकपुर, पहाड़गंज, बसई दारापुर, लाजपत नगर और शकूर बस्ती में रहने वाले बच्चों–कामेश्वर हलदर, बलजीत कपूर, रमेश शंकर, रीता दहिया और सविता गुप्ता ने पाए थे। इन पांचों के स्कूल थे–आदर्श विद्या निकेतन, नवज्योति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय, राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय और सेवानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।

आदर्श विद्या निकेतन और सेवानन्द विद्यालय दोनों में ही सहशिक्षा थी।

बसई के राजकीय विद्यालय के लड़के ने पहला स्थान पाकर सबको अचम्भित कर दिया था, जबकि तीसरा स्थान पहाड़गंज के रमेश ने प्राप्त किया।

आदर्श विद्या निकेतन, जिसमें लाजपतनगर से पढ़ने के लिए कोई नहीं आता था, को राजकीय बालिका विद्यालय से पूर्व स्थान प्राप्त हुआ था।

कोटला के कामेश्वर को उसके पिता ने किसी निजी संस्थान के स्कूल में दाखिल करवाया था, जबकि शकूर बस्ती की सविता की स्थिति ठीक इसके विपरीत थी।

लाजपत नगर में रहने वाले बच्चे ने पहाड़गंज में रहने वाले बच्चे को पछाड़ दिया था।

लड़कियों को जो स्थान प्राप्त हुए, उनसे पहले और बाद वाले स्थानों पर लड़कों का अधिकार था।

क्या आप बता सकते हैं कि कहां रहने वाले किस स्कूल के विद्यार्थी ने कौन-सा स्थान प्राप्त किया ?

114

पिछले दिनों नए धारावाहिकों के जिन पहले पांच प्रस्तावों को स्वीकृति मिली वे थे, 'अमन के दुश्मन', 'काली आंधी', 'निर्णय', 'प्रतिज्ञा' और 'विषबेल'। इनके लेखक थे–एच० चंद्र, एस० एच० 'चंद्र', जनक पाल, प्रदीप सेन और रमा वाही। निर्माता आर० कुमार शर्मा, जगदीश लखनपाल, दिनेश स्वेला, सत्येंद्र प्रकाश और योगी खोसला ने अपने धारावाहिकों के निर्देशन का भार निर्देशकों–एस० प्रकाश, तरनजीत, पी० सिंह, रविंद्र मलिक और सुनायक पाठक को सौंपा था।

दी गई सूचनाओं के आधार पर बताइए कि इन धारावाहिकों के लेखक, निर्माता तथा निर्देशक कौन थे ?

लेखक एस० एच० 'चंद्र' और निर्देशक एस० प्रकाश पहली बार किसी धारावाहिक में एक साथ थे जबकि 'अमन के दुश्मन' निर्माता दिनेश का पहला प्रोजेक्ट था।

निर्माता आर० कुमार शर्मा ने एच० चंद्र की कहानी पर जो धारावाहिक बनाया उसे या 'अमन के दुश्मन' को तरनजीत ने निर्देशित नहीं किया था।

लेखिका रमा वाही की 'काली आंधी' का निर्देशन रविंद्र मलिक का नहीं था। निर्माता जगदीश लखनपाल ने जनकपाल की कहानी का निर्देशन सुनायक पाठक को सौंपा था।

सत्येंद्र प्रकाश के 'विष बेल' तथा धारावाहिक 'निर्णय' के लेखकों के नामों में 'चंद्र' आता है।

लेखक प्रदीप सेन, निर्माता योगी खोसला या पी० सिंह कभी भी किसी एक धारावाहिक में एक साथ नहीं रहे।

115
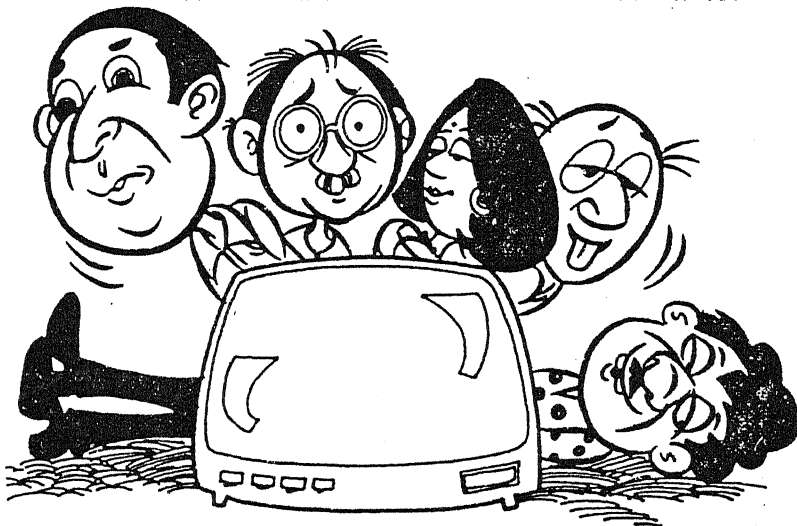
आम चुनाव हो रहे हों तो लोगों को तरह-तरह के तमाशे देखने को मिलते हैं। प्रत्याशी अपने प्रचार के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते। उत्तर-प्रदेश, गुजरात, मध्य-प्रदेश, महाराष्ट्र और हरियाणा के पांच प्रत्याशियों धवल नाटा, दृढ़ प्रतिज्ञ प्रसाद सिंह, बनवारी लाल, रजनी कांत और राम चरित्रयानी के चुनाव एजेंटों ने (जो करतार चंद, चंद्रिका प्रसाद, छत्रसाल, जाल बाटलीवाला और दामोदर खेतवानी में से थे) चुनाव प्रचार के लिए विभिन्न तरीके–घर-घर संपर्क, धर्मेंद्र को बुलाना, देवानंद से प्रचार कराना, लकड़ी के विशाल इंजन को सड़कों पर चलाना और सिने तारिकाओं के दल से प्रचार कराना–अपनाए थे।

घर-घर संपर्क को मध्य-प्रदेश के प्रत्याशी ने विशेष महत्व प्रदान किया था। करतार महाराष्ट्र से प्रत्याशी का एजेंट था। फिल्म अभिनेता रजनी कांत को उसके चुनाव एजेंट ने ही बंबई से सिने तारिकाओं का दल मंगवाने का सुझाव दिया था। परंतु उसका एजेंट छत्रसाल न था और न ही उसने महाराष्ट्र से चुनाव लड़ा था। जाल बाटलीवाला धवल नाटा का एजेंट था। उसने नाटा के चुनाव चिन्ह के विशाल प्रतीक को ही प्रचार का माध्यम बनाया था। नाटा उत्तर प्रदेश से प्रत्याशी नहीं था।

देवानंद ने चुनाव घोषणा से लेकर मतदान के दिन तक बंबई से बाहर पग भी न रखा था। परंतु उसने जिस प्रत्याशी के समर्थन में प्रचार किया था वह दृढ़ प्रतिज्ञ न थे।

बनवारी लाल ने हरियाणा से चुनाव लड़ा था। उसके प्रचार का काम दामोदर ने कुशलतापूर्वक संभाला था।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर क्या आप बता सकते हैं कि किस प्रत्याशी ने कौन से प्रांत से चुनाव लड़ा, उसका चुनाव एजेंट कौन था और उसने प्रचार का कौन-सा माध्यम अपनाया ?

116

नगर परिवहन की बसें वहां रुकती थीं। लोगों को धूप और बरसात से बचाने के लिए वहां एक छोटी सी छतरीनुमा छत बनी हुई थी जिसके नीचे आठ-दस व्यक्ति खड़े हो सकते थे।

गणतंत्र दिवस की परेड के बाद तो उस स्थान पर मेला सा लग गया था। तभी बिजली कड़की और बादल गरज उठे। काले-काले बादलों को देखकर सभी उस छतरी के नीचे खड़े होने के लिए भागे। परन्तु छोटी सी छतरी के नीचे सौ-सवा-सौ व्यक्ति कैसे खड़े होते। बड़े खुशनसीब थे जिन्हें उसके नीचे जगह मिल गई थी।

एक तो बादलों की गड़गड़ाहट और ऊपर से बस का न आना। पूरे दस मिनट बीत गए पर बस न आई। पर एक बात साफ दिखाई दे रही थी कि जो लोग छतरी के नीचे खड़े नहीं हो सके थे वे भी नहीं भीगे थे।

बताइए छतरी के बाहर खड़े लोग क्यों नहीं भीगे थे ?

117

महानगर बम्बई में 'सामना' फिल्म प्रदर्शित हो रही थी। बसन्त लघु प्रेक्षागृह में भी इसके एक शो का आयोजन किया गया था। दर्शकों में विभिन्न प्रान्तों के लोग थे।

मराठी मूल के दर्शक कुल दर्शकों का ३० प्रतिशत थे, जिनमें से केवल २ दर्शक अंग्रेजी जानते थे। केवल हिन्दी जानने वाले दर्शक केवल मराठी जानने वाले दर्शकों से दो कम थे। प्रेक्षागृह में कुल दर्शकों के १ प्रतिशत से भी एक कम दर्शक ऐसे थे जो केवल अंग्रेजी भाषा जानते थे।

दक्षिण भारत से आए हुए ४८ दर्शकों में से दो दर्शक ऐसे भी आए थे जो केवल दक्षिण भारतीय भाषाएं ही जानते थे। जबकि १६ दर्शकों ने बम्बई आने के बाद केवल मराठी और १२ दर्शकों ने केवल हिन्दी सीख ली थी। इनके अतिरिक्त सीतारामलु ऐसे थे, जिन्होंने मराठी के साथ हिन्दी भी सीख ली थी तथा अंग्रेजी उन्होंने स्कूल में ही सीख ली थी। शेष अंग्रेजी भी जानते थे।

हिन्दीभाषी क्षेत्रों से आए लोगों में से आधे ऐसे थे जो मराठी सीख गए थे। तीन दर्शकों ने बम्बई आने के बाद अंग्रेजी सीखी थी।

क्या आप बता सकते हैं कि प्रेक्षागृह में कुल कितने दर्शक उपस्थित हैं ? इनमें कौन-सी भाषा जानने वाले दर्शक सबसे ज्यादा हैं और वे कितने हैं ?

118

नरेन्द्र और घनश्यामदास, दोनों मित्र भारत की विश्व-कप में हुई विजय से बड़े प्रसन्न थे। वे इस उपलब्धि की चर्चा घण्टों तक करते रहे। अन्ततः रात गहरी हो जाने के कारण सो गए।

घनश्यामदास ने स्वप्न में देखा कि भारत का सामना करने के लिए विश्व के चोटी के खिलाड़ियों की एक 'विश्व टीम' तैयार की गई। इस 'विश्व टीम' के साथ हुए एक दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय मैच में भारत ने ६० ओवरों में २३४ रन बनाए।

बाद में 'विश्व टीम' ने जब अपनी पारी प्रारम्भ की, तब उसके बल्लेबाज शुरू से ही दब कर खेले। घनश्यामदास जब प्रातः उठा तब उसने अपनी स्मरण-शक्ति पर दबाव दे कर तालिका तैयार की। लेकिन इस तालिका को लिखते समय कुछ बातें वह भूल चुका था।

क्या आप नीचे दी गई जानकारी की सहायता से तालिका पूरी कर सकते हैं ?

जहीर ने बोथम से अधिक और मार्श से कम रन बनाए थे।

टर्नर ने कपिल की गेंदों पर लगातार दो शानदार छक्के मारे और मदन की गेंदों पर आउट होने से पूर्व दो चौके भी लगाए। दो बल्लेबाजों का व्यक्तिगत स्कोर ६ रन और १६ रन था।

रिचर्ड्स ने पहली ही गेंद को उठाने का प्रयास किया। गेंद सीधी विकटों को उड़ाती हुई निकल गई। लेकिन यह गेंद महेंद्र की नहीं थी।

यशपाल ने कपिल की गेंद पर बोथम का सुंदर कैच लिया। एक कैच संदीप ने भी लिया। बाद में जिसे "मैन ऑफ दी मैच" का पुरस्कार मिला उसके शिकार ने मात्र आठ रन बनाए थे।

तालिका पूरी करने के साथ-साथ यह भी बताइए कि "मैन ऑफ दि मैच" कौन था।

तालिका

१.	गार्डन ग्रीनिज–बो० संधू	–	०
२.	ग्लेन टर्नन	–	
३.	विवियन रिचर्ड्स	–	
४.	जहीर अब्बास–स्टम्प किरमानी	–	
५.	क्लाइव लायड–कैच गावस्कर बो० बिन्नी	–	७
६.	इयान बाथम	–	
७.	रोडनी मार्श .	–	

८.	रिचर्ड हैडली—कैच यशपाल बो० महेन्द्र	—	५
९.	इमरान खान—आउट नहीं	—	३
१०.	जेफ थामसन—बो० कपिल	—	२
११.	बाब विलिस—कैच यशपाल बो० महेन्द्र	—	१
	अतिरिक्त	—	११
	योग		९१

विकेट पतन : १-०, २-०, ३-२४, ४-३६, ५-५३, ६-६०, ७-७४, ८-८५, ९-८७

गेंदबाजी—

कपिल—७-१-२-२५   महेन्द्र—९.३-३-३-१५

संधु—६-२-२-१०   मदन—५-१-१-१२

बिन्नी—७-२-१-१८

119

उस दिन रंधीर देर रात तक उस पुस्तक को पढ़ता रहा। और वास्तव में वह पुस्तक थी भी इतनी मजेदार। पुस्तक थी 'गुलिवर की यात्राएं'। अतः रंधीर के लिए उसे अधूरा छोड़ पाना अत्यन्त कठिन था।

जब रंधीर पुस्तक को समाप्त करके सोया तब रात के दो बज चुके थे। इसे पुस्तक पढ़ने का प्रभाव कहिए अथवा रंधीर की सुप्त इच्छाओं का प्रभाव कि सोते ही वह स्वयं भी विचित्र लोक में खो गया।

इस विचित्र लोक में ठिगने से ठिगना व्यक्ति भी सात गज लम्बा था। विचित्र लोक का एक निवासी 'हसिं जीमरा' रंधीर का मित्र बन गया। 'जीमरा' ने रंधीर को अपने नगर 'लीह दे' के सभी ऐतिहासिक भवन और अन्य आकर्षक इमारतें एक-एक करके दिखाईं।

रंधीर इन्हें देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। परन्तु 'लीह दे' की इतिहास प्रसिद्ध मीनार 'चीऊं सेबस बतुकु' देख कर तो वह चकित ही रह गया।

इस 'बतुकु मीनार' की प्रत्येक मंजिल अपने से पहले वाली मंजिल का पौन भाग थी। और इस मीनार की नीचे की पहली तीन मंजिलों की ऊंचाई और उनसे ऊपर स्थित सबसे ऊपर वाली तीन मंजिलों की ऊंचाई का इंचों में जो अन्तर था, वह किसी पूर्ण संख्या का वर्ग था।

इस 'बतुकु मीनार' की छोटी से छोटी मंजिल भी इतनी बड़ी थी कि 'लीह दे' का कोई भी निवासी वहां सिर झुकाए बिना खड़ा हो सकता था।

हां, यदि इस मीनार में एक मंजिल और होती तब यह मीनार 'लीह दे' से दस हजार मील दूर 'सरि पे' की ४०० गज ऊंची 'लफिए मीनार' से थोड़ी-सी ही छोटी रहती।

क्या आप बता सकते हैं कि 'लीह दे' की 'सेबस चीऊं बतुकु' मीनार की ऊंचाई कितनी थी ?

'राष्ट्रीय पथ परिवहन निगम' की बसें विभिन्न राज्यों की राजधानियों को जोड़ती हुई चलती हैं। ये बसें तीन श्रेणियों–साधारण, डीलक्स और वातानुकूलित–की होती हैं।

इन बसों के ठसाठस भर कर चलने के बावजूद भी निगम को गत वर्ष दो करोड़ रुपए की हानि हुई। जांच-पड़ताल करने के उपरान्त ज्ञात हुआ कि निगम को यह हानि बिना टिकट यात्रा करने वालों के कारण हुई है। बिना टिकट यात्रा को रोकने के लिए एक 'विशेष निरीक्षण दल' का गठन किया गया।

विगत दिनों निगम के उच्चाधिकारियों को सूचना मिली कि दिल्ली-जयपुर मार्ग पर चलने वाली बसों, विशेषकर डीलक्स बसों में बिना टिकट यात्रा करने वालों की संख्या काफी है और ये बिना टिकट लोग टिकट के आधे पैसे संवाहक (कण्डक्टर) को दे कर यात्रा करते हैं।

यह सूचना पा कर 'निरीक्षण दल' के एक निरीक्षक गौरी शंकर ने जयपुर जाने वाली एक डीलक्स बस पर अलवर के निकट छापा मारा। ४० यात्रियों की क्षमता वाली इस बस में ३७ यात्री थे।

इनमें से २० यात्रियों ने ४ दिन पूर्व टिकट आरक्षित करवाए थे। ८ व्यक्तियों ने ३ दिन पूर्व आरक्षण करवाया था। इनमें से दो ने एक दिन पूर्व अपने आरक्षण रद्द करवाए थे। ६ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने एक दिन पूर्व आरक्षण करवाया।

९ यात्रियों ने बस में ही टिकट लिए थे, जबकि एक दिन पूर्व आरक्षण करवाने वाले द्वारकादास और उनका परिवार विलम्ब से अड्डे पर पहुंचने के कारण बस न पकड़ पाया।

गौरी शंकर ने बड़ी बारीकी से सभी यात्रियों के टिकटों को जांचा और पाया कि सभी यात्रियों के पास टिकट थे। किसी भी यात्री का टिकट पुरानी तिथि का अथवा जाली नहीं था।

निरीक्षक टिकटों की जांच करके कण्डक्टर के पास वाली खाली सीट पर बैठ गए। इसी बीच सीट नं० १८ पर बैठे विनय कुमार ने अपने सहयात्री के कान में कहा 'अरे साहब, मैं शर्त बद सकता हूं कि इस बस में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनके पास कोई टिकट नहीं है।'

सहयात्री कृपाल सिंह ने चारों ओर दृष्टि घुमाई और कहा 'हां भाई साहब आप ठीक ही कहते हैं।'

क्या आप बता सकते हैं कि ये टिकटहीन व्यक्ति कौन हैं, कहां हैं ? और हां, द्वारकादास के परिवार के कितने सदस्य उनके साथ इस बस में जाने वाले थे ?

सूखी नदी पर तीन पुल। तीन मित्र–रामू, श्यामू, मोहन। मित्र नदी के उस पार। उनका घर इस पार। तीनों सोच में–किस पुल से जाएं, ताकि जल्दी से जल्दी घर पहुंच जाएं। सबसे जल्दी घर पहुंचने का उपाय बताया रामू ने। भला कौन-सा उपाय बताया होगा ?

पहेलियों के उत्तर

१:–शीला ने रिक्शे में कुल २५ मिनट यात्रा की।
संकेत : कार के सूरज टाकीज पर मिलने के कारण घर पहुंचने में कुल १० मिनट समय की बचत हुई। यह समय कार के सूरज टाकीज से बस अड्डे तक जाने और वापस सूरज टाकीज तक पहुंचने में लगना था। अतः कार सूरज टाकीज पर ४ बज कर ५५ मिनट पर मिली।

२:–हरे पैन का दाम–१४ रु० ७० पैसे। लाल पैन का दाम–१५ रु० ३० पैसे।
संकेत : हरे पैन का मूल्य 'क' रुपए 'ख' पैसे होने पर लाल पैन का मूल्य 'क + १' रुपए 'ख-४०' पैसे होगा।

३:–बिजली तो थी ही नहीं। यदि बिजली होती तो पंखों के स्विच बंद होने पर भी बल्ब तो जलने चाहिए थे। दूसरे, यदि स्विच दबाते ही बिजली के एकाएक आ जाने से पंखे चल पड़ते तो बिजली के बल्बों का जलना भी आवश्यक था।

४:–शास्त्रीजी ने हरी कमीज वाले को सत्यंवद् बताया था।
संकेत : शास्त्रीजी ने सोचा कि पूछने पर सत्यंवद् या मिथ्यानाथ दोनों ही अपने को सत्यंवद् बताएंगे। महत्वपूर्ण है कि हरी कमीज वाला बाद में क्या कहता है। यदि वह उसी कथन को दोहराता है, तब वह सत्यंवद् है। यदि वह पहले वाले व्यक्ति के कथन में परिवर्तन करता है तो वह मिथ्यानाथ है।

५:– पहले प्लाट का क्षेत्रफल–६२५ वर्ग मीटर।
दूसरे प्लाट का क्षेत्रफल–५८६ वर्ग मीटर।
संकेत : समान परिमिति के वर्ग और आयत के क्षेत्रफल का अन्तर उनकी भुजाओं के अंतर के वर्ग के समान होता है। चूंकि दोनों प्लाटों पर एक ही लम्बाई की तारें लगीं, इसलिए दोनों प्लाटों की परिमिति समान है।

चूंकि दोनों के क्षेत्रफल का अन्तर ३६ है, अतः आयत की भुजाओं और वर्ग की भुजाओं में अन्तर ६ होगा। आयत की बड़ी भुजा ३१ मीटर है, अतः वर्ग की भुजा २५ मीटर होगी। आयत की दूसरी भुजा वर्ग की भुजा से ६ मीटर कम अर्थात १६ मीटर होगी।

६:–

एजेंट	सूत्र व्यक्ति	सूचना कैसे मिली	देश जिसे सूचना भेजी
रंगास्वामी	सीता रामशरण सिंह	फोटो कापी	चीन
रंजीत रतन	जोगेश्वर प्रसाद	मूल दस्तावेज	पाकिस्तान
रमण खन्ना	बद्रिकानाथ सिंह	कंप्यूटर फ्लॉपी डिस्क	पोलैंड
राम लखन प्रसाद	रामेश्वर प्रसाद	गुप्त कैमरा	अमेरिका
रोमू बनर्जी	चंद्रिका रमण	कंप्यूटर कैच	प० जर्मनी

७:—हाथी की औसत गति : १० मील प्रति घंटा।
राधिका प्रताप ने जनकपुर के बाद कुल यात्रा की : १५० मील।
संकेत : चूंकि राधिका ने पहुंचने में डेढ़ घंटा लगाया, अतः जनकपुर से राघवपुर हो कर चंद्रपुर की दूरी ६० मील थी। अतः चंद्रपुर राघवपुर से ६० मील दूर था। इस प्रकार राधिका प्रताप जनकपुर से अपने पिता के साथ चल कर कुल तीन घंटे बाद राघवपुर वापस पहुंचा।

८:— प्रियदर्शिनी की आयु : २३ वर्ष।
माता की आयु : ४१ वर्ष।
पिता की आयु : ४३ वर्ष।
दादा की आयु : ६१ वर्ष।
संकेत : १ से लेकर ९९ तक कुल २७ अविभाज्य संख्याएं हैं। इनमें से १२ संख्याएं ऐसी हैं जिनके अंकों का योग १० से अधिक है। शेष संख्याओं में केवल ४१ और ४३ ऐसी हैं जिनका आपसी अंतर दो है। अर्थात् यह उसके माता-पिता की आयु है। इनका योग ८४ हुआ। अब दादाजी की आयु निकालना कठिन नहीं है, यदि यह ध्यान रखा जाए कि प्रियदर्शिनी किसी कार्यालय में काम करती है।

९:—ताले का गुप्त नंबर : १०५७
क-१, ख-२२, ग-२, घ-३५२, ङ-६३८, च-२९, छ-८ और ज-५
संकेत : नक्शे में कोनों पर दिए गए १ से ८ तक के अंक दर्शाते हैं कि पहला खाना कौन-सा है। बाहरी खाने की संख्या बनाने के लिए पहले खाने की संख्या में १, दूसरे की संख्या में २, तीसरे में ३ (१, २, ३, ४, ५,...) आदि जोड़ कर आगे के खानों की संख्याएं बनाई गई हैं।

उससे अंदर के खानों की संख्याएं बाहरी खानों की संख्याओं का गुणनफल हैं।

दूसरे खानों की संख्याओं को ९ से भाग करने पर जो शेष आता है, वह तीसरे क्रम के खानों की संख्याएं हैं।

१०:— नूरबंदर से मदनपुर की दूरी—३० कि०मी०।
कार की गति—१०४ कि०मी० प्रति घंटा।
संकेत : लारी को राधुग्राम से मदनपुर पहुंचने में कुल २ घंटे का समय लगा।

जीप ने नूरबंदर पहुंचने में सवा घंटा लगाया। मदनपुर से नूरबंदर तक पहुंचने में लगने वाला समय घटाने पर जीप पहली बार जाते हुए मदनपुर केवल १ घंटे में ही पहुंच गई। इससे जीप की गति निकल आएगी। फिर कार की गति निकाली जा सकती है।

११:— पीला पैन—६० रुपए दर्जन।
काला पैन—६५ रुपए दर्जन।
लाल पैन—७० रुपए दर्जन।
हरा पैन—७५ रुपए दर्जन।

१२:–

फिल्म	अभिनेता	अभिनेत्री	निर्देशक
क्रोधित	प्रमोद खन्ना	शालिनी शोलापुरे	सतीश भई
जंगल की हवा	कृष्ण	सुरेखा	प्रवीण शाह
जगत जननी	शैलेंद्र	भूदेवी	सेवानन्द
दुख	जितेन	प्रियंवदा	सोहन देसाई
प्रेमाश्रम	रामेश खन्ना	सीमा मालिनी	बाल सावंत

१३:–

मंत्री	मंत्रालय	इससे पूर्व	प्रदेश
कृष्णप्रसाद सोलंकी	वाणिज्य	पूर्व मुख्यमंत्री	मध्य प्रदेश
नरसिंह राम	विदेश	वाणिज्य मंत्री	हि०प्र०
भोलाराम	श्रम	समाज शास्त्री	महाराष्ट्र
शिवानन्द	वित्त	सांसद (लो०स०)	गुजरात
शूरवीर सिंह	विधि	सांसद (रा०स०)	उ०प्र०

१४:–पहले अक्षरों से जो नाम बनेगा, वह है–**अमरेश कुमार वासुदेव जी।**

१५:– वर्ष १९८९ में तीनों की आयु निम्न होगी–

पिता : ८० वर्ष

कृष्ण : ५० वर्ष

राजीव : ४५ वर्ष

१६:–हत्यारे का टेलीफोन नंबर–५३२४६७८

संकेत– १. चूंकि शून्य नहीं है और सातों अंक निरंतर हैं, अतः १ से ७, २ से ८ और ३ से ९ तक के अंक हो सकते हैं।

२. इन तीनों स्थितियों में सभी सातों अंकों का योग २८, ३५ या ४२ होगा। चूंकि इनका योग विषम संख्या है (३५), इसलिए सातों अंक २ से ८ तक हैं।

३. तीन अंकों की संख्या जिसके वर्गमूल के दोनों अंक आरोही क्रम में हों १४४, ५२९ हो सकती हैं। चूंकि फोन नंबर में १ नहीं है, अतः संख्या है ५२९ और एक्सचेंज कोड ५३२।

४. शेष चारों अंकों ४, ६, ७, ८, से बनने वाली न्यूनतम संख्या ४६७८ होगी।

१७:–

क्र०सं०	विद्यार्थी	अध्यापिका	विषय	कक्षा
१.	असीम	सुधा	हिंदी	८
२.	सौरभ	प्रेमलता	गणित	९
३.	रश्मि	सुनयना	विज्ञान	१०
४.	स्वाति	प्रीतिका	सामान्य ज्ञान	११
५.	भावना	स्नेहलता	अंग्रेजी	१२

१८:–प्रेमसागर ने लिफाफे में ६३ रुपए रखे थे।

१९:–लाला रामनिवास गुप्ता अधिकतम ३ टेलीफोन कर सकते हैं।
संकेत : पहेली हल करने पर ५० पैसे के सिक्कों की तीन संख्याएं यथा १, ६, ११ प्राप्त होंगी। परंतु दी गई शर्तों के अनुसार पचास पैसे के कुल ६ सिक्के गल्ले में थे। अन्य सिक्कों की मात्रा इस प्रकार थी–१० पैसे के २२, २० पैसे के १४, २५ पैसे के ८।

२०:–पुरस्कृत टिकट का नंबर–८२६४१३
संकेत : १. छह अंकों के तीन सम्भावित समूह हो सकते हैं–१, २, ३, ४, ६, ८; १, २, ३, ४, ५, ९ और १, २, ३, ५, ६, ७।
२. दोगुना वाली शर्त और अन्य शर्तों को दृष्टिगत रख कर छह सम्भावित हलों में से ८२६४१३ सही है, क्योंकि तीसरे और चौथे अंकों से बनी संख्या ६४ का वर्गमूल ८ भी विजयी नंबर का ही एक अंक है।

२१:–

छात्र	चित्र	कहां से आया	प्राप्त पुरस्कार
अंकुश	'रेलवे प्लेटफार्म'	हैदराबाद	दूसरा
आसीम	'समुद्र में तूफान'	बम्बई	तीसरा
जावेद	'एक व्यस्त सड़क'	कलकत्ता	पांचवां
नवजोत	'पार्क का दृश्य'	मद्रास	चौथा
स्वामी	'स्कूल का मैदान'	दिल्ली	पहला

२२:–त्रिलोक घूसिया ने चिट पर २० रुपए ८५ पैसे की राशि लिखी थी।

२३:–'खन्नाविजन' में कार्यरत कर्मचारियों की संख्या–२५
संकेत : १. किसी भी माह में साप्ताहिक अवकाश न्यूनतम ४ और अधिकतम ५ होते हैं। २ राजकीय अवकाश सहित यह संख्या ६/७ हो सकती है।
२. किसी भी माह में अधिकतम ३१ दिन और न्यूनतम २८ दिन होते हैं। अतः फैक्ट्री अधिकतम २५ और न्यूनतम २१ दिन खुली।

३. चूंकि कर्मचारियों, दिनों और वनने वाले टी०वी० की संख्या समान है, अतः उस माह में न्यूनतम ४४१ और अधिकतम ६२५ टी०वी० बने।
४. प्रत्येक टी०वी० में १७३६ रु० का लाभ है। अतः उस माह का लाभ न्यूनतम ७,६५,५७६ रुपए और अधिकतम १०,८५,००० रुपए है।

२४:-

खिलाड़ी	खेल	स्थान	प्रशिक्षक
केवलराम	तैराकी	८वां	मिखाइल कोस्यानोव
जगत सिंह	दस हजार मीटर दौड़	३६वां	तांबियार
डी.टी. निशा	जिम्नास्टिक्स	२५वां	चिन चो मो
वालभद्र सिंह	जूडो	छठा	माइकल स्पिलेन
एस.वी. पुट्टसामी	तीरंदाजी	१२वां	जेम्स हो

२५:-यरामता की कार का वास्तविक नंबर था-६८२६
संकेत : १. केवल ०, १, २, ५, ६, ८ और ६ ही उल्टा करने पर कोई न कोई अंक दर्शाते हैं।
२. चूंकि दोनों नंबरों का अंतर ५४० है। इसलिए पहला और चौथा अंक समान हैं तथा वीच के दोनों अंकों का आपसी अंतर ६ होगा।

२६:-

साथी	कहां से आए	वाहन
अनीस अहमद-शूरसेन	मेरठ	वस
आशीष धवन-जानी डिसूजा	अजमेर	कार
जैकी डिसूजा-प्रवीण चौरसिया	भोपाल	रेल
प्रभुदयाल-निकुंज लाल	दिल्ली	मोटर साइकल
रामपाल सिंह-रामेंद्र शर्मा	पानीपत	साइकल

२७:-

अपराधी	छोटा नाम	हथियार	कहां से आया
अनवर अहमद	सिक्का	तलवार	मद्रास
देवेन दास	गोल्डी	रिवाल्वर	कलकत्ता
निखिल चन्द्रा	रूपी	गुप्ती	बंबई
रतन शाह	जोहरी	देसी कट्टा	जयपुर
सुरेंद्र पाल	पहलवान	छुरी	दिल्ली

२८:-

लेखक	उपन्यास	प्रकाशक	पुरस्कार वर्ष
देवेंद्र चटर्जी	मानव सदन	ध्यानपीठ	१९८४
पी. मलयासोमी	हमारे-तुम्हारे	साहित्य सदन	१९८२
मानव मुखर्जी	हम एक हैं	राष्ट्रीय प्रकाशन	१९८३
रमण चौधरी	आकाश को छू लूंगा	रंगीला प्रकाशन	१९८६
एस.एन. शंकरन	धरती पर इंसान	पुस्तकालय प्रकाशन	१९८५

२९:-

भाई	उपनाम	बहन	उपनाम
अमित	किट्टू	प्रियंका	अनु
मदन	बिट्टू	देविका	निक्की
विक्रम	गिल्लू	दीप्ति	चीकू
राजीव	मिंटू	सविता	छुटकी
सुधीश	पप्पू	माला	रिंची

३०:-'रजत जयंती' एक्सप्रेस में १४ डिब्बे और 'मद्रास-दिल्ली पार्सल' में १११ डिब्बे लगे हुए थे।

संकेत : १. दोनों गाड़ियां एक ही दिशा में जा रही हैं। हल करने पर दोनों की कुल लम्बाई १००० मीटर निकलेगी।

२. दी गई शर्तों के अनुसार दोनों स्थानों पर एक से अधिक डिब्बे कटे हैं। अतः पार करने के समय 'रजत जयन्ती' में १६ या उससे कम परन्तु १० से अधिक डिब्बे लगे हुए थे।

३१:-आलोक के पापा के बैंक खाते का नंबर-३९

संकेत : १. केवल १, २, ५, ८ और ९ कैलकुलेटर अंक ही शीशे में से देखने पर कोई स्पष्ट अंक दर्शाते हैं।

२. चार अंकों की संख्या में पहला अंक ही चौथा अंक बनता है। और ऐसी स्थिति में पूर्ण वर्ग संख्या का चौथा अंक १, ५ ही हो सकता है।

३. अतः पहला अंक १ या २ ही होगा और वर्गमूल ३५, ३९, ४१, ४५, ४९, ५१ हो सकते हैं। इनमें से ३९ और उसका वर्ग १५२१ ही दी हुई शर्तों पर पूरे उतरेंगे।

३२:-खाली खानों की संख्याओं के दोगुने से प्राप्त संख्या--१३४०

संकेत : ध्यान से देखने पर हमें चार शृंखलाएं मिलेंगी-

२, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६ (प्रत्येक में २ का अंतर है)

१, ९, २५, ४९, ८१, १२१, १६९, २२५ (प्रत्येक संख्या ऊपर वाली शृंखला की संख्या से एक कम का वर्गफल हैं)

३, १३, ३१, ५७, ९१, १३३, १८३, २४१ (पहली दोनों शृंखलाओं का योग)

२, ९, २४, ४७, ७८, ११७, १६४, २१९ (तीसरी शृंखला में से क्रमशः १, ४, ७, १०, १३, १६, १९, २२ घटाने पर)

अतः खाली स्थान पर क्रमशः २५,, ४७, १२, १४, १८३, १६४ और २२५ की संख्याएं आएंगी। इनके योग का दोगुना १३४० होगा।

३३:–

लेखक	रचना	मुद्रक	प्रकाशक
उपेंद्र 'जख्मी'	अजनवी का अफसाना	सत्येंद्रनाथ	संघ प्रकाशन
राम 'संकट'	आग और शोले	राधेश्याम 'निर्मोही'	ग्रंथ महल
लाल 'प्रियदर्शी'	मेरी व्यथा	चंद्रलाल	कठिन साहित्य सदन
श्याम 'वेताव'	उनकी कहानी	रमेश 'अमर'	भीम प्रकाशन
सुरेंद्र 'प्रेम'	जंगल की आग	सतीश वार्ष्णेय	लाला प्रकाशन

३४:–

```
      ९४१६
       ७३५
   ---------
     ४७०८०
    २८२४८ ×
   ६५९१२ × ×
   ---------
   ६९२०७६०
```

३५:–गुरुदयाल की बस का रूट नंबर ७१३ था।

संकेत : १. दोनों बसों के रूट में अंतर ३९६ था। जब अंतर के मध्य में ९ हो तब स्पष्ट है कि दोनों संख्याओं में अंक उलटे हो गए हैं जैसे १२३ का ३२१ हो जाए। अर्थात् मध्य का अंक अपने स्थान पर ही रहता है।

२. तीन विषम संख्याएं जिनका योग ११ हो वे १, ३, ७ ही होंगी।

३. अतः १, ३, ७ से बनने वाली दो संख्याएं (जिनका अंतर ३९६ हो) ३१७ और ७१३ होंगी।

३६:–कार का नम्बर–८४२

संकेत : यदि अंतर के मध्य में ९ है और शेष दोनों अंकों का योग ९ है तव अंतर का अंतिम अंक जितना होगा उसकी १० गुणा संख्याएं ऐसी होंगी जिनको उलटने पर दिया गया अंतर आ सकता है।

अंतर ५९४ होने पर पहली संख्या ६०० होगी जिसे उलटने पर ००६ प्राप्त होगा। अन्य संख्याएं पाने के लिए ६०० में बार-बार १०१ जोड़ते जाएं जिनसे ७०१, ८०२, ९०३ संख्याएं मिलेंगी। अव इन संख्याओं के मध्य के अंक में १, २, ... ९ आदि रखने से कुल ४० संख्याएं मिलेंगी, जिनमें से अभीष्ट संख्या ८४२ है।

३७:–

देश	वैज्ञानिक का नाम	विषय	क्रम.
जाम्बिया	डा. पी. हैनरी	जल प्रदूषण	१
सोवियत संघ	डा. वी. मोहम्मद	वायु प्रदूषण	२
ताइवान	डा. जे चुंग	खाद्य पदार्थों में मिलावट	३
सिंगापुर	डा. सुंग फो	पेट्रोल की खपत	४
भारत	डा. जी. राव	ईंधन की बचत	५

३८:–बस में कुल ५० यात्री सवार हुए।

संकेत : केवल १० और १६ यात्रियों के और आने से ही बचत पूरे रुपयों में हो सकती थी।

३९:–सुरजीत का स्कूटर ३० कि.मी. प्रति घंटे की औसत गति से चला।

४०:–

फिल्म	निर्देशक	नायक	नायिका
प्यार की पुकार	अहमद सोज	कुमार भैरव	सीमा
हमारी मंजिल	पवन कुमार	प्रीतम	रमणिका
सीमांत	सुभाष भाई	सत्येन्द्र	सुनयना
जमाना देखेगा	प्रेम जख्मी	रवि	जर्बाना
ज्योति जल उठी	जीवन सरहदी	जतिन	करुणा

४१:–प्रो. माधव प्रसाद, उनकी पत्नी, रमेश और सोनिया की आयु क्रमशः ७०, ६८, ४१ और ३९ वर्ष है।

संकेत : १. दी गई शर्तों के अनुसार माता और पिता की आयु सम संख्या में आएगी, अतः दोनों की आयु ४०, ३८; ५०, ४८;, ६०, ५८;, ७०-६८;...आदि होगी।

२. तदनुसार रमेश, सोनिया की आयु २६, २४;, ३१, २९;, ३६, ३४;, ४१, ३९;... आदि होगी। इनमें से केवल ७०, ६८, ४१ और ३९ ही दी गई शर्तों को पूरा करती हैं।

४२:–

फिल्म	निर्देशक	विषय	भाषा
आन दि रिवर बैड	टी. पीयरसन	संगीत प्रधान	अंग्रेजी
दि स्प्रिंग डेज	टाम ओ'नील	प्रेमकथा	जर्मन
ब्लेसिंग्स	जेमूर कोली	अपराध कथा	फ्रांसीसी
लवली चाइल्ड	पी. रोमासोल	दुखांत	रूसी
विदिन नाइन आवर्स	जॉन पीटर्स	हास्य कथा	डच

४३:–तिलकराज चुघ के स्कूटर का नंवर–१६६।

संकेत : १. वाईं ओर से पहले स्थान पर तीन संभावित अंक १, ४ और ६ हो सकते हैं।

२. वाईं ओर से पहले दो स्थानों पर संभावित संख्याएं १६ और ४६ हो सकती हैं।

३. तीसरा अंक जुड़ने पर संभावित संख्या केवल १६६ ही प्राप्त होती है।

४४:–राधेश्याम की दुकान पर लाखा के जाने की तिथियां–३१ और ७।

संकेत : किसी भी माह में अधिकतम २८, २९, ३० या ३१ दिन हो सकते हैं।

माह में २८ दिन होने पर संभावित तिथियां २२-१, २३-२, २४-३,... २८-७ हो सकती हैं।

इसी प्रकार २९ दिन होने पर २३-१, २४-२,... २९-७; २४-१, २५-२... ३०-७, तथा २५-१, २६-२,... ३१-७ संभावित तिथियां होंगी। इनमें से ३१-७ ही सभी शर्तों को पूरा करती है।

४५:–प्रत्येक भाई को मिले शेयरों की संख्या इस प्रकार थी–

भगवान दास	–	२०,९७,१५२
जनक राज	–	१८,३५,००८
सुरेन्द्र प्रताप	–	१६,०५,६३२
अर्जुन प्रसाद	–	१४,०४,९२८
राधिका प्रसाद	–	१२,२९,३१२
जानकी दास	–	१०,७५,६४८
सत्येन्द्र प्रकाश	–	९,४१,१९२
कुल शेयर	–	१,०१,८८,८७२

संकेत : चूंकि प्रत्येक शेयर पर लाभांश १ रुपया है, अतः कुल शेयर १ करोड़ से अधिक हैं, जिससे होने वाली आय १ करोड़ से अधिक है। दो लाख रुपए दान दे देने पर यह राशि सात अंकों में रह जाती है जिससे कुल शेयर अधिकतम एक करोड़ एक लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे तथा न्यूनतम एक करोड़ ही हो सकते हैं।

४६:–चौधरी रुद्र प्रताप के पूरे खेत का क्षेत्रफल १२,१८० वर्गमीटर था।

संकेत : किसी समकोण त्रिभुज की छोटी भुजा यदि अविभाज्य संख्या (प्राइम नम्बर) है, तब दूसरी भुजा की दोगुनी संख्या, छोटी भुजा के वर्गफल से १ कम होगी।

कर्ण वड़ी भुजा से १ अधिक होगा।

चूंकि २९ एक अविभाज्य संख्या है, अतः दूसरी भुजा $\frac{२९^२ - १}{२}$ = ४२० मीटर और कर्ण ४२१ मीटर होगा।

४७:–पहले पांच स्थान पाने वाली लड़कियों के नाम, नगर और सर्वाधिक अंक पाने वाले विषय इस प्रकार हैं–

१. नीना सिंह, ईटानगर, अंग्रेजी; २. रमोना, बंबई, गणित; ३. सोनाली, कलकत्ता, हिन्दी; ४. कोमल, दिल्ली, विज्ञान और ५. रजनी, भोपाल, राजनीतिशास्त्र।

४८:–'विशालदूत' को अप्रैल-जून तिमाही में हुई कुल आय–रु० ६१, ३५, २४०/-

संकेत : १. चूंकि लक्ष्य प्राप्ति १ करोड़ रुपए है, अतः संभावित आय ७ अंकों की राशि है। इन अंकों का योग २१ होने पर संभावित अंक ०, १, २, ३, ४, ५, ६, ही होंगे।

२. सात अंकों से बनी संख्या **क ख ग घ च छ ज** १२० से विभाजित हो सकती है, अतः ज=०

३. यह संख्या २, ४, ८ से भी विभाजित हो सकती है, अतः छ=२, ४, ६ हो सकता है। ८ से विभाजित होने के लिए आवश्यक है कि **च छ ज** क्रमशः १२०, १६०, २४०, ३२०, ३६०, ५२० या ६४० हों।

४. चूंकि **ख ग घ** से बनी तीन आरोही अंकों की संख्या ९ से विभाजित हो सकती है, अतः इन अंकों का योग ९ होगा। ऐसी स्थिति में **ख ग घ** क्रमशः १, ३, ५ या २, ३, ४ हो सकते हैं। चूंकि आय में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, इसलिए १, ३, ५ ही बड़ी राशि की ओर इंगित करते हैं, जिससे **च छ** क्रमशः २, ४ या ६, ४ होंगे। इससे हमें दो संभावित राशियां २१, ३५, ६४० और ६१, ३५, २४० प्राप्त होंगी।

४९:–पार्सल गाड़ी की लंबाई ६९० मीटर थी।

संकेत : १. पार्सल गाड़ी की गति १० के गुणकों में होने से हल करने पर हमें उसकी लंबाई क्रमशः २३.३ मीटर, ३५६.६ मीटर, ६९० मीटर, १०२३.३ मीटर ... आदि मिलेंगी।

२. चूंकि पार्सल गाड़ी 'सुपर फास्ट' से लंबी और १००० मीटर से छोटी है, अतः उसकी लंबाई ६९० मीटर ही हो सकती है।

५०:–अड्डे पर बस ११ बज कर ५६ मिनट पर पहुंची।

संकेत : १. दोनों समय से प्राप्त होने वाली संख्याओं का योग १२०० होगा। अर्थात् किसी भी समय को १२-०० में से घटाने पर शीशे में से दिखाई देने वाला समय प्राप्त होगा।

२. केवल ११ बजकर ५६ मिनट और उसके बिम्ब ४ मिनट से प्राप्त होने वाली संख्याएं ही पूर्ण वर्ग संख्याएं हैं। शेष प्राप्त होने वाली दोनों संख्याओं के जोड़ों में कोई एक ही पूर्ण वर्ग हो सकती है।

५१:–'सरल अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश' तथा 'आदर्श हिन्दी-अंग्रेजी कोश' में क्रमशः २२०९ और १३६९ पृष्ठ थे।

संकेत : १. दोनों कोशों के पृष्ठों की संख्या के अंतर (८४०) के विभिन्न गुणनखंड बनाने से इस पहेली को हल किया जा सकता है।

२. हल करने पर ८ संभावित उत्तर मिलेंगे जिनमें से केवल ऊपर दिया उत्तर ही सभी शर्तों को पूरा करता है।

५२:–प्रदीप का फोन नंवर–२०१३४८

संकेत : १. अंतिम दो अंकों का योग ६ से १७ हो सकता है। तदनुसार मध्य के दो अंकों से वनी संख्या १० से १८ होगी।

२. चूंकि कोई भी अंक दो वार नहीं आया है अतः मध्य की संख्या १० होने पर अंतिम दो अंक २, ७; ३, ६ व ४, ५ हो सकते हैं।

इसी प्रकार १२ होने पर ३, ८; ४, ७; ५, ६ होंगे।

३. हल करने पर अंतिम चार संख्याएं प्राप्त हो जाएंगी, जिनसे न्यूनतम संभावित संख्या प्राप्त हो सकती है।

५३:–प्रत्येक भाई को १४००५ रुपए मिले। उस माह की कुल आय–१,१२,०४० रुपए।

संकेत : १. चूंकि सभी भाइयों को ५ रु० का केवल एक ही नोट मिला है और शेष नोट १०० रु० के मिले हैं अतः स्पष्ट है कि वांटी जाने वाली राशि का अंतिम अंक ५ ही होगा।

२. चूंकि सभी अंक अलग हैं और इन पांचों अलग-अलग अंकों का योग २५ है अतः ६,८,५,३,०; ६, ८, ५, २, १; ६, ७, ५, ४, ०; ६, ७, ५, ३, १; ६, ६, ५, ४, १; ६, ६, ५, ३, २; ८, ७, ५, ४, १; ८, ७, ५, ३, २; ७, ६, ५, ४, ३ ही संभावित अंक होंगे।

३. इनसे वनने वाली ५ अंकों की संभावित संख्याओं में से ६८०३५ ही सवसे वड़ी है जो ७ से विभाजित हो सकती है।

५४:–दीनवंधु लाइव्रेरी के लिए एकत्रित राशि ६८६५ रुपए थी।

संकेत– १. नई संख्या ६०६ कम होने का अर्थ है कि पहला अंक अंतिम अंक से १ अधिक है।

२. चूंकि सभी वच्चों द्वारा एकत्रित औसत राशि अविभाज्य संख्या है अतः राशि केवल ५ और ७ से ही विभाजित हो सकती है। इसलिए पहला अंक ६ और अंतिम अंक ५ ही होंगे।

३. चूंकि सभी अंक अलग-अलग हैं अतः दूसरा और तीसरा अंक क्रमशः ० और १, १ और २, २ और ३, ३ और ४, ७ और ८ तथा ८ और ९ में से ही हो सकते हैं।

४. इस प्रकार प्राप्त संख्याओं–६०१५, ६१२५, ६२३५, ६३४५, ६७८५ और ६८९५ में से ६१२५ और ६८६५ ही ३५ से विभाजित हो सकती हैं।

५. ६१२५ को ३५ से भाग करने पर १७५ प्राप्त होता है जो अविभाज्य संख्या नहीं।

५५:–१. अजय कुमार, राजेन्द्र भसीन, फुटवाल, 'लांगर्स क्लब'; २. कृष्ण चन्द्र, हरेन्द्रनाथ, क्रिकेट, 'दि चिक्स ग्रुप' ३. प्रेम मोहन, दर्शन सिंह बेदी, वालीवॉल, 'राइजिंग सन'; ४. मनोहर आजाद, सुरेन्द्र पाल, वास्केटवॉल, 'गोल्डन वॉक्स' और ५. राजीव पांडे, गुरवचन सिंह, हॉकी, 'रैविट्स'।

५६:–रेस्तरां की ऊंचाई–५४ मीटर

संकेत : १. दी गई सूचनाओं के आधार पर तीन स्थितियां मिलती हैं।
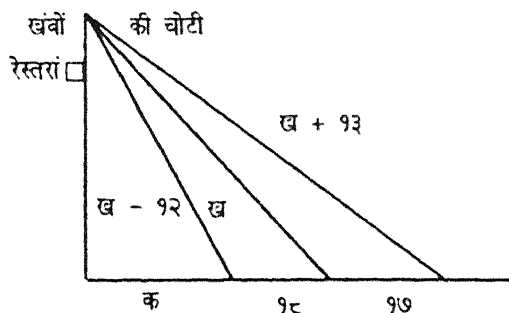
२. हल करने पर तीन समीकरण मिलेंगे जिनसे खंबे की चोटी की ऊंचाई ६० मीटर आएगी।

३. खंबे की ऊंचाई ३ मीटर और रेस्तरां की ऊंचाई ३ मीटर घटाने पर हमें रेस्तरां की ऊंचाई पता चल जाएगी।

५७:–

क्र० सं०	मित्र का नाम	मूल शहर	आजीविका का साधन	कार्यरत शहर
१.	दीपक राय	दिल्ली	वायुसेना	चंडीगढ़
२.	प्रवीण कुमार	चंडीगढ़	नौसेना	कलकत्ता
३.	राजेंद्र सिंह	रोहतक	अध्यापक	जयपुर
४.	विद्या प्रकाश	ग्वालियर	राज्य सरकार का मंत्रालय	भोपाल
५.	सुरेन्द्र पुरी	जयपुर	बैंक	दिल्ली

५८:–नागर बंधुओं को मिले चैकों की राशि : रु० ३४५६ और १७२८।

संकेत : १. चूंकि दूसरे चैक की राशि ९ से विभाज्य है अत : दो गुनी राशि भी ९ से विभाज्य ही होगी।

२. आरोही क्रम के चार निरंतर अंकों के कुल छह अंक समूह–१, २, ३, ४; २, ३, ४, ५; ३, ४, ५, ६; ४, ५, ६, ७; ५, ६, ७, ८ और ६, ७, ८, ९ हमें मिलेंगे।

३. इनमें से केवल ३, ४, ५, ६ ही ९ से विभाज्य है।

५९:– प्रेम चंद्र के दोनों प्लाटों का अलग-अलग क्षेत्रफल है–

आयताकार प्लाट–१३५० वर्ग मीटर

वर्गाकार प्लाट–९०० वर्ग मीटर

संकेत : १. आयताकार प्लाट की परिधि १५० मीटर होने से उसका न्यूनतम व अधिकतम क्षेत्रफल क्रमशः ७४ वर्गमीटर और १४०६ वर्ग मीटर हो सकता है।

२. चूंकि सभी प्लाटों की लंबाई-चौड़ाई पूरे मीटरों में है, अतः वर्गाकार प्लाट का क्षेत्रफल भी पूरे वर्ग मीटरों में होगा तथा आयताकार प्लाट की भुजाएं तीन के गुणक में होंगी।

३. वर्गाकार प्लाट की परिधि १०० मीटर से अधिक होने के कारण उसकी भुजाएं २५ मीटर से अधिक होंगी।

६०:—चारों मित्रों द्वारा प्राप्त फल और बाग के आकार के निम्नांकित दो सम्भावित हल हैं—

आकार	फल	फसल
५ एकड़	आम	३०,००० दर्जन
६ एकड़	चीकू	५४,००० दर्जन
७ एकड़	केला	५६,००० दर्जन
८ एकड़	संतरा	४०,००० दर्जन
		कुल १,८०,००० दर्जन

आकार	फल	फसल
५ एकड़	चीकू	४५,००० दर्जन
६ एकड़	आम	३६,००० दर्जन
७ एकड़	संतरा	३५,००० दर्जन
८ एकड़	केले	६४,००० दर्जन
		कुल १,८०,००० दर्जन

संकेत : १. हल करने पर १,७५,००० और १,८६,००० दर्जन फलों की न्यूनतम और अधिकतम प्राप्ति होगी।

२. इनमें से १,८०,००० दर्जन फलों की प्राप्ति की दो स्थितियां हैं।

३. प्रत्येक मित्र कोई भी बाग ले सकता है, अतः कुल स्थितियां ४८ होंगी, लेकिन दर्शनसिंह द्वारा चीकू का बाग न लेने के कारण मित्रों द्वारा बागों और फलों की संभावित स्थितियां ४२ रह जाएंगी।

६१:—काली कार का वास्तविक नं. ७६११ था।

६२:—स्नेही जी का जन्म २९ जनवरी १९४५ को हुआ।

संकेत : १. संभावित संख्या **क ख ग च छ ज** होगी।

२. पहले तीन अंकों की संख्या **क ख ग** अंतिम तीन अंकों की संख्या **च छ ज** से दो गुनी है।

३. माह दर्शाने वाले दोनों अंक **ग च** ०१, ०२, ०३;......०९, १०, ११, १२ हो सकते हैं।

४. चूंकि **ग ज** का दो गुना है अतः **ग** = १ नहीं हो सकता। इसलिए ग = ० और ज = ५ ही हो सकता है।
५. किसी माह में अधिकतम ३१ दिन होते हैं अतः च = १ ही हो सकता है जिससे क = २ या ३ हो सकता है।
६. चूंकि ज = ५ है अतः ख = ३, ७ या ६ होगा।
७. इनसे प्राप्त दो संभावित तिथियों – २७०१३५ तथा २६०१४५ में से पहली तिथि स्नेही जी की जन्मतिथि नहीं हो सकती।

६३:–महादेव के तीनों बेटों की वर्तमान आयु इस प्रकार है–

राम–२६ वर्ष, श्याम–२३ वर्ष, घनश्याम–२० वर्ष।

संकेत : १. दी गई सूचनाओं के आधार पर तीनों की वर्तमान आयु ७२ वर्ष है।
२. चूंकि १२ वर्ष पूर्व तीनों की आयु का योग ३६ वर्ष था, अतः घनश्याम की आयु १२ वर्ष से अवश्य ही अधिक है।
३. हल करने पर ६ उत्तर प्राप्त होंगे, जिनमें से मात्र यही उत्तर सही है।

६४:–१. ग्रेशम डियास, अमरलाल, मूर्ति चोरी, पहाड़पुर; २ मृत्युंजय सिन्हा, डिकोस्टा, फाइल की चोरी, श्रीनगर; ३. रणजीत पाल, हमीद, नकली नोट, गया; ४. विजय सिंह, प्रेमेंद्र, स्मगलिंग, वापी और ५. स्वतंत्र प्रकाश, रतन, ड्रग्स, कोचीन।

६५:–खाली खानों की संख्याओं का योग–७०८

संकेत : ध्यान से देखने पर हमें चार विभिन्न शृंखलाएं मिलेंगी–

१-१, ३, ७, १३, **२१**, ३१, ४३ और ५७

२-३, ५, ६, १७, **३३**, ६५, १२६, और २५७

३-४, ८, १६, ३०, ५४, **६६**, **१७२** और ३१४

४-१, ५, १४, **३०**, ५५, ६१, १४०, और २०४

५-वर्गाकार आकृति के बाहर वृत्ताकार घेरे में जो संख्याएं हैं वे दो अर्द्धव्यासों के बीच की संख्याओं का योग हैं, जैसे १ + २५७ + ४ + २०४ = ४६६। इसी प्रकार अन्य संख्याएं–२८०, १७६, **१३१**, १२२, १५०, **२२५** तथा ३७५ होंगी।
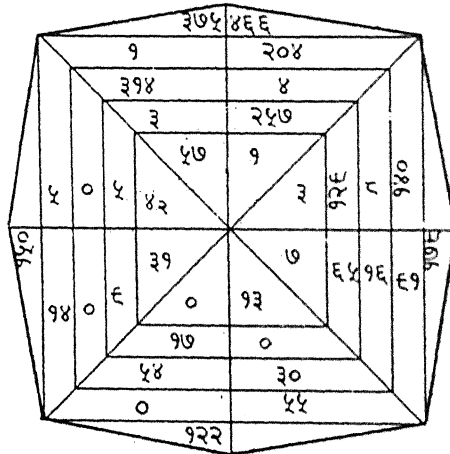
६६:–भवन निर्माण में लगी ईंटों की संख्या–२४३५७६६१

संकेत : १. पहले तीन अंकों की संख्या ६ से विभाजित हो सकती है, अतः इन तीनों अंकों का योग ६ अथवा १८ हो सकता है!

२. चूंकि अंतिम तीन अंकों से बनी संख्या पहले तीन अंकों से बनी संख्या के दो गुने से भी एक अधिक है, अतः पहले तीन अंकों का योग ६ ही होगा।

३. दी गई शर्तों के अनुसार हमें २२ ऐसे संख्यायुग्म यथा ११७, २३५; १२६; २५३... मिलेंगे जिनमें से केवल ३३३; ६६७ ही दी गई सभी शर्तों को पूरा करता है।

४. चूंकि ईंटों की संख्या दो करोड़ चालीस लाख से कुछ अधिक है, अतः दो खंडों की अविभाज्य ७३ ही होगी।

६७:–लोकप्रियता क्रम के अनुसार धारावाहिकों के निर्माता, लेखक के नाम इस प्रकार हैं–
१. 'श्यामचंद जासूस', अरुण सिन्हा, टोनी बग्गेजा, २. 'क्रांति की आवाज', विजय ढींगड़ा, हरीचंद सैनी, ३. 'अचला', रमण शर्मा, जोगेंद्र प्रताप, ४. 'जीवन की डगर', सुरेंद्र प्यारे, मदन वर्मा और ५. 'सजनी', मगन मेहता, प्रेम भगत।

६८:–तीनों कारों के नम्बर–१७; ५३; ६०२

संकेत : १. चूंकि मारुति कारों के नम्बर दो अंकों की अविभाज्य संख्याएं हैं अतः इनके नम्बर ११, १३, १७, १६, २३, २६, ३१, ३७, ४१, ४३, ४७, ५३, ५६, ६१, ६७, ७१, ७३, ७६, ८३, ८६, ६७ ही हो सकते हैं।

२. सभी नम्बरों में अलग-अलग अंक हैं तथा दोनों अविभाज्य संख्याओं के गुणनफल मर्सीडीज के नम्बर से १ कम हैं।

३. मर्सीडीज का नम्बर तीन अंकों की संख्या है। अतः हमें १४ सम्भावित उत्तरों में से दो उत्तर मिलेंगे जो संकेत २ की शर्तों को पूरा करते हैं।

६६:–आर्केड क्लब को मिली पुरस्कार राशि–रुपए १०,४२,५३६/-

संकेत : १. चूंकि पुरस्कार की राशि ११ व्यक्तियों में बराबर बंटी अतः पहले, तीसरे, पांचवें, सातवें स्थान के अंकों और दूसरे, चौथे, छटे स्थान के अंकों के योग का आपसी अंतर शून्य अथवा ११ के गुणक में होगा।

२. सातों अंकों का योग २१ होने पर चार अंकों का योग १६ और तीन अंकों का योग ५ ही होगा।

३. इस प्रकार हमें दो अंक वर्ग १)-२, ३, ५, ६ तथा ०, १, ४, और २)-१, ४, ५, ६ तथा ०, २, ३, मिलेंगे।

४. इनसे प्राप्त होने वाली दो न्यूनतम संभावित संख्याओं में से उपर्युक्त राशि ही वांछित है।

७०:–

आशीष की तालिका

१.	मार्टिन स्नीडन	–कै. शास्त्री–बो. कपिल	–	२
२.	केन रदरफोर्ड	–रन आउट	–	३
३.	मार्टिन क्रो	–कै. सिद्धू–बो. बिन्नी	–	८
४.	एंड्रयू जोन्स	–रन आउट	–	५
५.	जैफ क्रो	–स्टम्प मोरे–बो. मनोज	–	३१
६.	दीपक पटेल	–रन आउट	–	२७
७.	जान ब्रेसवेल	–आउट नहीं	–	६
८.	इयान स्मिथ	–एल.बी.डब्ल्यू मनोज	–	८
९.	स्टीफन बुक	–कै. कपिल–बो. शास्त्री	–	०
१०.	फिल होर्न	–कै. गावस्कर–बो. मनिंदर	–	०
११.	इवान चैटफील्ड	–बो. मनिन्दर–		०
		अतिरिक्त–(नो बॉल–६)		६
		कुल (–२६.५ ओवर)		९९

१–३, २–६, ३–१२, ४–३१, ५–८१, ६–८३, ७–९५, ८–९९, ९–९९
कपिल–७–१–१२–१ बिन्नी–४–१–१९–१ मनोज–६–२–२१–२ शास्त्री–६–१–२१–१
मनिंदर–३.५–१–२०–२

७१:–अनिरुद्ध, एम.ए, जिम कार्बेट पार्क, फॉरेस्ट सर्विस; कनकलता, स्नातक, दिल्ली, एअर इंडिया; निकोलस, पी.एच.डी., बंबई, टाटा इंस्टीट्यूट; रहीमन, विज्ञान स्नातक, गांधीनगर; आई.ए.एस. और सिद्धार्थ, एम.बी.ए., नोएडा, स्वरोजगार।

७२:– १. सोहन राम, प्रगतिशील मोर्चा, कृष्ण दत्त;
२. प्यारे मियां, समतावादी दल, जानकी नंदन;
३. जगन सिंह, एकता मंच, मगन भाई;
४. लाखन दास, राष्ट्रवादी पार्टी, प्रीतम सिंह तथा
५. रामेंद्र प्रसाद, जनमोर्चा, रमाकांत।

७३:–बरगद के पेड़ पर पक्षियों की संख्या–१०३२

संकेत : १. हल करने पर बरगद, पीपल, नीम और शीशम के पेड़ पर पक्षियों की संख्या का अनुपात १२ : ३ : ५ : ४ आएगा।
२. चूंकि पक्षियों की संख्या २००० और २१०० के बीच में ही है अतः बरगद के पेड़ पर पक्षियों की संख्या १००८, १०२०, १०३२ और १०४४ आएगी।
३. इनमें से १०३२ ही दी गई सभी शर्तें पूरा करती है।

७४:– १. पीयूष 'खुमार'–'लव पे जमाने के'–जीवन रिदमूस, २. रमण 'कृपाल'– 'जीवन भर का साथ है'–सी. सीरीज, ३. जीवकरण 'शलभ'–'कुछ दूर साथ दो'–सोनम कैसेट्स, ४. शामलाल

'सहरा'–'अंजानी राहों का सफर'–गजल कॉर्नर्स, और ५. हरमण 'भोला'–'कोई अजीब बात नहीं'–कैसेट प्रोड्यूसर्स।

७५:–१. जगन्नाथ प्रसाद-लुफ्तांसा-बैंकाक-कैमरे, २. प्रेम किशोर–गल्फ एअर-दुबई-आडियो सैट, ३. रमेशनाथ–एअर इंडिया-सिंगापुर-टी.वी., ४. शामप्रकाश-पैन एम-कुवैत-शराव और ५. सुरेंद्र कुमार–जाल-हांगकांग-वी.सी.आर.।

७६:–१० से १६ तक आरंभ हुए खेलों के पहले अक्षर–मुलाकु हाटेफु गोवाजु

७७:–राम के कुल ६४ आम ठीक निकले।

संकेत : १. आमों की संख्या पूर्णांक (होल नंवर) है।

२. किसी भी संख्या के न्यूनतम जोड़ा गुणनखंड होते हैं। यथा २६ = १ × २६ और १११ = १ × १११ एवं ३ × ३७ अर्थात २६ के गुणनखंडों का एक जोड़ा है १, २६ एवं १११ के २ जोड़ा गुणन खंड हैं – १, १११ एवं ३, ३७।

३. हल करने पर हमें राम के आमों के लिए २ संभावित संख्याएं ७२६ और ६४ प्राप्त होंगी। चूंकि प्रत्येक पेटी में ४० आम होते हैं अतः उपर्युक्त संख्या – ६४ ही एकमात्र वांछित संख्या है जो सभी शर्तों का पालन करती है।

७८:–गिरधारी के मकान नम्वर-६५२३

संकेत : १. मकान का नंवर **क ख ग घ** मानने पर क ६ से कम है और ८ (२ × ४), ६ (२ × ३) ही हो सकता है।

२. चूंकि मकान का नंवर विषम संख्या है अतः अंतिम अंक भी विषम अंक ही होगा। इससे क = ६ (२ × ३) ही होगा तथा ख ५ होगा।

७९:–अतिथियों की संख्या ६६२०

संकेत : चारों अंकों का योग दो अंकों की संख्या है, और ४ से भाग हो सकती है। चूंकि पहली संख्या का पहला अंक, दूसरे और चौथे अंक के योग के समान है अतः चारों अंकों का संभावित योग १२ से २४ हो सकता है। अतः अंतिम अंक १, २; १, ६; २, ० या २, ४ हो सकते हैं।
हल करने पर केवल एक ही संख्या प्राप्त होगी।

८०:– १. सतीश को–१७ रु० मिले।
२. मकान का नंवर–४६१३

संकेत : १. चार विभिन्न अंकों की संख्या का अधिकतम योग ३० और न्यूनतम ६ हो सकता है।

२. चार अंकों की संख्या का घनमूल अधिकतम २१ और न्यूनतम १० हो सकता है।

३. अतः नोटों की संभावित संख्या ११, १३, १५, १७, १६ और २१ हो सकती है।

४. इनमें से मात्र १७ ही ऐसी संख्या है जिसके घनफल वाली ४ अंकों की संख्या ४६१३ के सभी अंकों का योग भी वही अर्थात् १७ ही है।

८१:–खाली खानों की संख्याओं का योग-१६३

संकेत : १. बाहरी छोटे तिकोन में संख्याएं आरोही क्रम में है, उनका आपसी अंतर १ है। अतः ग = ६ है।

२. बाहरी लंबे तिकोन में विषम अंक के ओर की संख्याएं, छोटे तिकोनों की संख्याओं का योग है जबकि सम अंक की ओर वाले तिकोन में सम संख्या का वर्गफल है। अतः क = १५ और झ = १६ है।
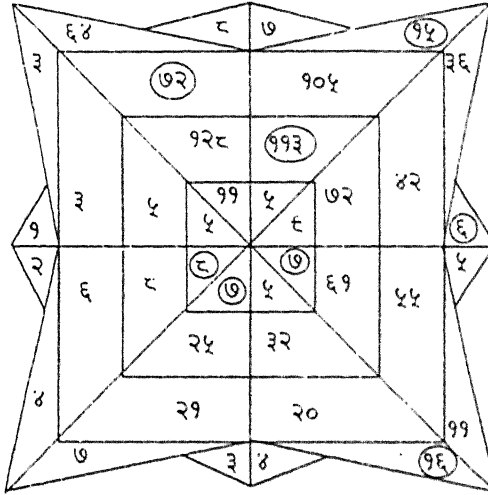
३. 'ख' वाले खानों में विषम अंक के सामने उन विषम अंकों का गुणन फल है जबकि सम अंकों के सामने दोनों सम अंकों का योग है। अतः ख = ७२ है।

४. 'ज' वाले खानों में बाहरी दोनों खानों के योग में से छोटे तिकोन की संख्या को घटाया गया है। अतः ज = ३२ है।

५. 'घ, च, छ' अपने से बाहरी खानों की संख्याओं के अंकों का योग है। अतः क्रमशः ८, ७, ७ हैं।

८२:–१. 'हमारी यादें', प्रदीप स्नेही, संजय शर्मा, २. 'हम सफर', रामनरेश पांडे, सुरमण सहाय, ३. 'तवारीख', जगन्नाथ, हनुमंत ४. 'अपना हाथ', सुरेंद्र बतरा, जानकी दास और ५. 'जीवन', हरिशरण, कृपाशंकर।

८३:–चाचा नरोत्तम और उनके पिता की आयु क्रमशः ६२ वर्ष और ८६ वर्ष हो जाएगी।

संकेत : १. चूंकि चारों अंकों का योग ११ से भाग हो सकता है अतः यह योग ११ या २२ ही हो सकता है।

२. चाचा की आयु का दूसरा अंक ०, २, ४, ६, ८ होगा।

३. हल करने पर हमें चार उत्तर १४, ५१, ३१, ४३ (चारों अंकों का योग ११) और ४५, ६४ तथा ६२, ८६ (चारों अंकों का योग २२) प्राप्त होंगे। इनमें से केवल अंतिम उत्तर ही सभी शर्तों को पूरा करता है।

८४:–दावजीपुर में कुल मकान २०९८ थे।

संकेत : १. दावजीपुर की आबादी को क, ख, ग, घ, च मानने पर च सम अंक है (संख्या ६ से विभाज्य है)।
२. सभी अंकों का योग ३ से विभाज्य होने के अतिरिक्त २ से भी विभाज्य है (योग पहले २ अंकों से बनी संख्या का दोगुना है)। अतः योग ६, १२, १८, २४, ३०, ३६ या ४२ ही हो सकता है।
३. चूंकि 'ख' और 'च' के योग का आधा 'ग' है और 'च' सम अंक है अतः 'ख' भी सम अंक ही होगा।
४. हल करने पर योग २४ आएगा और जनसंख्या १२५८८ होगी।

८५:—वेसिन क्लब ने जोकिनो क्लब को ६-० से हराया।
संकेत : १. प्रत्येक टीम ने कुल ३-३ मैच खेले।
२. चूंकि वेसिन क्लब ने ३ मैच जीते अतः क = ३, ज = ० और छ = ६ होगा।
३. चूंकि प्रत्येक अक्षर अलग-अलग अंक दर्शाता है अतः घ = २, ग = १, ख = ४ और च = ८ होगा।
४. चूंकि जोकिनो और मीर क्लब ने कोई गोल नहीं किया और टिराने क्लब को वेसिन क्लब ने हराया है अतः टिराने-वेसिन का स्कोर ०-२ होगा।
५. मीर क्लब ०-१, ०-१ से दो मैच हारा और जोकिनो क्लब के साथ उसका मैच ०-० से बराबरी पर छूटा।

८६:—चौ० बृज प्रताप सिंह का जन्म २६ फरवरी १८२० को हुआ।
संकेत : १. दोनों भाइयों की आयु में ४ वर्षों का अंतर है।
२. आयु चार के गुणकों में ही होगी।
३. दोनों भाइयों की आयु ४८, ५२ या ६८, ७२ वर्ष ही हो सकती है।
४. चूंकि उनके व्यवसायी पोते सीताराम सिंह की आयु ३२ वर्ष है, अतः उनकी आयु ५२ वर्ष नहीं हो सकती।

८७:—रणवीर ने गिरफ्तारी का समय १ बजकर १० मिनट भरा।
संकेत : १. छोटी सूई १ और २ के बीच होने से दोनों घड़ियों का न्यूनतम व अधिकतम अंतर ६५ मिनट व १०४ मिनट हो सकता है।
२. अंतर ६५, ७८, ९१ और १०४ मिनट होने से घंटा घर के साथ घड़ी मिलाने का समय क्रमशः ८-३०; ८-२५; ७-२० और ६-१५ आएगा।
३. इससे ८-३० ठीक होने पर अंतर ६५ मिनट होगा जिससे कार्यालय में प्रवेश का उसका समय १ बजकर ५० मिनट आएगा।

८८:—१. कृष्णकांत, दया शिक्षण संस्थान, पूना, गायक, २. दमणेंद्र सिंह, मान विद्या भवन, कलकत्ता, हॉकी, ३. पूर्णेंदु कुमार, वनस्थली विद्यालय, मद्रास, चित्रकार, ४. बंसीलाल, पराग विद्यालय, दिल्ली, संगीतकार, ५. महेंद्र सिंह, काशी विद्या भवन, बंबई, क्रिकेट।

८९:—१. कपिल कुमार-ट्रोंजो-जस्ट टैन मिनट्स विफोर—जासूसी, २. चिरंजीव वर्मा—नीडोज—रोड

टु वंडरलैंड-हास्य, ३. तड़ित शर्मा-रैम्पर्न-गोल्डन ईगल-ऐतिहासिक, ४. दिनेश झा-दिंको-दी पीकाक वाज व्हाइट-रहस्य, रोमांच और ५. नवीन घोरपड़े-पैराडाइज-से मी गुडबाई-प्रेमकथा।

६०:-

मित्र	व्यवसाय	पत्नी	कहां रहते हैं
जीत 'निर्मल'	अध्यापक	प्रिया	ऊटी
देवेन्द्र 'प्रीत'	पुलिस अधिकारी	कल्याणी	गुलमर्ग
रामेश्वर वर्मा	डॉक्टर	शांति	माथेरन
विजय पांडे	वैज्ञानिक	लक्ष्मी	शिमला
सुधीर मंगल	इंजीनियर	मालती	डलहौजी

६१:-पृथ्वीनाथ के गुप्त खाते का नंबर है-५३८२४३३६४

संकेत : १. चूंकि स्थान का कोड खाता नंबर का १६ गुणा है अतः स्थान कोड की ५ अंकों की संख्या १६ से विभाज्य है तथा उसका अंतिम अंक कोई सम अंक ही है।

२. एशिया का कोड पांच होने से स्थान कोड की पांच अंकों की संख्या ५०१०१ से लेकर ५९९९९ तक ही हो सकती है।

३. इनमें से हमें २१ पूर्ण वर्ग संख्याएं मिलेंगी जिनमें से केवल छह संख्याएं-५०१७६, ५१९८४, ५३८२४, ५५६९६, ५७६०० और ५९५३६ ही ऐसी पूर्ण वर्ग संख्याएं हैं जो १६ से विभाज्य हैं।

४. इनमें से ५३८२४ ही ऐसा स्थान कोड है जिससे सभी शर्तें पूरी हो जाती हैं।

६२:-केवल एक ही नोट।
(क्योंकि एक नोट डालने के बाद जेब खाली नहीं रहेगी।)

६३:-अशोक ने मोहन को सुझाव दिया कि वह गुलदस्ते में नकली फूल लगा दे। सुंदरता तो रहेगी पर गंध न होने से मक्खियां आदि उन पर नहीं बैठेंगी।

६४:-भोलाराम को सवा सैंतालीस (४७.२५) से० मी० कपड़ा कम मिला।

६५:- **सतीश की तालिका इस प्रकार है:**

१.	सुनील गावस्कर	कैच रिचर्डस बो० गार्नर	६०
२.	अंशुमन गायकवाड़	रन आउट	१७०
३.	महेन्द्र अमरनाथ	कै० हेन्स बो. राबर्ट्स	७४
४.	संदीप पाटिल	कै० ग्रीनिज बो. गार्नर	४९
५.	यशपाल शर्मा	कै० गार्नर बो. होल्डिंग	३०
६.	कपिल देव	कै० लायड बो. होल्डिंग	१४६
७.	सैयद किरमानी	कै० ग्रीनिज बो. गार्नर	१६

८.	मदन लाल	कै० ग्रीनिज वो. होल्डर	२४
६.	रवि शास्त्री	आउट नहीं	१४
१०.	महेन्द्र संधू	कै० लायड वो. गार्नर	६
११.	मनिन्दर सिंह	वो. होल्डर	२
		अतिरिक्त रन-	३६
		कुल रन संख्या	५२७

संकेत : १. रन हैं, २, ४६, ७०, ७४ और १४६

६६:–राजा सपोर के खजाने में कुल १,०२,६७,५३,८४६ मोती थे। रकोच द्वीप की जनसंख्या–३३०४३

६७:–

परिणाम तालिका

देश का नाम	जापान	चीन	भारत	पाकि-स्तान	मले-शिया	बांग्ला-देश	फिली-पीन	बह-रीन	श्रीलंका	कुवैत	कुल अंक
जापान	–	जीता	वरावर	जीता	जीता	जीता	जीता	जीता	जीता	जीता	१७
चीन	हारा	–	वरावर	जीता	जीता	जीता	जीता	जीता	जीता	जीता	१५
भारत	वरावर	वरावर	–	जीता	जीता	वरावर	जीता	जीता	जीता	जीता	१५
पाकिस्तान	हारा	हारा	हारा	–	जीता	जीता	जीता	हारा	जीता	जीता	१०
मलेशिया	हारा	हारा	हारा	हारा	–	जीता	जीता	वरावर	जीता	जीता	६
बांग्लादेश	हारा	हारा	वरावर	हारा	हारा	–	वरावर	जीता	जीता	जीता	८
फिलीपीन	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	वरावर	–	जीता	जीता	जीता	७
बहरीन	हारा	हारा	हारा	जीता	वरावर	हारा	हारा	–	हारा	जीता	५
श्रीलंका	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	जीता	–	जीता	४
कुवैत	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	हारा	–	०

६८:– डेनिस एमिस, वो. वेदी, कै. शर्मा, १७५ रन।
माइक ब्रियरली, रन आउट, १४ रन।
एलन नॉट, वो. चन्द्रशेखर, स्ट. किरमानी, ५७ रन।
जॉन लीवर, बो. प्रसन्ना, कै. गावस्कर, ७५ रन।
डेरेक अण्डरवुड, वो. वैंकट, ७ रन।

६६:–वावा लखपतराय की आयु–११४ वर्ष
उनके लड़कों की संख्या–१०।
उनकी लड़कियों की संख्या–५।

संकेत : कुल पोते-५०, कुल पोतियां-६०, कुल धेवते-५०, कुल धेवतियां-२०। इन सव का योग-२२५। इनमें से वावा समेत पुरुषों की कुल संख्या-१११। २२५ में से १११ घटाने पर वावा लखपतराय की उम्र निकल आएगी।

१००:–

मैचों का परिणाम

आंध्र प्रदेश क्लब ने महाराष्ट्र क्लब तथा तमिलनाडु क्लब को क्रमशः ५-० तथा ३-१ से हराया। महाराष्ट्र क्लब ने तमिलनाडु क्लब को ४-० से हराया।

लीग तालिका

क्लब का नाम	मैच				गोल		
	खेले	जीते	अनिर्णीत	हारे	किए	खाए	अंक
आंध्रप्रदेश क्लब	२	२	०	०	८	१	४
महाराष्ट्र क्लब	२	१	०	१	४	५	२
तमिलनाडु क्लब	२	०	०	२	१	७	०

१०१:–

टीम	गोल	परिणाम
पंजाब-रेलवे	५-१	पंजाब जीती
पंजाब-सेना	१-१	बराबर
पंजाब-हरियाणा	१-१	बराबर
सेना-हरियाणा	७-१	सेना जीती
सेना-रेलवे	२-२	बराबर

इस लीग में खेला जाने वाला अंतिम मैच रेलवे और हरियाणा के बीच होना था। उस मैच का परिणाम कुछ भी रहता, सेमीफाइनल में पंजाब और सेना की टीमों का पहुंचना सुनिश्चित है।

तालिका लीग 'क'

टीम	मैच				गोल		
	खेले	जीते	हारे	बराबर	किए	खाए	प्राप्त अंक
पंजाब	३	१	०	२	७	३	४
हरियाणा	२	०	१	१	२	८	१
रेलवे	२	०	१	१	३	७	१
सेना	३	१	०	२	१०	४	४

१०२:–नहीं।

राम किशोर तो क्या कोई सफल गणितज्ञ भी २० प्लेटों को एक पंक्ति में सभी सभव तरीकों से नहीं लगा सकता।

संकेत : १. एक ही पंक्ति में प्लेटों को लगाने के सभी संभव तरीके १९ अंकों की संख्या–२४,३२,९०,२०,०८,१७,६६,४०,००० होंगे।

२. यदि राम किशोर एक तरीके से प्लेटों को सजाने में १० सैकंड का समय भी लगाए

तब भी उसे इन प्लेटों को सभी संभावित तरीकों से सजाने में कुल ७,७१,४६,८१,६५,६६१ वर्ष का समय लगेगा।

१०३:—गाड़ी की लंबाई—३२७ गज अथवा ६८१ फुट
प्लेटफार्म की लंबाई—१०६ गज अथवा ३२७ फुट
गाड़ी की गति—५५.७३ मील प्रति घंटा

संकेत : १. गाड़ी मास्टर जी को पार करने में १२ सैकंड का समय लेती है जबकि प्लेटफार्म को पूरी तरह से पार करने में १६ सैकंड का समय लेती है। अतः गाड़ी की लंबाई और प्लेटफार्म की लंबाई का अनुपात ३ : १ आएगा जिससे गाड़ी की लंबाई प्लेटफार्म की लंबाई का तीन गुणा निकलेगी।

२. प्लेटफार्म की लंबाई गजों व फुटों में तीन अंकों की संख्या होने से उसकी लंबाई १०० गज होने से ३०० फुट आएगी और गाड़ी की लंबाई १०० फुट आएगी।

३. प्लेटफार्म की लंबाई एक विषम संख्या है जिससे गाड़ी की लम्बाई भी विषम संख्या में ही निकलेगी।

४. गाड़ी की अधिकतम लंबाई ६६६ फुट हो सकती है जिससे प्लेटफार्म की अधिकतम लंबाई ३३३ फुट या १११ गज हो सकती है।

१०४:—रवि ने गुसलखाने से पानी लाकर जार में डाला जिससे मेंढक उस ऊंचाई तक ऊपर आ गया जहां तक उसका हाथ पहुंच सके। फिर क्या था रवि ने हाथ बढ़ाया और मेंढक उसके हाथ में था।

१०५:—भारत-स्पेन, स्पेन-हालैंड तथा केन्या-हालैंड के बीच हुए मैचों में कुल १४ गोल हुए।

संकेत : १. सभी मैच संपन्न हो चुके थे अतः छहों टीमों ने अधिकतम कुल मैच १५ खेले और ३० अंक कुल बने थे।

२. न्यूजीलैंड ने सभी मैच जीते, अतः उसके प्राप्तांक १० होंगे। हालैंड को दूसरा स्थान मिलने के कारण उसके अंक स्पेन से अधिक होंगे जो क्रमशः ८, ५ या ७, ६ हो सकते हैं।

३. केन्या-भारत का मैच बराबर होने से केन्या का किसी अन्य एक टीम से भी मैच बराबर छूटा। चूंकि केन्या का हालैंड से मैच बराबरी पर नहीं हुआ अतः हालैंड के अंकों का योग विषम नहीं हो सकता। इससे हालैंड, स्पेन के अंक क्रमशः ८ और ५ होंगे।

४. किए और खाए गए गोल ६१-६१ ही होंगे। अतः पाकिस्तान व हालैंड द्वारा किए व खाए गए गोल क्रमशः ११/११ और १४/७ होंगे।

१०६:—'यूथ इण्टरनेशनल' के दसवें वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने आए युवकों की कुल संख्या—६०।
दिल्ली से आए युवकों की संख्या—१२।
कलकत्ता से आए युवकों की संख्या—१५।
बम्बई से आए युवकों की संख्या—१८।

संकेत : १. दिल्ली से आए युवकों की संख्या 'क' मानने पर कलकत्ता से क/२ + ६ बंबई से २क – ६ + १ (नेता) तथा मद्रास से ७/२क + ३ युवक आए।

२. छोटी बस की क्षमता 'ख' है अतः बड़ी की क्षमता ३/२ख होगी। दोनों बसों की क्षमता ५/२ख होगी जिनमें ५/२ख – ६ युवक बैठे।

३ दोनों बसों पर बैठे युवकों की संख्या हल करने पर ६क + ७ आएगी।
४. बर्मा बाजार बड़ी वस गई थी तथा दिल्ली के क-११ युवक भी वहां गए।
५. हल करने पर दिल्ली के युवकों की संख्या १२ आएगी।

१०७:–क्या कहा ? १.८ सैकंड में !

जी नहीं, इतनी भीड़ और १.८ सैकंड में दीवार बन पाना नितांत असंभव है।

१०८:–माला टूटने पर पंकज के पास ४४, कृष्ण के पास २८ और रवि के पास २४ मनके थे।

१०९:–मोहन को कुल ६०,८१,२२५ रुपए का लाभ हुआ।

संकेत : १. पहले चार अंकों का योग १८ और अंतिम ३ अंकों का योग ९ होगा।

२. चूंकि संख्या ५ से विभाज्य है अतः सातवां अंक ० या ५ हो सकता है लेकिन सातवां अंक शून्य होने से पांचवां और छठा अंक समान नहीं होगा। अतः सातवां अंक ५ ही होगा जिससे पांचवां व छठा अंक दो-दो होंगे।

३. तीसरा और चौथा अंक विषम संख्या होने से उस संख्या का वर्गमूल भी विषम होगा। अतः पहले स्थान पर ६ हो सकता है। इससे दूसरे स्थान पर शून्य तथा तीसरे और चौथे स्थान पर क्रमशः ८ और १ ही आ सकता है।

११०:–कभी नहीं।

चूक गए न। जल स्तर जितना बढ़ेगा जहाज उतना ही ऊंचा उठ जाएगा। अतः छेद और जलस्तर का अंतर आठ फुट ही रहेगा।

१११:–रामेश्वर की आज और कल की आय क्रमशः ९६१ और १६९ रुपए थी।

संकेत : १. दोनों दिनों की आय अलग-अलग है और तीन अंकों की पूर्ण वर्ग संख्याओं में है। तीन अंकों की ऐसी २२ संख्याएं हैं जो पूर्ण वर्ग संख्याएं हैं।

२. इनमें से १४४ और १६९ ही ऐसी दो पूर्ण वर्ग संख्याएं हैं जिन्हें उलटने पर भी हमें तीन अंकों की पूर्ण वर्ग संख्याएं ४४१ और ९६१ मिलेंगी।

३. दोनों दिनों की आय चूंकि ४ अंकों में है अतः ९६१ और १६९ ही वांछित संख्याएं हैं।

११२:–वांग चान-हांगकांग-फुटबाल-तीसरी मंजिल, टिमवान-मलेशिया-हॉकी-पहली मंजिल, जो ची ली-चीन-एथलेटिक्स-स्वदेशी, मा उनत्स-सिंगापुर-जिम्नास्टिक, चौथी मंजिल और ताओ ती-जापान-तीरंदाजी-दूसरी मंजिल।

११३:–

छात्र/छात्रा का नाम	विद्यालय का नाम	क्षेत्र	सूची में स्थान
बलजीत कपूर	राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय	बसई दारापुर	प्रथम
रीता दहिया	सेवानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	लाजपत नगर	द्वितीय
रमेश शंकर	आदर्श विद्या निकेतन	पहाड़गंज	तृतीय
सविता गुप्ता	राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय	शकूर बस्ती	चतुर्थ
कामेश्वर हलदर	नवज्योति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	कोटला मुबारकपुर	पंचम

११४:-

धारावाहिक	लेखक	निर्माता	निर्देशक
अमन के दुश्मन	प्रदीप सेन	दिनेश स्वेला	रविंद्र मलिक
काली आंधी	रमा वाही	योगी खोसला	तरनजीत
निर्णय	एच. चंद्र	आर. कुमार शर्मा	पी. सिंह
प्रतिज्ञा	जनकपाल	जगदीश लखनपाल	सुनायक पाठक
विष बेल	एस. एच. चंद्र	सत्येंद्र प्रकाश	एस. प्रकाश

११५:-

प्रत्याशी	प्रांत	एजेंट	प्रचार का तरीका
धवल नाटा	गुजरात	जाल बाटलीवाला	लकड़ी का विशाल इंजन
दृढ़ प्रतिज्ञ प्रसाद सिंह	मध्य प्रदेश	छत्रसाल	घर-घर संपर्क
बनवारी लाल	हरियाणा	दामोदर खेतवानी	धर्मेंद्र
रजनीकांत	उत्तर प्रदेश	चंद्रिका प्रसाद	सिने तारिकाओं का दल
राम चरित्रयानी	महाराष्ट्र	करतार चंद	देवानंद

११६:-क्योंकि बरसात नहीं हुई थी।

केवल बिजली कड़कने और काले छाए बादलों की गड़गड़ाहट ही सुनाई दी थी। बरसात होने की बात कहीं भी नहीं है।

११७:- १. प्रेक्षागृह में उपस्थित दर्शकों की कुल संख्या-५००

२. सबसे ज्यादा दर्शक मराठी भाषा जानने वाले हैं और उनकी कुल संख्या है-३१६

संकेत : दी गई सूचनाओं के आधार पर निम्नांकित नक्शा बनाने से हल सुविधापूर्वक हो सकता है।

		मराठी →		← दक्षिणी
		म	१६	२
हिन्दी	म-२	म + १	०	१२
	३	०		०
	$\frac{\text{कुल}}{१००}$ − १	२	०	१७
	अंग्रेजी			

२. कुल दर्शकों का ३०% मराठी मूल के हैं अतः म + २ = ३/१० (कुल)।

११८:-

१.	गार्डन ग्रीनिज-बो. संधू	०
२.	ग्लेन टर्नर-कै. संदीप, बो. मदन	२६
३.	विवियन रिचर्ड्स-बो. संधू	०

	जहीर अब्बास–स्ट. किरमानी, बो. महेन्द्र	८
५.	क्लाइव लायड–कै. गावस्कर, बो. बिन्नी	७
६.	इयान वाथम–कै. यशपाल, बो. कपिल	६
७.	रोडनी मार्श–रन-आउट	१६
८.	रिचर्ड हेडली–कै. यशपाल, बो. महेन्द्र	५
९.	इमरान खान–आउट नहीं	३
१०.	जेफ थामसन–बो. कपिल	२
११.	बाब विलिस–कै. यशपाल, बो. महेन्द्र	१
	अतिरिक्त	११
	योग.	६१

मैन आफ द मैच–महेन्द्र अमरनाथ

संकेत : १. कुल रन ६१ होने से हम आउट होने वाले पांचों खिलाड़ियों के रन निकाल सकते हैं। इन पांचों खिलाड़ियों ने कुल ६२ रनों का योगदान दिया था।

२. रिचर्ड्स पहली ही गेंद पर आउट हो गया था इसलिए उसका व्यक्तिगत स्कोर शून्य है।

३. शेष चार में से तीन बल्लेबाजों ने ६, ८ और १६ रन बनाए। अतः पांचवें खिलाड़ी ने २६ रन बनाए।

११९:–वतुकु मीनार की ऊंचाई = ३७४ गज, ४ इंच

संकेत : १. नीचे की तीन मंजिलों की ऊंचाई का अपने से ऊपर की तीन मंजिलों की ऊंचाई से अंतर चूंकि पूरे इंचों में है अतः सबसे नीचे की मंजिल की इंचों में ऊंचाई २५६ के गुणकों में होगी।

२. एक मंजिल और होने से मीनार की ऊंचाई ४०० गज ऊंचे 'लफिए टावर' से कुछ कम होती से ज्ञात हो जाएगा कि मंजिलों की कुल संख्या ६ ही हो सकती है। अन्यथा अंतिम मंजिल की ऊंचाई २० गज से कम आएगी।

३. मीनार की कुल मंजिलें ६ होने पर छठी मंजिल की ऊंचाई अधिकतम ६८५ इंच हो सकती है।

४. इससे सबसे ऊपर की मंजिल की ऊंचाई ११५ गज, १ फुट, २ इंच आएगी।

५. सबसे बड़ी मंजिल की ऊंचाई २५६" के गुणक में होने के कारण ४०९६ इंच होगी जिससे अन्य मंजिलों की ऊंचाई क्रमशः ३०७२", २३०४", १७२८", १२९६" और ९७२" आएगी।

१२०:–बस में दो व्यक्ति टिकटहीन हैं–पहला टिकट निरीक्षक गौरी शकर जो कंडक्टर के साथ वाली सीट पर बैठा है। तथा दूसरा ड्राइवर जो ड्राइविंग सीट पर बैठा है।

संकेत : १. कंडक्टर टिकटहीन नहीं है क्योंकि उसके पास तो टिकटों की पूरी गड्डी होती है।

२. द्वारकादास के परिवार के तीन व्यक्ति उनके साथ बस में जाने वाले थे।

कुल आरक्षण हुए–४४, रद्द हुए–३, यात्री थे ३७।

१२१:–नदी के बीच में से निकल जाएंगे क्योंकि नदी तो सूखी है।